प्रकाशन क्रमांक .....

शासकीय उपयोग हेतु

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण प्रतिवेदन

वर्ष 2019-20

ifronu

Mk- vfuy fo:ydj

ehuk /kufy;k

vej nkl

ekxn'kZu ,oa liknu

'kEeh vkfcnh IAS

lpkyd

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर, अटल नगर, छत्तीसगढ़

प्रकाशन क्रमांक .....

शासकीय उपयोग हेतु

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण प्रतिवेदन

वर्ष 2019-20

ifronu

Mk- vfuy fo:ydj

ehuk /kufy;k

vej nkl

ekxZn'kZu ,oa lEiknu

'kEeh vkfcnh IAS

lapkyd

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

विषय-सूची

अध्याय 1 – प्रस्तावना

अध्याय 2 – क्षेत्र एवं ग्राम परिचय

अध्याय 3 – जनजातीय परिचय

अध्याय 4 – सामाजिक–जनांकिकीय

जिलावार परिवार संकेन्द्रण

विकासखण्डवार संकेन्द्रण

परिवार प्रकार

जनसंख्या

जिलेवार जनसंख्या संकेन्द्रण

विकासखण्डवार जनसंख्या संकेन्द्रण

ग्रामवार जनसंख्या संकेन्द्रण

उम्र–समूह अनुसार जनसंख्या

लिंगानुपात

जिलेवार लिंगानुपात

विकासखण्डवार लिंगानुपात

जनसंख्या वृद्धिदर

वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक उम्र

धार्मिक आस्था

सामाजिक नेतृत्व

अध्याय 5 – शैक्षणिक स्थिति

अध्ययनरत् सदस्यों का विवरण

अध्ययन समाप्त किये सदस्यों का विवरण

कुल साक्षर सदस्य

साक्षरता दर

शालागामी उम्र–समूह में साक्षरता

आंगनबाड़ी में अध्ययनरत् विद्यार्थी

अध्याय	6	–	सामाजिक–आर्थिक स्थिति
			आवास
			आवास का प्रकार
			कार्यशीलता
			व्यावसायिक वर्गीकरण
			रोजगार हेतु मानव दिवस
			भूमिधारिता एवं भूमि प्रकार
			स्वयं के आधिपत्य की भूमि
			पशुधन
			वृक्षों पर स्वामित्व
			आय के स्रोत
			कुल वार्षिक आय
			कुल वार्षिक आय का वितरण
			कुल वार्षिक व्यय
			कुल वार्षिक व्यय का वितरण
			ऋणग्रस्तता
			वनोपज एवं कृषि उपजों का विनिमय
			पलायन की स्थिति
अध्याय	7	–	स्वास्थ्य स्थिति
अध्याय	8	–	योजनाओं से लाभान्वयन
अध्याय	9	–	सारांश एवं निष्कर्ष

अध्याय 01
प्रस्तावना

1. विषय प्रवेश

सामान्यजन अनुसूचित जनजातियों को वन्यजाति, जनजाति, वनवासी, गिरीजन आदि विभिन्न नामों से जानते है। ये समूह ग्रामीण एवं शहरी सभ्यता से दूर घने जंगलो, तराईयों, पहाड़ो व कंदराओं मे प्रमुखता से निवासरत रहे है। जनजातियों को भारत के प्राचीनतम निवासी माना जाता है।

मानवविज्ञानी, समाजशास्त्री एवं इतिहासकार जनजातियों को प्रागैतिहासिक कालीन सभ्यता (**Prehistorical Civilization**) एवं ग्रामीण सभ्यता (**Rural Civilization**) के बीच की कड़ी मानते है।

इन समूहों मे अपने निश्चित निवास क्षेत्र, एक बोली, प्रकृति पूजक एवं स्वयं के देवी–देवता, सामान्य संस्कृति, राजनैतिक संगठन, वधू मूल्य प्रथा, वन आधारित संस्कृति एवं अर्थव्यवस्था आदि के साथ विशिष्टता लिये हुये लक्षण होते है।

अन्य समुदायों से पृथक्कीकृत जीवनशैली आदि के कारण यह समुदाय अन्य वर्गो की तुलना में आर्थिक एवं शैक्षणिक रूप से पिछड़े हुये है। स्वतंत्र भारत में भारत का संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत ऐसे समुदायों को विशिष्ट जनजातीय लक्षणों के आधार पर चिन्हित कर अनुसूचित (सूचीबद्ध) करते हुये 'अनुसूचित जनजाति' के रूप में मान्यता दी गई।

भारतीय संविधान के तहत सर्वप्रथम 06.09.1950 को अनुसूचित जनजाति की सूची जारी की गई। यह सूची पृथक–पृथक राज्यों के लिये पृथक–पृथक जारी की जाती है, संविधान के अनुच्छेद 342 मे भारत के राष्ट्रपति को यह अधिकार प्राप्त है कि वह किसी समुदाय को अनुसूचित जनजाति की सूची मे अधिसूचित कर सकते है।

भारतीय संविधान में अनुसूचित जनजातियों के हितों (सामाजिक–आर्थिक–शैक्षणिक विकास एवं विभिन्न प्रकार के शोषण से बचाये जाने) के लिये विभिन्न उपबंधों के तहत संवैधानिक प्रावधान (**Constitutional Safegaurds**) किये गये है।

उपरोक्त संवैधानिक प्रावधानों के तहत समस्त राज्य सरकार एवं भारत सरकार जनजातियों के समग्र विकास हेतु विभिन्न विकासमूलक योजनाएं संचालित कर उन्हे विकास की मुख्यधारा में लाने प्रयासरत है।

भारत की जनगणना 2011 अनुसार भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 8.60 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजातियों का है।

छत्तीसगढ़ राज्य में भारत की जनगणना 2011 अनुसार राज्य की कुल जनसंख्या का 30.62 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति की संख्या है। भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य हेतु जारी अनुसूचित जनजाति की सूची मे संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत 42 जनजातीय समुदायों व उसकी उप–जातियों को अनुसूचित जनजाति के रूप में अधिसूचित किया गया है।

राज्य में जनगणना 2011 अनुसार अनुसूचित जनजातियों की जनसंख्या 7822902 (पुरूष 3873191, महिला 3949711) है जिसमें से केवल 7.56 प्रतिशत (591820) आबादी क्षेत्रों मे निवासरत है, शेष 92.44 प्रतिशत अनुसूचित जनजाति आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत है।

शैक्षणिक स्थिति के संदर्भ में जनगणना 2011 अनुसार राज्य की अनुसूचित जनजाति मे साक्षरता की दर 50.03 प्रतिशत (पुरूष साक्षरता 58.85 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता 41.38 प्रतिशत) है। राज्य की कुल साक्षरता दर 60.21 प्रतिशत की तुलना में अनुसूचित जनजाति की साक्षरता दर 10.18 प्रतिशत कम है।

2. विशेष पिछड़ी जनजातियां

स्वतंत्रता के लगभग 25 वर्ष पश्चात भारत सरकार द्वारा आदिवासी विकास की दशा एवं दिशा के संबंध में समीक्षा करने पर यह पाया कि अनुसूचित जनजातियों में से कुछ अनुसूचित जनजातियां जो उस समूह के सबसे अंतिम छोर पर है जिन्हें अनुसूचित जनजातियों हेतु संचालित विभिन्न योजनाओं का लाभ नही मिल पा रहा है अथवा वे लाभ नही ले रहे थे, उनके लिये पृथक से कार्य योजना निर्माण का निर्णय लिया गया। जैसे एक ही परिवार के सभी बच्चों अथवा संतानों का बौद्धिक एवं शारीरिक विकास एक सा नही हो पाता है या कोई संतान बाकी की अपेक्षा शारीरिक अथवा मानसिक रूप से कम वृद्धि करता है, तो चिकित्सक द्वारा उसे अतिरिक्त देख–रेख के साथ–साथ विशेष पोषण की सलाह दी जाती है, उसी प्रकार प्रथम पंचवर्षीय योजना को समय से जनजातियों हेतु किये गये समग्र विकास की समीक्षा उपरांत अनुसूचित जनजातियों

में से कुछ समुदाय जो अपेक्षाकृत कम विकसित हुये या योजनाओं का लाभ विभिन्न कारणों से नही प्राप्त कर रहे थे, के विशेष क्रियान्वयन पर बल दिया गया ।

वर्ष 1973 में ढेबर कमीशन द्वारा जनजातीय समूहों में से सर्वाधिक कम विकसित समुदायों के लिये पृथक से **"आदिम जनजाति समूह" (Primitive Tribal Groups)** नाम से श्रेणी का गठन किया गया।

भारत सरकार द्वारा घोषित अनुसूचित जनजातियों मे से कुछ निश्चित समुदायों को चिन्हित कर निम्न साक्षरता दर, (Low literacy level), कम होती जनसंख्या या स्थिर जनसंख्या (Declining of population or Stagnant Population), प्राक् कृषि तकनीक (Pre-Agricultural Technique) एवं आर्थिक रूप से पिछड़ापन (Economically Backwordness) आदि जैसे मापदण्डो के आधार पर वर्ष 1975 में सर्वप्रथम 52 अनुसूचित जनजातियों को एवं तत्पश्चात 1993 मे 23 अनुसूचित जनजातियों अर्थात कुल 75 अनुसूचित जनजातियों को "आदिम जनजाति समूह" में सूचीबद्ध करते हुये अनुसूचित जनजातियों के लिये चलायी जा रही विकासोन्मुखी योजनाओं के अलावा इन समूहो के लिये पृथक से योजनाएं संचालित किये जाने का प्रावधान किया गया।

देश के विभिन्न राज्यों हेतु भारत सरकार द्वारा घोषित आदिम जनजातियों की सूची निम्नांकित है –

क्र.	राज्य	संख्या	आदिम जनजातियां
1.	आंध्रप्रदेश	12	चेंचू, बोडो गडाबा, गुटोब गडाबा, डोंगरिया खोंड, कुटिया खोंड, कोलम, कोंडारेड्डी, कोंडोसवारा, बोंडो पोरजा, खोंड पोरजा, पारेंगी पोरोजा, थोटी
2.	बिहार (झारखण्ड)	09	असुर, बिरहोर, बिरिजिया, हिल खारिया, कोरवास, मल पहारिया, परहइया, सौरिया पहारिया, सावर
3.	गुजरात	05	कोलघा, कथोडी, कोतवालिया, पधार, सिद्दी
4.	कर्नाटक	02	जेनू कुरूबा, कोरागा
5.	केरल	05	चोलानाइकायन, कदार, कट्टूनायकन, कोरागा, कुरूम्बा
6.	मध्यप्रदेश (छ.ग. सहित)	07	अबूझ मारिया, बैगा, भारिया, बिरहोर, हिल कोरवा, कमार, सहरिया
7.	महाराष्ट्र	03	कटकारिया, कोलम, मारिया गोंड
8.	मणिपुर	01	मारम नागास

9.	उड़ीसा	13	चुकटिया भुंजिया, बिरहोर, बोंडो, डिडाई, डोंगरिया खोंड, जुआंग, खारिया, कुटिया खोंड, लानजिया सौराव, लोधा, मनकिदा, पौडी भूयान, साउरा
10.	राजस्थान	01	सहरिया
11.	तमिलनाडू	06	इरूला, कट्टूनायकन, कोटा, कुरूम्बा, पानियान, टोडा
12.	त्रिपुरा	01	रियांग
13.	उत्तर प्रदेश	02	बुकसा, राजी
14.	पश्चिम बंगाल	03	बिरहोर, लोधा, टोटो
15.	अण्डमान एवं निकोबार आइलैंड	05	ग्रेट अंडमानीज, जरावा, ओन्गेज, सेंटिनिलिज, शोमपेन

उपरोक्तानुसार छत्तीसगढ़ राज्य की कुल 42 अनुसूचित जनजाति मे से भारत सरकार द्वारा निर्धारित मापदण्ड अनुसार कमार, बिरहोर, अबूझमाड़िया, हिल या पहाड़ी कोरवा एवं बैगा अनूसूचित जनजातियों को आदिम जनजाति समूह (Primitive Tribal Groups) घोषित किया गया है।

वर्ष 2006 में भारत सरकार द्वारा आदिम जनजाति समूह (PTG) शब्द के स्थान पर Primitive Vulnareble Tribal Groups (PVTGs) विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह शब्द को मान्यता प्रदान की है।

छत्तीसगढ़ राज्य की उक्त 05 विशेष पिछड़ी जनजातिया (PVTGS) राज्य के निम्नांकित जिलों में निवासरत है –

क्र	PVTGS का नाम	निवासरत जिले
1.	कमार	गरियाबंद, धमतरी, महासमुंद एवं कांकेर
2.	अबूझमाड़िया	नारायणपुर
3.	पहाड़ी कोरवा	कोरबा, जशपुर, सरगुजा, बलरामपुर
4.	बिरहोर	बिलासपुर, कोरबा, रायगढ़ एवं जशपुर
5.	बैगा	कोरिया, कबीरधाम, बिलासपुर, मुंगेली, राजनांदगांव

विशेष पिछड़ी जनजाति बिहोर निवासित जिले

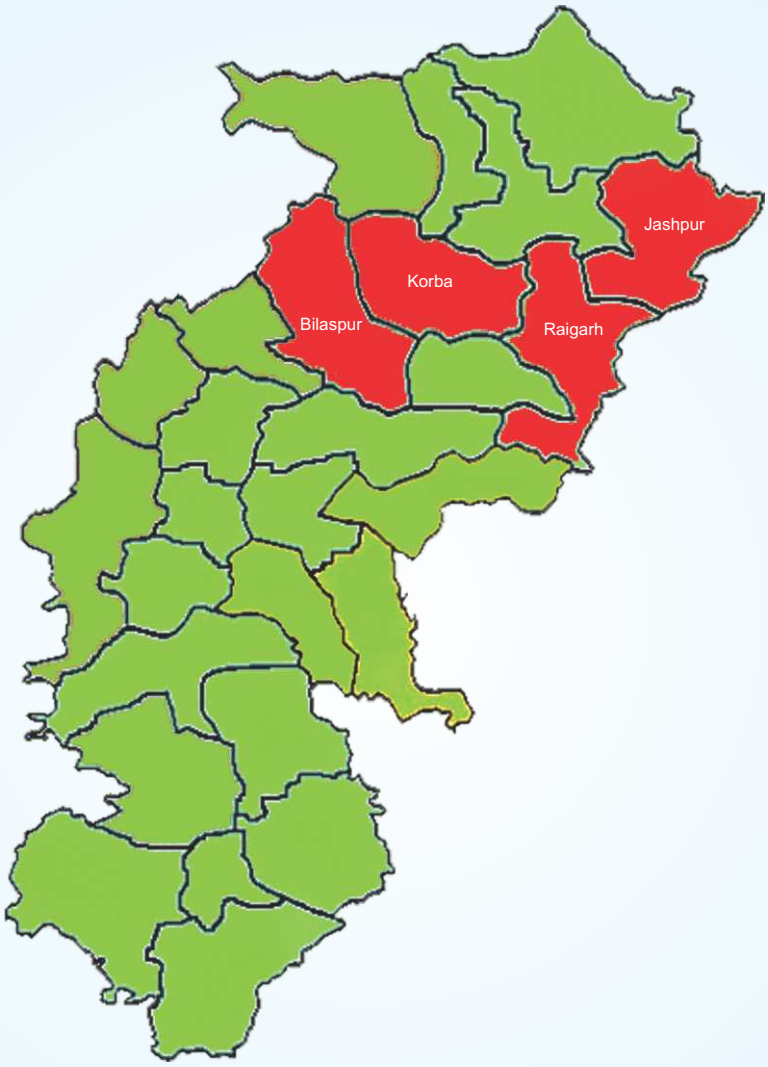

भारत सरकार द्वारा उपरोक्त विशेष पिछड़ी जनजातियों के विकास हेतु राज्य सरकारों को विशेष अभिकरण गठित करने का सुझाव दिया गया है। छत्तीसगढ़ राज्य हेतु घोषित 5 विशेष पिछड़ी जनजातियों हेतु छत्तीसगढ़ शासन द्वारा निम्नानुसार विशेष पिछड़ी जनजाति विकास अभिकरण अथवा प्रकोष्ठों का गठन किया गया है –

क्र.	PVTGs का नाम	अभिकरण/प्रकोष्ठ का स्थान
1.	कमार	विशेष पिछड़ी जनजाति कमार विकास अभिकरण, गरियाबंद विशेष पिछड़ी जनजाति कमार प्रकोष्ठ, नगरी जिला धमतरी विशेष पिछड़ी जनजाति कमार प्रकोष्ठ, महासमुंद विशेष पिछड़ी जनजाति कमार प्रकोष्ठ, भानुप्रतापपुर जिला कांकेर
2.	बैगा	विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा विकास अभिकरण, कबीरधाम विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा विकास अभिकरण, बिलासपुर विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा प्रकोष्ठ कोरिया विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा प्रकोष्ठ, राजनांदगांव विशेष पिछड़ी जनजाति बैगा प्रकोष्ठ मुंगेली
3.	पहाड़ी कोरवा	विशेष पिछड़ी जनजाति प. कोरवा विकास अभिकरण, अम्बिकापुर सरगुजा विशेष पिछड़ी जनजाति प.कोरवा विकास अभिकरण, जशपुर विशेष पिछड़ी जनजाति पं. कोरवा विकास प्रकोष्ठ कोरबा विशेष पिछड़ी जनजाति प.कोरवा प्रकोष्ठ बलरामपुर
4.	बिरहोर	विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर विकास अभिकरण, जशपुर विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर प्रकोष्ठ धरमजयगढ़ (जिला रायगढ़)
5.	अबूझमाड़िया	विशेष पिछड़ी जनजाति अबूझमाड़िया विकास अभिकरण, नारायणपुर

उपरोक्तानुसार यह **अध्ययन प्रतिवेदन छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति "बिरहोर" के आधारभूत सर्वेक्षण पर आधारित है।**

आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर द्वारा वर्ष 2015–16 की वार्षिक कार्ययोजना प्रस्ताव में राज्य की विशेष पिछड़ी जनजातियों का आधारभूत सर्वेक्षण प्रस्तावित किया

गया। भारत सरकार जनजातीय कार्यमंत्रालय के शत प्रतिशत वित्तीय अनुदान से उक्त कार्य संपादित किया गया।

3. अध्ययन प्रविधियां –

आधारभूत सर्वेक्षण राज्य की विशेष पिछड़ी जनजातियों के समस्त परिवारों का किया जाना था अतः बिरहोर जनजाति के अध्ययन हेतु भी **''जनगणना पद्धति'' (Census Method)** अर्थात शत–प्रतिशत परिवारों को सर्वेक्षण में शामिल किया गया।

आंकड़ो/तथ्यों के एकत्रीकरण में प्राथमिक तथ्य संकलन (Primery Data Collaction) हेतु पूर्व में भारत सरकार से प्राप्त अनुसूची (Scheduled) के माध्यम से प्रत्यक्ष चर्चा कर जानकारी प्राप्त की गई।

द्वितीयक तथ्य संकलन (Secoundry Data Collection) पूर्व सर्वेक्षण ग्रामवार सूची, जनगणना प्रतिवेदन, पूर्व प्रकाशित पुस्तकें प्रतिवेदन आदि का सहयोग लिया गया।

प्राप्त आंकड़ों की कम्प्यूटर एंट्री पश्चात् प्राप्त आंकड़ो/निष्कर्षों के साथ सारणीयन (Tabulation) का कार्य कर व्याख्या करते हुये प्रतिवेदन लेखन का कार्य किया गया।

4. अध्ययन का उद्देश्य –

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के आधारभूत सर्वेक्षण का उद्देश्य निम्नांकित है –

1. बिरहोर जनजाति की जनांकिकीय स्थिति का अध्ययन करना
2. बिरहोर जनजाति की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ज्ञात करना
3. बिरहोर जनजाति मे विकासीय योजनाओं के प्रभाव का अध्ययन करना आदि है।

5. अध्ययन का महत्व –

उक्त आधारभूत सर्वेक्षण से प्राप्त जिलावार, विकासखण्डवार, ग्रामवार, परिवारों की संख्या, जनसंख्या, आवास प्रकार, आय–व्यय के स्त्रोत एवं आर्थिक स्थिति, शैक्षणिक स्थिति आदि के प्राप्त निष्कर्षों से इन समुदायों के लिये संचालित योजनाओं के क्रियान्वयन एवं भविष्य की योजना निर्माण में यह अध्ययन सहायक होगा।

==0==

अध्याय 02
क्षेत्र एवं ग्राम परिचय

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले में निवासरत है, सर्वेक्षित बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का क्षेत्र एवं ग्राम परिचय निम्नांकित है –

1. बिलासपुर जिला

छत्तीसगढ़ राज्य के मानचित्र के भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर मध्य आदिवासी क्षेत्र अंतर्गत जिला बिलासपुर जनजातीय संकेन्द्रण की दृष्टि से महत्वपूर्ण जिला है, यह जिला $21^0 41^0$ तथा $23^0 7^0$ उत्तरी अक्षांश एवं $81^0 12^0$ तथा $83^0 19^0$ पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है, जो उत्तर में मध्यप्रदेश राज्य के शहडोल तथा छत्तीसगढ़ के सरगुजा, दक्षिण में दुर्ग–रायपुर पूर्व में रायगढ़ एवं पश्चिम में कबीरधाम व मध्यप्रदेश राज्य के डिंडौरी जिले की सीमा से घिरा हुआ है।

जिला बिलासपुर के नाम की व्युत्पत्ति 'बिलासा' नामक एक केवटीन मछुआरिन महिला के नाम पर आधारित है, जिले का मध्य एवं दक्षिणी भाग मैदानी है इस जिले की मृदा (मिट्टी) को कन्हार, मटासी एवं डोरसा में विभक्त किया जा सकता है, इसके अतिरिक्त जलोढ़ व लेटराइट प्रकार की मिट्टी भी विद्यमान है, यह जिला सतपुड़ा की मैकल पर्वत श्रृंखला, व छोटा नागपुर के पठार की सीमा को छूता है। महानदी, हसदो, अरपा, मांद, सोननदी, प्रमुख नदियां है। जिले में संरक्षित व मिश्रित वन उपलब्ध है। जिसमें साल (*Shorea robusta*), बीजा (*Pterocarpus mansubium*), धावड़ा (*Anogessua latifolia*), बांस (*Dendrocalamus Strictus*), कहुआ (*terminelia arjuna*), कल्मी या हल्दू (*Adina cordifolia*), आम (*Mangifera indica*), जामून (*Syzgium cumini*), तिनसा (*Ougeinia dalbergioies*), भिर्रा (*Chloroxylon swietenia*), खम्हार (*Gmelina arborea*) आदि वृक्ष पाये जाते है।

जिले में वन्य प्राणियों (*Fauna*) के रूप में बाघ (*Panthera tigris*), तेन्दूवा (*Penthera pardus*), जंगली बिल्ली (*Felis silvestris*), नेवला (*Canis aureus*), सोनकुत्ता (*Cuon alpinus*), जंगली हाथी (*Elephas maximus*), लंगूर (*Semnopithecus*, रीछ (*unsidae*), हिरण (*Cervidae*), नीलगाय (*Boselaphustragocamelus*), गौर (*Bosgaurus*), सांभर (*Rusa unicolour*), बारहसिंगा (*Rucervus duvaicelii*), साही (*Nystrix indica*), चमगादड़ (*Pteropus giganteus*), जंगली सुअर (*Susscrofa Cristatus*) आदि पाये जाते है।

जिले की जलवायु गर्म एवं शुष्क है तथा मानसूनी हवाओं से जुलाई–अगस्त माह मे सर्वाधिक वर्षा होती है।

जनगणना 2011 अनुसार बिलासपुर जिले की कुल जनसंख्या 1961922 है जिसमें 996125 पुरूष एवं 965797 स्त्री जनसंख्या है, स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 969 है जो राज्य के कुल लिंगानुपात 991 की तुलना में कम है। जिले की साक्षरता दर 72.87 प्रतिशत (पुरूष 83.04 प्रतिशत, स्त्री 62.40 प्रतिशत) है।

जिले की कुल जनसंख्या का 25.41 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का है जहां अनुसूचित जनजाति जनसंख्या 498469 (पुरूष 248172 एवं स्त्री 250297) है। जिले के कुल स्त्री–पुरूष लिंगानुपात (969) की तुलना में अनुसूचित जनजाति का स्त्री पुरूष लिंगानुपात (1008) अधिक है। जिले का मरवाही, गौरेला एवं कोटा राजस्व निरीक्षक सर्किल अनुसूचित क्षेत्र (Scheduled Area) घोषित है।

बिरहोर जनजाति का निवास –

जिला बिलासपुर मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का निवासक्षेत्र निम्नांकित है –

क्र.	जिला	विकासखण्ड	ग्राम पंचायत का नाम	ग्राम का नाम	परिवार संख्या	बिरहोर जनसंख्या		
						पुरूष	महिला	योग
1	बिलासपुर	कोटा	सक्तीबाहरा	बेलगहना	13	18	23	41
2			उमरिया दादर	उमरिया दादर	23	34	47	81
3			सेमरिया	सेमरिया	25	37	37	74
4			कोइलारी	कोइलारी	43	74	67	141
		योग			**104**	**163**	**174**	**337**
5		मस्तुरी	ठरकपुर	खैरवार पारा	11	12	18	30
6			जेवरा	जेवरा	28	45	48	93
		योग			**39**	**57**	**66**	**123**
कुल योग					**143**	**220**	**240**	**460**

उपरोक्तानुसार जिला बिलासपुर के कोटा विकासखण्ड के 03 ग्राम पंचायतों यथाा सक्तीबाहरा, उरियादादर एवं सेमरिया के 04 ग्रामों के 104 बिरहोर परिवारों की 337 जनसंख्या निवासरत है। वही मस्तुरी विकासखण्ड के ठरकपुर एवं जेवरा पंचायत के 02 ग्रामों के 39 बिरहोर परिवारों में 123 बिरहोर जनसंख्या निवासित है।

2- जशपुर जिला

छत्तीसगढ़ राजय के उत्तरीय आदिवासी क्षेत्र में जिला जशपुर $22^0 15^0$ तथा $23^0 20^0$ उत्तरी अक्षांश एवं $83^0 30^0$ तथा $84^0 30^0$ पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है, यह जिला उत्तर–पूर्व में सरगुजा, दक्षिण में रायगढ़, पूर्व में झारखण्ड राज्य की सीमाओं से घिरा हुआ है।

छत्तीसगढ़ के उत्तर–पूर्व में स्थित जिला जशपुर स्वतंत्रता पूर्व एक रियासत थी। जिले का उत्तरी क्षेत्र में पहाड़ियों की श्रृंखला है, जशपुर जिले को अतीत में यशपुर व जगदीशपुर नाम से जाना जाता था। जशपुर जिले मे मटासी, कन्हार, डोरसा व कछारी मिट्टी के साथ–साथ समृद्ध जैव विविधता एवं पर्याप्त खनिज संपदा उपलब्ध है।

जशपुर जिले के वन संरक्षित व मिश्रित दोनों प्रकार के है, जहां वनस्पतिक रूप से साल (*Shorea robusta*), साजा (*Terminalia Fomentosa*), शीशम (*Dalbergia latifolia*), हल्दू (*Adina cordifolia*), आदि के साथ साथ विभिन्न प्रकार की छोटी झाड़ियां व वनौषधियां प्रचुर मात्रा मे उपलब्ध है। वही वन्य जीव–जन्तुओं में बाघ (*Panthera tigris*), तेन्दूवा (Penthera *pardus*), भेड़िया (*Canis lu pus*), रीछ (*unsidae*), जंगली हाथी (*Elephas maximus*), लंगूर (*Semnopithecus*), हिरण (*Cervidae*), सांभर (*Rusa unicolour*), बारहसिंगा (*Rucervus duvaicelii*), साही (*Nystrix indica*), चमगादड़ (*Pteropus giganteus*), जंगली सुअर (*Susscrofa Cristatus*) आदि पाये जाते है।

जनगणना 2011 अनुसार जशपुर जिले की कुल जनसंख्या 851669 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 424747 व स्त्री जनसंख्या 426922 है। जशपुर जिले में स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 1005 है जो छत्तीसगढ़ राज्य के लिंगानुपात से कही अधिक है। जिले में 67.92 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है।

जिले की कुल जनसंख्या में से 62.67 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का है, जहां 530378 जनसंख्या अनुसूचित जनजाति वर्गो की है जिसमें पुरूष जनसंख्या 262731 व स्त्री जनसंख्या 267647 है। लिंगानुपात की दृष्टि से जिले के अनुसूचित जनजाति जनसंख्या का लिंगानुपात 1019 है जो जशपुर जिले के कुल लिंगानुपात (1005) व राज्य के लिंगानुपात से काफी अधिक है।

जिला जशपुर पूर्ण रूप से अनुसूचित क्षेत्र (Scheduled Area) घोषित है।

बिरहोर जनजाति का निवास –

जिला जशपुर में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का निवास क्षेत्र निम्नांकित है –

जिला	विकासखण्ड	ग्राम पंचायत का नाम	ग्राम का नाम	परिवार संख्या	बिरहोर जनसंख्या		
					पुरूष	महिला	योग
जशपुर	बगीचा	पेटा	पेटा	1	1	0	1
		घोघर	जनकपुर	30	45	355	80
		भीतघरा	शिवरीनारायण	23	45	42	87
		बगीचा	डूमरटोली	4	8	6	14
	योग			**58**	**99**	**83**	**182**
	मस्तुरी	झारगांव	झारगांव	16	29	27	56
		योग		16	29	27	56
	कांसाबेल	बटईकेला	छेरा घोघरा	9	17	19	36
			बरमुड़ा	2	5	4	9
		कोदलिया	पोगड़	11	17	18	35
		सगीभौना	डभनीपानी	6	10	12	22
		योग		**28**	**49**	**53**	102
	कुनकुरी	बेहराखार	शंकरनगर	25	36	37	73
		योग		25	36	37	73
	पत्थलगांव	बुलडेगा	बुलडेगा	29	49	50	99
		कुकुरभुका	सांवाटोली	07	08	07	15
	योग			**36**	**57**	**57**	**114**
कुल योग				**163**	**270**	**257**	**527**

उपरोक्तानुसार जिला जशपुर के बगीचा विकासखण्ड के पेटा, घोघर, भीतघरा एवं बगीचा ग्राम पंचायत के एक–एक ग्राम में कुल 85 परिवारों मे 182 बिरहोर जनसंख्या, दुलदुला विकासखण्ड के झारगांव पंचायत के उसी 01 ग्राम में बिरहोर जनजाति के 16 परिवारों में 56 जनसंख्या, कांसाबेल विकासखण्ड के बटईकला पंचायत के 02 ग्रामों, कोदलिया पंचायत के 01 ग्राम, सगीभौना पंचायत के 01 ग्राम मे कुल 28 बिरहोर परिवारों मे 102 जनसंख्या निवासरत है।

कुनकुरी विकाखण्ड के बेहराखार पंचायत के शंकरनगर ग्राम मे बिरहोर जनजाति के 25 परिवारों मे कुल बिरहोर जनसंख्या 73 है वही पत्थलगांव विकासखण्ड के बुलडेगा एवं कुकुरभुका पंचायत के 01–01 ग्राम में कुल 36 बिरहोर परिवारों में 114 जनसंख्या निवासरत है।

3. कोरबा जिला

जिला कोरबा छत्तीसगढ़ राज्य के उत्तरीय भौगोलिक सीमा का एक प्रशासनिक ईकाई है। छत्तीसगढ़ राज्य में कोरबा $22^{0}15^{0}$ उत्तरी अक्षांश तथा $82^{0}30^{0}$ से $82^{0}45^{0}$ पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है, यह जिला उत्तर में सरगुजा, दक्षिण में बिलासपुर, पूर्व में रायगढ़ तथा पश्चित मे जांजगीर–चांपा जिले की सीमा से घिरा हुआ है।

कोरबा जिला एक ओर जनजातीय बसाहट का क्षेत्र है तो वही दूसरी ओर वर्तमान मे एक आद्योगिक केन्द्र के रूप मे भी विकसित हुआ है। कोरबा प्राचीनकाल मे कोरबाडीह के नाम से विख्यात था जिसकी राजधानी कलचुरि काल मे रतनपुर थी यहां के जमींदार रामराय थे।

कोरबा जिले की मिट्टी काली प्रकार की हे जिसे मटासी, कन्हार, डोरसा में विभक्त किया जा सकता है, यहां की प्रमुख नदियां हसदेव, महानदी, सहायक नदी अहिरन प्रमुख है। नदियों के आसपास की मिट्टी जलोड़ प्रकार की है।

कोरबा जिला पहाड़ो, मैदान व वन युक्त क्षेत्र है। वन सम्पदा के रूप में विभिन्न प्रकार के खनिज के साथ–साथ यहां के वनो मे साल (*Shorea robusta*), साजा (*Terminalia Fomentosa*), कर्रा (*Cleistanthus collinus*), शीशम (*Dalbergia latifolia*), बीजा (*Pterocarpus mansupium*), नीम (*Azadiracta indica*), आम (*Mangifera Indica*), हर्रा (*Terminrlia chebula*) व अन्य वृक्ष प्रमुखता से पाये जाते है। वही जंगली जीव–जन्तुओं मे बाघ, तेंदुआ, लोमड़ी, भालू, गीदड़, हाथी, लंगूर, हिरण, चीतल, नीलगाय, बारहसिंगा, जंगली सुअर, आदि विद्यमान है।

कोरबा जिले की जलवायु उष्ण कटिबंधीय अर्थात गर्म आर्द्र व शुष्क पायी जाती है।

जनगणना 2011 अनुसार कोरबा जिले की कुल जनसंख्या 1206640 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 612915 व स्त्री जनसंख्या 593725 है। जहां लिंगानुपात 969 हे जो छत्तीसगढ़ राज्य के कुल स्त्री–पुरूष लिंगानुपात (991) से भी बहुत कम है। जिले में कुल साक्षरता दर 72.37 प्रतिशत है।

जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से जनगणना 2011 अनुसार कोरबा जिले की कुल जनसंख्या का 40.90 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजातियों का है, जहां कुल 493559 संख्या अनुसूचित जनजातियों की है, जिसमें पुरूष जनसंख्या 246323 एवं स्त्री जनसंख्या 247236 है। कोरबा जिले में अनुसूचित जनजातीय जनसंख्या में स्त्री–पुरूष लिंगानुपात लगभग 1004 है जो कोरबा जिले व छत्तीसगढ़ राज्य के कुल लिंगानुपात से कही अधिक है।

जिला कोरबा पूर्ण रूप से अनुसूचित क्षेत्र (Scheduled area) घोषित है।

बिरहोर जनजाति का निवास –

जिला	विकासखण्ड	ग्राम पंचायत का नाम	ग्राम का नाम	परिवार संख्या	बिरहोर जनसंख्या		
					पुरूष	स्त्री	योग
कोरबा	करतला	बोफरदा	बोफरदा	5	9	10	19
		पिडिया	पिडिया	6	9	8	17
		करतला	करतला	2	3	2	5
	योग			**13**	**21**	**20**	**41**
	कोरबा	चुईया	चुईया	24	27	31	58
		सकदूकला	सकदूकला	24	33	33	66
		अमलीडीहा	अमलीडीहा	3	7	7	14
		मदनपुर	मदनपुर	4	8	8	16
		गेरांव	गेरांव	30	50	52	102
		अजगरबहार	दलदली	9	14	11	25
		देवपहरी	देवदुवारी	36	64	59	123
		चचिया	लुदुखेत	3	4	5	9
		चचिया	चितावुड़ा	12	19	14	33
	योग			**145**	**226**	**220**	**446**
	पाली	मांगामार	मांगामार	15	17	20	37
		ईरफ	ईरफ	27	34	43	77
		पोटापानी	पोटापानी	2	4	3	7
		भण्डारखोह	भण्डारखोह	12	18	17	35
		कोडार	कोडार	6	8	10	18
		शिवपुर	शिवपुर	5	11	8	19
		डूमरकछार	डूमरकछार	4	5	6	11
		माखनपुर	माखनपुर	5	7	6	13
		डोंगानाला	डोंगानाला	53	96	88	184
		उड़ता	उड़ता	20	23	30	53
		नुनेरा	टेढ़ीचुवा	11	18	27	45
	योग			**160**	**241**	**258**	**499**
	पोडी उपरोडा	कटोरी नगोई	कटोरी नगोई	15	24	24	48
		केसलपुर	केसलपुर	2	3	4	7
		खोडरी	खोडरी	4	5	6	11
		अमलडीहा	अमलडीहा	5	6	9	15
		तानाखार	तानाखार	7	7	14	21
		लालपुर	लालपुर	6	13	7	20
		कोनकोना	कोनकोना	12	18	17	35
			घैरामुड़ा	40	69	53	122
		गुडरूमुड़ा	गुडरूमुड़ा	53	71	75	146
		भंवर	भंवर	10	15	18	33
		बीझरा	बीझरा	11	20	19	39
		मलदा	मलदा	23	33	29	62
	योग			**188**	**284**	**275**	**559**
कुल योग				**506**	**772**	**773**	**1545**

उपरोक्तानुसार कोरबा जिले के करतला विकासखण्ड के 03 ग्राम पंचायतों के 03 ग्रामों मे बिरहोर जनजाति के 13 परिवारों मे 41 व्यक्ति, कोरबा विकासखण्ड के 08 ग्राम पंचायतों के 09 ग्रामों मे 145 परिवारों मे 446 बिरहोर व्यक्ति, पाली विकासखण्ड के 11 ग्राम पंचायतो के 11 ग्रामों मे 160 बिरहोर परिवारों मे 499 व्यक्ति एवं पोड़ी उपरोड़ा विकासखण्ड के 11 ग्राम पंचायतों के 12 ग्रामों में 188 बिरहोर परिवारो में कुल 559 व्यक्ति निवासरत है।

1. रायगढ़ जिला

भौगोलिक दृष्टिकोण से छत्तीसगढ़ राज्य के पूर्वी क्षेत्र में जनजातीय दृष्टिकोण से रायगढ़ एक महत्वपूर्ण जिला है। रायगढ़ जिला $21^0 20^0$ तथा $23^0 15^0$ उत्तरी अक्षांश और $82^0 56^0$ तथा $84^0 26^0$ पूर्वी देशांश के मध्य स्थित है, रायगढ़ जिला उत्तर में सरगुजा, दक्षिण में रायपुर, पूर्व में उड़ीसा राज्य के जिलों तथा पश्चिम मे बिलासपुर जिले की सीमा से घिरा हुआ है।

रायगढ़ जिले की मिट्टी मटासी, कन्हार, डोरसा व भाटा (कछारी) प्रकार की है जिले की जलवायु उष्ण कटिबंधीय मानसूनी प्रकार की है। जिले की महानदी, मांद, केलो प्रमुख नदियां है।

रायगढ़ क्षेत्र के वनों में साल, बीजा, बांस, हल्दू, जामून, आम, कर्रा, महुआ व अन्य वनस्पतिक वृक्ष/पौधे/झाड़िया पायी जाती है, वही जंगली जीव–जन्तुओं मे बाघ, तेंदुआ, बनबिलाव, गीदड़, सोनकुत्ता, लोमड़ी, जंगली हाथी, लंगूर, हिरण, चीतल, सांबर, बारहसिंगा इत्यादि पाये जाते है।

जनगणना 2011 अनुसार रायगढ़ जिले की कुल जनसंख्या 1493984 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 750278 व स्त्री जनसंख्या 743706 है। जिले का स्त्री–पुरूष लिंगानुपात छत्तीसगढ़ राज्य के कुल लिंगानुपात 991 के बराबर है। जिले की कुल साक्षरता दर 73.26 प्रतिशत है।

जनजातीय जनसंख्या के दृष्टिकोण से रायगढ़ जिले में जनगणना 2011 अनुसार कुल जनसंख्या का 33.84 प्रतिशत भाग अनुसूचित जनजातियों का है। जिले मे अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या 505609 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 250473 एवं स्त्री जनसंख्या 255136 है। जिले के अनुसूचित जनजातियों में स्त्री–पुरूष लिंगानुपात लगभग 1019 है जो छत्तीसगढ़ राज्य व रायगढ़ जिले के कुल लिंगानुपात से काफी अधिक है।

रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़, तमनार, लैलूंगा, खरसिया, आदिवासी विकासखण्ड अनुसूचित क्षेत्र (Scheduled Area) घोषित है।

बिरहोर जनजाति का निवास –

रायगढ़ जिले की भौगोलिक क्षेत्र में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का निवास क्षेत्र निम्नांकित है –

जिला	विकासखण्ड	ग्राम पंचायत का नाम	ग्राम का नाम	परिवार संख्या	बिरहोर जनसंख्या		
					पुरूष	स्त्री	योग
रायगढ़	धरमजयगढ़	रूंवाफूल	रूंवाफूल	27	36	35	71
		जबगा	बलपेदा	11	17	12	29
		जमरगिड्डी	जमरगिड्डी	14	19	20	39
		नकना	नकना	4	9	5	14
		खम्हार	खम्हार	6	10	4	14
		जमरगा	जमरगा	9	18	13	31
		जमरगा	जमरगा	25	40	44	84
		रायमेर	रायमेर	6	11	11	22
		कटाईपाली	शकरलया	7	8	11	19
		सोहनपुर	तेजपुर	2	0	3	3
		ओंगना	ओंगना	10	22	15	37
		दूधागांव	दूधागांव	15	19	38	57
		नागदरहा	बरतापाली	11	15	14	29
		किदा	किदा	13	22	18	40
		खर्रा	खर्रा	18	31	35	66
		खलबोरा	खलबोरा	39	56	66	122
		बिछीनारा	बिछिनारा	2	1	3	4
	योग			**219**	**334**	**347**	**681**
	घरघोड़ा	कोटरीमाल	कोटरीमाल	5	11	10	21
		रायकेरा	रायकेरा	8	19	12	31
	योग			**13**	**30**	**22**	**52**
	लैलूंगा	कुर्रा	कुर्रा	8	13	16	29
		झगरपुर	झगरपुर	10	14	21	35
		बरडीह	बरडीह	5	9	10	19
	योग			**23**	**36**	**47**	**83**
	तमनार	हिंझर	हिंझर	4	4	10	14
		कोडकेल	कोडकेल	20	26	28	54
		कचकोबा	कचकोबा	25	34	40	74
	योग			**49**	**64**	**78**	**142**
कुलयोग				**304**	**464**	**494**	**958**

उपरोक्तानुसार रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ विकासखण्ड के 16 ग्राम पंचायतों के 17 ग्रामों मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 219 परिवार निवासरत है जहां उनकी कुल जनसंख्या 681 है।

घरघोड़ा विकासखण्डके 02 ग्राम पंचायतों के 02 ग्रामों में बिरहोर जनजाति के 13 परिवारों मे 52 जनसंख्या निवासित है। लैलूंगा विकसखण्ड के 03 ग्राम पंचायतों के 03 ग्राम मे बिरहोर समुदाय के 23 परिवारों मे 83 बिरहोर व्यक्ति निवासित है।

तमनार विकासखण्ड के 03 ग्राम पंचायतों मे बिरहोर जनजाति के 49 परिवारो मे 142 व्यक्ति निवासरत है।

इस प्रकार रायगढ़ जिले में बिरहोर जनजाति के 304 परिवारों मे कुल 958 व्यक्ति निवासरत है।

बिरहोर ग्रामों में पंचायत मुख्यालय की उपलब्धता

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के कुल सर्वेक्षित 78 ग्रामों में पंचायत मुख्यालय की उपलब्धता निम्नानुसार है –

क्र.	विवरण	बिरहोर ग्राम	
		संख्या	प्रतिशत
1.	ग्राम में ही	54	69.23
2.	आश्रित ग्राम	24	30.77
योग		**78**	**100.0**

उपरोक्तानुसार सर्वेक्षित बिरहोर ग्रामों मे से 30.77 प्रतिशत (N=24) ग्राम अन्य ग्राम पंचायत मुख्यालय के आश्रित ग्राम है तथा 69.23 प्रतिशत (N=54) बिरहोर ग्राम पंचायत स्तर के है।

आश्रित बिरहोर ग्रामों से पंचायत मुख्यालय से संपर्क

बिरहोर निवासित आश्रित ग्रामों से पंचायत मुख्यालय से संपर्क प्रकार निम्नांकित है –

क्र.	विवरण	बिरहोर ग्राम	
		संख्या	प्रतिशत
1.	कच्ची सड़क	17	70.83
आश्रित ग्राम संख्या – 24			

उपरोक्तानुसार बिरहोर निवासित 24 आश्रित ग्रामों में से पंचायत मुख्यालय से 70.83 प्रतिशत (N=17) ग्रामों से कच्ची सड़क ही संपर्क माध्यम है, शेष ग्राम संपर्क विहीन है।

आश्रित बिरहोर ग्रामों से पंचायत मुख्यालय की दूरी

बिरहोर जनजाति के आश्रित ग्रामों से ग्राम पंचायत मुख्यालय की दूरी का विवरण निम्नांकित है –

क्र.	विवरण (दूरी)	बिरहोर ग्राम	
		संख्या	प्रतिशत
1.	2 किमी तक	16	66.67
2.	2 से 4 किमी	05	20.83
3.	4 से अधिक	03	12.50
योग		**24**	**100.0**

उपरोक्तानुसार तालिका से स्पष्ट है कि, बिरहोर निवासित आश्रित ग्रामों से सर्वाधिक 66.67 प्रतिशत (N=16) ग्रामों से ग्राम पंचायत मुख्यालय की दूरी 02 किमी तक, 20.83 प्रतिशत (N=05) ग्रामों से 4 किमी तक एवं 12.50 प्रतिशत (N=03) ग्रामों से 04 किमी से अधिक की दूरी पर ग्राम पंचायत मुख्यालय उपलब्ध है।

बिरहोर ग्रामों से साप्ताहिक हाट–बाजार की उपलब्धता

जनजातीय जीवनशैली मे हाट–बाजार का विशिष्ट महत्व होता है, इसके माध्यम से यह समुदाय अपनी गतिविधि को संचालित करते हुये वनोपज संकलन का विक्रय व रोजमर्रा की आवश्यक वस्तुएं क्रय करते है।

बिरहोर जनजाति के ग्राम/पारा/टोला से लगभग 44 ग्रामों (56.41 प्रतिशत) से समीपतम हाट–बाजार की दूरी 3 किमी तक की है शेष ग्रामो से इस केन्द्र की दूरी 3 किमी से 15 किमी तक की है।

बिरहोर ग्रामों में शिक्षा सुविधा

बिरहोर निवासित अधिकांश ग्रामों में प्राथमिक शिक्षा हेतु कनिष्ठ प्राथमिक शला/प्राथमिक शाला का संचालन किया जा रहा है।

अध्याय 03
जनजातीय परिचय

भारत सरकार द्वार भारत के संविधान के अनुच्छेद 342 के तहत जारी छत्तीसगढ़ राज्य हेतु अनुसूचित जनजाति की सूची में 42 जनजातीय समुदायों एवं उसकी उपजातियों को अधिसूचित किया गया है, जिसमें से अनुक्रमांक 12 पर शामिल बिरहोर अनुसूचित को भारत सरकार द्वारा विशिष्ट मापदण्डों के आधार पर विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित किया गया है।

वर्तमान परिवेश में भी आदिम व्यवस्था में जीवन व्यतीत करने वाली बिरहोर जनजाति की सामाजिक–सांस्कतिक पृष्ठभूमि का पुनर्रावलोकन निम्नांकित बिन्दुओं में दर्शित है, हांलाकि शासन द्वारा संचालित विभिन्न प्रयास मूलक योजनाओं का प्रभाव भी परिलक्षित होता है किन्तु जनजातीय समुदाय अभी भी सामाजिक एवं सांस्कृतिक रूप से मौलिक है।

सामान्य वर्गीकरण

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति भौगोलिक वर्गीकरण के आधार पर छत्तीसगढ़ के उत्तरीय आदिवासी क्षेत्र की जनजाति है जो बिलासपुर, रायगढ़, कोरबा एवं जशपुर जिले में पायी जाती है।

जनसंख्यात्मक दृष्टिकोण से बिरहोर छत्तीसगढ़ राज्य की एक अल्प संख्या वाली जनजाति है।

भाषायी आधार पर बिरहोर अनुसूचित जनजाति **आस्ट्रिक भाषा परिवार की कोलारियन व मुण्डारी भाषा** बोलती है तथा प्रजातीय लक्षणों (Racial charactersitics) के आधार पर बिरहोर जनजाति **प्रोटो–आस्ट्रोलायड** प्रजाति के लक्षणधारी है।

उत्पत्ति –

बिरहोर जनजाति की उत्पत्ति के संबंध में कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नही है, किन्तु प्रचलित किवदंती अनुसार सूर्य के द्वारा सात भाई जमीन पर गिराये गये थे जो खैरागढ़ (कैमूर पहाड़ी) से आये। जिसमें से 4 भाई पूर्व दिशा में चले गये शेष रायगढ़ क्षेत्र में रह गये। **''होड़कू''** या बिरहोरी बोली मे **''बिर''** का अर्थ जंगल तथा **''होर''** का मतलब मनुष्य होता है अर्थात बिरहोर का अर्थ जंगल में रहने वाला मनुष्य होता है।

भौतिक संस्कृति –

मानव द्वारा अपनी आजीविका संचालन अथवा निर्वाह हेतु भौतिक संसाधनों से निर्मित की गई वस्तुओं का संग्रह ही भौतिक संस्कृति (Material Culture) कहलाता है।

बिरहोर सामान्यतः लकड़ी एवं घास–फूस निर्मित झोपड़ी (कुड़िया) में निवास करते है प्रायः 1–2 कमरे होते है धान कुटने **मूसल**, बैठने अथवा सोने **चाप/चटाई**, वनोपज संकलन एवं संग्रहण हेतु बांस निर्मित **टोकरा–टोकरी, सूपा**, शिकार उपकरणों में **तीर–कमान, कुल्हाड़ी (टांगी),** मछली पकड़ने का जाल एवं भोजन पकाने मिट्टी व एल्यूमिनियम के बर्तन (स्टील के प्रायः कम) **चाटू, गेंज, डुबई, छीपा, बटकी** आदि दिखाई देते है।

पुरूष छोटी धोती या पंछा पहनते है तो बिरहोर स्त्रियां घुटने के नीचे तक लुगड़ा पहनती है, स्त्रियों के श्रृंगार में हाथ में **पीतल, गीलट की पट्टा या ऐंठी, गले में माला, कान मे खिनवा, नाम मे फुली, बांह मे पहुची/नागमोरी** प्रमुख है। महिलाये **गोदना** भी गोदवाने का शौक रखती है।

कृषि उपकरणों में **नागर, कुदाली, गैती, दाती, हसुला (हसिया), साबल, बेहंगा, छौवा (टोकरा), ओके/टांगा (कुल्हाड़ी)** प्रमुख है, शिकार उपकरणों में **आआसार (धनुष), गुलेल, मत्स्याखेट में प्रमुख बीसरा, खमोरिया, मोराई, गरी** आदि है।

संगीत उपकरणों में **मांदर, ढोलक, ढपली, तमूरा** आदि प्रमुख है जिसे धार्मिक उत्सवों, विवाह, करमा, फागून आदि अवसरों पर बजाया जाता है।

जीवन चक्र ; जन्म संस्कार

बिरहोर जनजाति मे बालिका अथवा स्त्री के रजस्वला होने को मुरमैली अथवा बाहर होना कहा जाता है, सामान्यतः 12–13 वर्ष की अवस्था में बालिकाओं में ऋतुस्त्राव प्रारंभ हो जाता है। सामान्य शब्दो में बिरहोर समुदाय में स्त्रियों का मासिक धर्म रूकने को उसे गर्भावस्था का प्रारंभ मान लिया जाता है, ऋतुवती स्त्री को अपवित्र माना जाता है। इस दौरान उसे अनेक निषेधों (Taboos) का पालन करना होता है उसी प्रकार गर्भावस्था में भी अनेक निषेधो (पेड़ पर चढ़ना, मिट्टी उठाना आदि) का पालन करना पड़ता है। प्रसव सुईन अथवा वृद्ध महिला द्वारा किया जाता है। **नाल (बोडरी)** बांस की पतली पट्टी अथवा ब्लेड से काटा जाता है।

प्रसव उपरांत नाल झड़ने पर **''छटी''** संस्कार किया जाता है, नामकरण पश्चात सगे–संबंधी को स्थिति अनुसार भोज देकर खुशियां मनायी जाती है। पुत्र–पुत्री संतान होने पर कुछ निषेध का पालन स्त्री (प्रसुता) को करना होता है इनमें संतानों में (लड़का–लड़की) कोई भेद नही माना जाता है।

विवाह संस्कार

बिरहोर जनजाति मे बालक–बालिकाओं के शारीरिक परिवर्तन की अवस्था को विवाह योग्य समझा जाता है। बिरहोर जनजाति बर्हिविवाही गोत्र वाला समुदाय है। अर्द्धांश गोत्र (Moiety) समूह आपस में विवाह संबंध करते है। इनमें **ममेरे–फूफेरे संतान विवाह (Cross-cousin marrige), सहपलायन विवाह, घुसपैठ अथवा पैठू विवाह, घरजिया विवाह, विधवा विवाह** की रीतियां प्रचलित है, प्रायः आदर्श विवाह या माता–पिता की सामग्री से विवाह प्रधान रूप से होते है।

विवाह में वधूमूल्य **(माहला)** प्रथा प्रचलित है तथा जबरन विवाह या विवाह विच्छेद हेतु हर्जाना बूंदा प्रथा है।

विवाह बातचीत की शुरूवात वर पक्ष द्वारा की जाती है विवाह के सामाजिक नियमों की पूर्ति होने पर **फलदान (सगाई), तेल–हल्दी, मड़वा, बारात, भांवर, सेंदूर, टिकान, मांदी (भोज)** प्रक्रिया से विवाह कार्यक्रम सम्पन्न माना जाता है।

मृत्यु संस्कार

बिरहोर जनजाति आत्मावादी समुदाय है अर्थात मृत्यु उपरांत भी जीवन में विश्वास करती है, इनमें मृतक को दफनाया जाता है। 2–3 दिन तिजनहावन व दसवें दिन **''दसो''** (दसगात्र) की परम्परा है। सामान्य मृत्यु को भगवान की ईच्छा माना जाता है तथा असामयिक मृत्यु को **अलौकिक कारणों (Supernatural causes)** से जोड़कर देखा जाता है। दफनाने की प्रक्रिया में शव का सिर उत्तर दिशा में रखा जाता है तथा पुत्र व अन्य लोगो द्वारा शव को **''मांदीभात''** खिलाया जाता है। शवाधान स्थल पर मृतक के उपयोग की हुई वस्तुएं रख दी जाती है। स्वजातीय सदस्यों को ही मुण्डन के लिये नाई एवं घर की साफ–सफाई हेतु धोबी का दायित्व दिया जाता है तथा भोज आदि बनाने का कार्य किया जाता है।

सामाजिक संरचना –

बिरहोर जनजाति पितृ सत्तात्मक एवं पितृवंशीय समुदाय है, जहां परिवार का मुखिया पुरूष होता है, तथा पिता के आधार पर ही वंश का संचालन होता है। इनमें परिहास एवं परिहार संबंधो की नातेदारी व्यवस्था होती है, इनके नातेदार रक्त संबंधी एवं विवाह संबंधी होते है, सामाजिक सह संबंध एवं अर्न्तजातीय संबंधों का पालन किया जाता है।

इनके **मेलासी, मिंदानी, बघेल, बांदी, सोनवानी, बरदानी, मरई, मुरमुनी, सनमनी, टोपवार, बाघ, बाड़ी** आदि प्रमुख गोत्र है, इनके गोत्र **टोटेमिक (Totemic)** होते है जो पशु, पक्षी, जीव–जन्तु एवं पेड–पौधे पर आधारित है।

आर्थिक जीवन

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की अर्थव्यवस्था वनोपज संकलन, छोटे जीव–जन्तुओं का शिकार, जंगली कंदमूल, भाजी का संकलन, मोहलाईन छाल से रस्सी निर्माण व बांस से टोकनी–सूपा निर्माण है।

साथ ही उपलब्ध कृषि भूमि पर परम्परागत पद्धति की **धान** की कृषि **मक्का, कोदो, उड़द** आदि बोते है।

वनोपजो एवं कंदमूल का स्वयं उपयोग करने के अतिरिक्त हाट–बाजार में विक्रय अथवा विनिमय कर दैनिक आवश्यकताओं के संसाधन जुटाते है।

जल स्त्रोतों से या वर्षाकाल में **मत्स्याखेट** भी करते है।

धार्मिक जीवन

बिरहोर जनजाति अपने स्थानीय देवी–देवता एवं पूर्वज देव पर अत्यधिक विश्वास करते है तथा विशिष्ट अवसरों पर इनकी पूजा व पुजेई की जाती है। बिरहोर जनजाति के ग्रामों में ग्राम देवता के रूप में **ठाकुर देव, डिहारिन माता, छुरिया पाठ, परघिया** आदि है जिनका स्थान ग्राम बसाहट से दूर सरना आदि मे होता है जहां विशिष्ट अवसरों पर सामुदायिक रूप से पूजा–पाठ का कार्य किया जाता है।

कुल देवी–देवताओं मे **हिंगलाजिन माता, तेरो, बूढ़ी माता, चूल्हादेव, बघोरी**, आदि प्रमुख है जिन्हे वार्षिक रूप से या विशेष अवसर पर पूजा–पाठ कर मुर्गा आदि की बलि दी जाती है। इसके अतिरिक्त पितर पूजा का भी अनुष्ठान किया जाता है।

राजनैतिक संगठन

बिरहोर जनजाति मे परम्परागत जाति पंचायत व्यवस्था पायी जाती है, इनमें प्रत्येक ग्राम स्तर पर ग्राम स्तरीय जाति पंचायत व्यवस्था पायी जाती है, जिसमें **मुखिया, बैगा** का पद वंशानुगत होता है जबकि अन्य मदो पर मनोनयन किया जाता है। इस जाति पंचायत का प्रमुख कार्य सामाजिक व्यवस्था को बनाये रखना है तथा ग्राम स्तर पर छोटे–छोटे सामाजिक अपराधों का निपटारा किया जाता है। ग्राम स्तर पर मुखिया को अन्य बुजुर्ग व्यक्तियों/जानकार द्वारा भी सहयोग किया जाता है।

ग्राम पंचायत स्तर पर मामलों के निपटारे न होने पर या सामुदायिक मामले या अन्य आवश्यकतानुसार मुद्दे परगना स्तरीय बिरहोर जाति पंचायत में निपटारे हेतु प्रस्तुत किया जाता है। पंचायत में बैठक व स्थान की सूचना प्राप्त होने पर दोनो पक्षो की बाते सूनी जाती है तथा प्रकरण अनुसार आर्थिक, सामाजिक बहिस्कार जैसे दण्डो का प्रावधान किया गया है।

लोक परम्पराये

लोक परम्परा में बिरहोर जनजाति के प्रमुख तीज–त्योहारों में **करमा, छेरता, जागा, पुजेई** आदि प्रमुख है।

==0==

अध्याय 04
सामाजिक – जननांकिकीय

जिलावार परिवार संकेन्द्रण

छत्तीसगढ़ राज्य की बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का सामाजिक जनांकिकीय वितरण की दृष्टि से जिलेवार परिवार संकेन्द्रण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 01

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवार का जिलावार सकेन्द्रण

क्र.	जिला का नाम	बिरहोर परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	बिलासपुर	143	12.81
2	जशपुर	163	14.61
3	कोरबा	506	45.34
4	रायगढ़	304	27.24
योग		**1116**	**100.00**

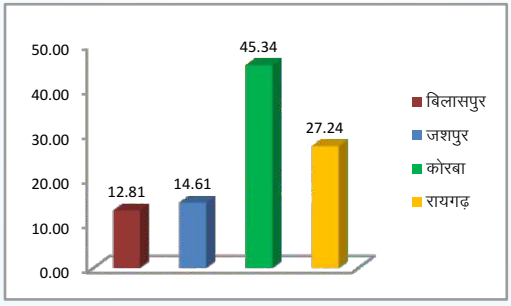

उपरोक्तानुसार तालिका अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले में निवासरत है। राज्य मे बिरहोर जनजाति के 1116 परिवार निवासरत है। जिलेवार परिवारों के संकेन्द्रण पर दृष्टि डाले तो ज्ञात होता है कि, सर्वाधिक 45.34 प्रतिशत (N=560) बिरहोर परिवार कोरबा जिले में, 27.24 प्रतिशत (N=304) बिरहोर परिवार रायगढ़ जिले मे, जशपुर जिले में 14.61 प्रतिशत (N=163) बिरहोर परिवार एवं शेष 12.81 प्रतिशत (N=143) बिरहोर परिवार बिलासपुर जिले में निवासरत है।

2. विकासखण्डवार संकेन्द्रण –

छत्तीसगढ़ राज्य के बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति निवासित जिलों मे विकासखण्डों मे बिरहोर परिवारों के संकेन्द्रण की जानकारी निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 02

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवार का विकासखण्डवार सकेन्द्रण

क्र.	जिला का नाम	विकासखण्ड का नाम	बिरहोर परिवार	
			संख्या	प्रतिशत
1	बिलासपुर	कोटा	104	9.32
2		मस्तुरी	39	3.49
योग			143	12.81
3	जशपुर	बगीचा	58	5.20
4		दुलदुला	16	1.43
5		कांसाबेल	28	2.51
6		कुनकुरी	25	2.24
7		पत्थलगांव	36	3.23
योग			163	14.61
8	कोरबा	कोरबा	145	12.99
9		पाली	160	14.34
10		पोड़ी उपरोड़ा	188	16.85
11		करतला	13	1.16
योग			506	45.34
12	रायगढ़	धरमजयगढ़	219	19.62
13		घरघोड़ा	13	1.16
14		लैलूंगा	23	2.06
15		तमनार	49	4.39
योग			304	27.24
कुलयोग			**1116**	**100.00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि, राज्य में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के जिलेवार संकेन्द्रण में सर्वाधिक संकेन्द्रण हालांकि कोरबा जिले में दिखाई पड़ता है किन्तु विकासखण्डवार आकलन करें तो सर्वाधिक 19.63 प्रतिशत (N=219) बिरहोर परिवार रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ विकासखण्ड में है। 16.85 प्रतिशत (N=188) बिरहोर परिवारों का संकेन्द्रण कोरबा

जिले के पोड़ी उपरोड़ा विकासखण्ड में, 14.34 प्रतिशत (N=160) परिवारों का संकेन्द्रण कोरबा के पाली विकासखण्ड में एवं 12.99 प्रतिशत (N=145) परिवार कोरबा जिले के कोरबा विकासखण्ड में है। सर्वाधिक न्यून 1.16 प्रतिशत (N=13) परिवारों का संकेन्द्रण कोरबा जिले के करतला विकासखण्ड एवं रायगढ़ जिले के घरघोड़ा विकासखण्ड (1.16 प्रतिशत, N=13) में पाया गया है।

बिलासपुर जिले के कोटा विकासखण्ड मे 9.32 प्रतिशत (N=104) एवं मस्तुरी विकासखण्ड मे 3.49 प्रतिशत (N=39) बिरहोर परिवार निवासरत है।

जशपुर जिले के बगीचा विकासखण्ड में 5.20 प्रतिशत (N=58) परिवार, कांसाबेल विकासखण्ड में 2.51 प्रतिशत (N=28) परिवार, पत्थलगांव विकासखण्ड में 3.23 प्रतिशत (N=36) परिवार, कुनकुरी विकासखण्ड में 2.24 प्रतिशत (N=25) परिवार एवं दुलदुला विकासखण्ड में 1.43 प्रतिशत (N=16) बिरहोर परिवार निवासरत है।

रायगढ़ जिले के लैलूंगा विकासखण्ड में 2.06 प्रतिशत (N=23) बिरहोर परिवार एवं इसी जिले के तमनार विकासखण्ड में 4.39 प्रतिशत (N=49) परिवार निवासरत है।

3. ग्रामवार परिवार का संकेन्द्रण –

छत्तीसगढ़ राज्य के बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति निवासित बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले के कुल 15 विकासखण्डों के निम्नांकित ग्रामों मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवार निवासरत है –

तालिका क्र. 03

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवार का ग्रामवार सकेन्द्रण

क्र.	जिला का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम का नाम	बिरहोर परिवार	
				संख्या	प्रतिशत
1	बिलासपुर	कोटा	बेलगहना	13	1.16
2			उमरियादादर	23	2.06
3			सेमरिया	25	2.24
4			कोइलारी	43	3.85
		योग		**104**	**9.32**
5		मस्तुरी	खैरवारपारा	11	0.99
6			जेवरा	28	2.51
		योग		**39**	**3.49**
	कुलयोग			**143**	**12.81**

7	जशपुर	बगीचा	पेटा	1	0.09
8			जनकपुर	30	2.69
9			शिवरीनारायण	23	2.06
10			डूमरटोली	4	0.36
		योग		**58**	**5.20**
11		दुलदुला	झारगांव	16	1.43
		योग		**16**	**1.43**
12		कांसाबेल	छेराघोघरा	9	0.81
13			बरमुड़ा	2	0.18
14			पोगड़	11	0.99
15			डभनीपानी	6	0.54
		योग		**28**	**2.51**
16		कुनकुरी	शंकरनगर	25	2.24
		योग		**25**	**2.24**
17		पत्थलगांव	बुलडेगा	29	2.60
18			सांवाटोली	7	0.63
		योग		**36**	**3.23**
	कुलयोग			**163**	**14.61**
19	कोरबा	कोरबा	चुईया	24	2.15
20			सकदूकला	24	2.15
21			अमलडीहा	3	0.27
22			मदनपुर	4	0.36
23			गेरांव	30	2.69
24			दलदली	9	0.81
25			देवदुवारी	36	3.23
26			लुदुरवेत	3	0.27
27			चिताबुड़ा	12	1.08
		योग		**145**	**12.99**
28		पाली	मंगामार	15	1.34
29			ईरफ	27	2.42
30			पोटापानी	2	0.18
31			भण्डारखोह	12	1.08
32			कोद्वार	6	0.54
33			शिवपुर	5	0.45
34			डूमरकछार	4	0.36

35			माखनपुर	5	0.45
36			डोंगानाला	53	4.75
37			उड़ता	20	1.79
38			टेड़ीचुवा	11	0.99
		योग		**160**	**14.34**
39		पोड़ी उपरोड़ा	कटोरी नगोई	15	1.34
40			केसलपुर	2	0.18
41			खोदरी	4	0.36
42			अमलडीहा	5	0.45
43			तानाखार	7	0.63
44			लालपुर	6	0.54
45			कोनकोना	12	1.08
46			धौरामुंडा	40	3.58
47			गुदरूमुड़ा	53	4.75
48			भंवर	10	0.90
49			बीजरा	11	0.99
50			मलदा	23	2.06
		योग		**188**	**16.85**
51		करतला	बोफदा	5	0.45
52			पीड़िया	6	0.54
53			करतला	2	0.18
		योग		**13**	**1.16**
	कुलयोग			**506**	**45.34**
54	रायगढ़	धरमजयगढ़	रूंवाफूल	27	2.42
55			बलपेदा	11	0.99
56			जमरगिड्डी	14	1.25
57			नकना	4	0.36
58			खम्हार	6	0.54
59			जमरगा	9	0.81
60			जमरगा	25	2.24
61			रायमेर	6	0.54
62			शकरलया	7	0.63
63			तेजपुर	2	0.18
64			ओंगना	10	0.90
65			दूधागांव	15	1.34

66			बरतापाली	11	0.99
67			किदा	13	1.16
68			खर्रा	18	1.61
69			खलबोरा	39	3.49
70			बिछिनारा	2	0.18
		योग		**219**	**19.62**
71		घरघोड़ा	कोटरीमाल	5	0.45
72			रायकेरा	8	0.72
		योग		**13**	**1.16**
73		लैलूंगा	कुर्रा	8	0.72
74			झगरपुर	10	0.90
75			बरडीह	5	0.45
		योग		**23**	**2.06**
76		तमनार	हिंझर	4	0.36
77			कोडकेल	20	1.79
78			कचकोबा	25	2.24
		योग		**49**	**4.39**
	कुलयोग			**304**	**27.24**
	महायोग			**1116**	**100.00**

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों का संकेन्द्रण छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले के 15 विकासखण्डों के 78 ग्रामों में है। उक्त 78 ग्रामों में बिरहोर जनजाति के कुल 1116 परिवार निवासरत है।

4. परिवार प्रकार

समाज चाहे शहरी, ग्रामीण अथवा जनजातीय समाज हो उनमें परिवार प्रकार की अवधारणा विद्यमान होती है। परिवार प्रकार एक परिवार अन्तर्गत निवास करने वाले वैवाहिक जोड़ो (रक्त संबंधी अथवा विवाह संबंधी नातेदारी सहित) के आधार पर केन्द्रीय (मूल), संयुक्त अथवा विस्तृत प्रकार के रूप में वर्गीकृत होते है। सर्वेक्षित बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में परिवार प्रकार का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 04

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे परिवार का प्रकार

क्र.	परिवार का प्रकार	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	केन्द्रीय	821	73.57
2	संयुक्त	264	23.66
3	विस्तृत	31	2.78
योग		**1116**	**100.00**

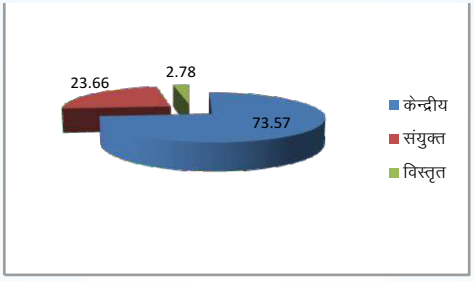

उपरोक्त तालिका में दर्शित आंकड़ों अनुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में सर्वाधिक 73.57 प्रतिशत (N=821) परिवार केन्द्रीय अथवा मूल प्रकृति के है, जिसमें एक विवाहित जोड़ा एवं उनकी संताने निवासरत है, वही 23.65 प्रतिशत (N=264) परिवार संयुक्त प्रकृति के पाये गये जहां एक से अधिक विवाहित जोड़े एवं उनकी संताने निवासरत पायी गई है।

सर्वेक्षण में 2.78 प्रतिशत (N=31) परिवार विस्तृत प्रकृति के भी पाये गये जिसमें एक से अधिक रक्त संबंधी विवाह जोड़े एवं उनकी संताने निवासरत पायी गई।

सर्वेक्षण में 2.78 प्रतिशत (N=31) परिवार विस्तृत प्रकृति के भी पाये गये जिसमे एक से अधिक रक्त संबंधी विवाह जोड़े के अतिरिक्त विवाह संबंधी नातेदारी के वैवाहिक जोड़े एवं उनकी संताने निवासरत पायी गई।

सामान्यतः जनजातियों में पूर्व की तुलना में केन्द्रीय अथवा मूल परिवारों का प्रचलन अधिकतर पाया जाता है। जहां पुत्रों के विवाह पश्चात वे अपने नवीन परिवार व बच्चों का लालन–पालन पिता से पृथक आवास निर्मित कर करते है।

5. जनसंख्या

छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले के कुल 15 विकासखण्डों में निवासरत बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल जनसंख्या निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 05

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे परिवार की जनसंख्या

क्र.	जनसंख्या					
	पुरूष		स्त्री		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	1726	49.46	1764	50.54	3490	100.00
कुल परिवार – 1116						

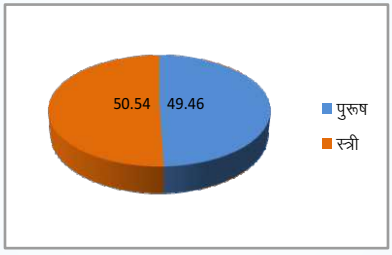

उपरोक्त तालिका अनुसार विशेष पिछड़ी जनजातियों के आधारभूत सर्वेक्षण अनुसार राज्य के 04 जिलों के 15 विकासखण्डों में निवासरत 1116 बिरहोर परिवारों में कुल जनसंख्या 3490 है।

बिरहोर जनजाति में जनसंख्या अनुपात की दृष्टि से पुरूष जनसंख्या 1726 (49.46 प्रतिशत) तथा स्त्री जनसंख्या 1764 (50.54 प्रतिशत) पायी गई है।

6. जिलेवार जनसंख्या संकेन्द्रण

छत्तीसगढ़ राज्य में जिलावार निवासित बिरहोर परिवारों में जनसंख्या विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 06

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे जिलेवार जनसंख्या का संकेन्द्रण

क्र.	जिला	परिवार संख्या	जनसंख्या					
			पुरूष		स्त्री		योग	
			संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	बिलासपुर	143	220	12.75	240	13.58	460	13.17
2	जशपुर	163	270	15.65	257	14.54	527	15.09
3	कोरबा	506	772	44.75	773	43.75	1545	44.24
4	रायगढ़	304	464	26.90	494	27.96	958	27.43
योग		**1116**	**1726**	**49.46**	**1764**	**50.54**	**3490**	**100.00**

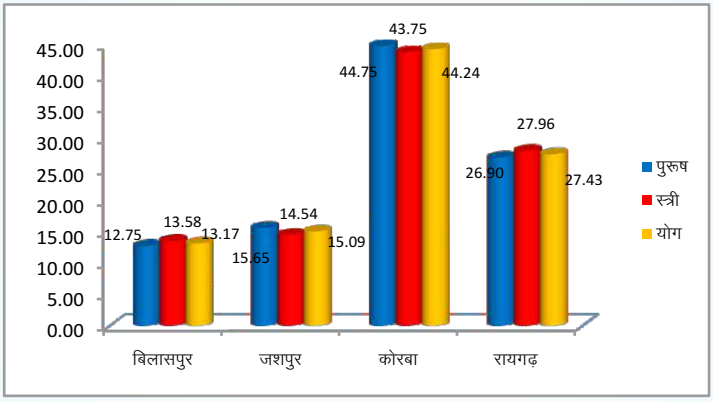

उपरोक्तानुसार दर्शित है कि राज्य में विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर की कुल जनसंख्या मे से सर्वाधिक 44.24 प्रतिशत (N=1545) जनसंख्या कोरबा जिले मे निवासरत है जिसमें 44.75 प्रतिशत (N=772) पुरूष एवं स्त्री जनसंख्या 43.75 प्रतिशत (N=773) है।

रायगढ़ जिले में कुल बिरहोर जनसंख्या का 27.43 प्रतिशत (N=958) भाग निवासरत है। जिसमें पुरूष जनसंख्या 26.90 प्रतिशत (N=464) तथा स्त्री जनसंख्या 27.96 प्रतिशत (N=494) है।

जशपुर जिला अन्तर्गत राज्य की कुल बिरहोर जनसंख्या का 15.09 प्रतिशत (N=527) भाग निवासरत है। जहां पुरूष जनसंख्या 15.65 प्रतिशत (N=270) एवं बिरहोर स्त्री जनसंख्या 14. 54 प्रतिशत (N=257) है।

राज्य में कुल बिरहोर जनसंख्या मे से सर्वाधिक कम जनसंख्या में निवासरत होने वाला जिला बिलासपुर है जहां कुल बिरहोर जनसंख्या का 13.18 प्रतिशत (N=460) भाग निवासरत है, जिसमें 12.75 प्रतिशत (N=220) पुरूष जनसंख्या एवं 13.58 प्रतिशत (N=240) स्त्री जनसंख्या का है।

संक्षेप में बिरहोर जनसंख्या संकेन्द्रण (Birhor Population Concentration) की दृष्टि से प्रथम रायगढ़ जिला, द्वितीय कोरबा, तृतीय स्थान पर जशपुर एवं चतुर्थ पर जिला बिलासपुर है।

विकासखण्डवार जनसंख्या संकेन्द्रण –

छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का विकासखण्डवार जनसंख्या संकेन्द्रण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 07

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे विकासखण्डवार जनसंख्या का संकेन्द्रण

क्र.	जिला	विकासखण्ड	परिवार संख्या	जनसंख्या					
				पुरूष		स्त्री		योग	
				संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	बिलासपुर	कोटा	104	163	9.45	174	9.85	337	9.65
2		मस्तुरी	39	57	3.30	66	3.74	123	3.52
3	जशपुर	बगीचा	58	99	5.74	83	4.70	182	5.21
4		दुलदुला	16	29	1.68	27	1.53	56	1.60
5		कांसाबेल	28	49	2.84	53	3.00	102	2.92
6		कुनकुरी	25	36	2.09	37	2.09	73	2.09
7		पत्थलगांव	36	57	3.30	57	3.23	114	3.26
8	कोरबा	कोरबा	145	226	13.10	220	12.45	446	12.77
9		पाली	160	241	13.97	258	14.60	499	14.29
10		पोड़ी उपरोड़ा	188	284	16.46	275	15.56	559	16.01
11		करतला	13	21	1.22	20	1.13	41	1.17
12	रायगढ़	धरमजयगढ़	219	334	19.36	347	19.64	681	19.50
13		घरघोड़ा	13	30	1.74	22	1.25	52	1.49
14		लैलूंगा	23	36	2.09	47	2.66	83	2.38
15		तमनार	49	64	3.71	78	4.41	142	4.07
योग			**1116**	**1725**	**1116**	**1726**	**49.46**	**1764**	**50.54**

उपरोक्तानुसार राज्य में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की जनसंख्या का सर्वाधिक 19.50 प्रतिशत (N=681) संकेन्द्रण रायगढ़ जिले के धरमजयगढ़ विकासखण्ड में है। कोरबा जिले के पोड़ी उपरोड़ा विकासखण्ड में 16.0 प्रतिशत (N=559), पाली विकासखण्ड में 14.29 प्रतिशत (N=499), एवं इसी जिले के कोरबा विकासखण्ड में बिरहोर जनसंख्या का संकेन्द्रण 12.77 प्रतिशत (N=446) है।

बिलासपुर जिले के कोटा विकासखण्ड में 9.65 प्रतिशत (N=337), जशपुर जिले के बगीचा विकासखण्ड में बिरहोर जनसंख्या का संकेन्द्रण 5.22 प्रतिशत (N=182) है।

छत्तीसगढ़ राज्य में विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर निवासित 15 विकासखण्डों में से उपरोक्तानुसार 06 विकासखण्डों मे बिरहोर जनसंख्या का सकेन्द्रण 5 प्रतिशत से उपर (5.22 प्रतिशत से 19.56 प्रतिशत तक) है। शेष 09 विकासखण्डों में बिरहोर जनजाति का जनसंख्या वितरण 5 प्रतिशत से भी कम है।

8. **ग्रामवार जनसंख्या संकेन्द्रण** –

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति छत्तीसगढ़ के 04 जिलों के 15 विकासखण्डों के 78 ग्रामों में कुल 1116 परिवार ईकाई के रूप में निवासरत है। उक्त 78 ग्रामों की ग्रामवार जनसंख्यात्मक सूची निम्नांकित है –

तालिका क्र. 08

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवार का ग्रामवार सकेन्द्रण

क्र.	जिला का नाम	विकासखण्ड का नाम	ग्राम का नाम	परिवार संख्या	जनसंख्या		
					पुरूष	स्त्री	योग
1	बिलासपुर	कोटा	बेलगहना	13	18	23	41
2			उमरियादादर	23	34	47	81
3			सेमरिया	25	37	37	74
4			कोइलारी	43	74	67	141
		योग		**104**	**163**	**174**	**337**
5		मस्तुरी	खैरवारपारा	11	12	18	30
6			जेवरा	28	45	48	93
		योग		**39**	**57**	**66**	**123**
	कुलयोग			**143**	**220**	**240**	**460**
7	जशपुर	बगीचा	पेटा	1	1	0	1
8			जनकपुर	30	45	35	80

9			शिवरीनारायण	23	45	42	87
10			डूमरटोली	4	8	6	14
		योग		**58**	**99**	**83**	**182**
11		दुलदुला	झारगांव	16	29	27	56
		योग		**16**	**29**	**27**	**56**
12		कांसाबेल	छेराघोघरा	9	17	19	36
13			बरमुड़ा	2	5	4	9
14			पोगड़	11	17	18	35
15			डभनीपानी	6	10	12	22
		योग		**28**	**49**	**53**	**102**
16		कुनकुरी	शंकरनगर	25	36	37	73
		योग		**25**	**36**	**37**	**73**
17		पत्थलगांव	बुलडेगा	29	49	50	99
18			सांवाटोली	7	8	7	15
		योग		**36**	**57**	**57**	**114**
	कुलयोग			**163**	**270**	**257**	**527**
19		कोरबा	चुईया	24	9	10	19
20			सकदूकला	24	9	8	17
21			अमलडीहा	3	3	2	5
22			मदनपुर	4	**21**	**20**	**41**
23			गेरांव	30	27	31	58
24			दलदली	9	33	33	66
25			देवदुवारी	36	7	7	14
26			लुदुरवेत	3	8	8	16
27			चितावुड़ा	12	50	52	102
	कोरबा	**योग**		**145**	14	11	25
28		पाली	मंगामार	15	64	59	123
29			ईरफ	27	4	5	9
30			पोटापानी	2	19	14	33
31			भण्डारखोह	12	**226**	**220**	**446**
32			कोट्टार	6	17	20	37
33			शिवपुर	5	34	43	77
34			डूमरकछार	4	4	3	7
35			माखनपुर	5	18	17	35
36			डोंगानाला	53	8	10	18

37			उड़ता	20	11	8	19
38			टेड़ीचुवा	11	5	6	11
		योग		**160**	7	6	13
39		पोड़ी उपरोड़ा	कटोरी नगोई	15	96	88	184
40			केसलपुर	2	23	30	53
41			खोदरी	4	18	27	45
42			अमलडीहा	5	**241**	**258**	**499**
43			तानाखार	7	24	24	48
44			लालपुर	6	3	4	7
45			कोनकोना	12	5	6	11
46			धौरामुंडा	40	6	9	15
47			गुदरूमुड़ा	53	7	14	21
48			भंवर	10	13	7	20
49			बीजरा	11	18	17	35
50			मलदा	23	69	53	122
		योग		**188**	71	75	146
51		करतला	बोफदा	5	15	18	33
52			पीड़िया	6	20	19	39
53			करतला	2	33	29	62
		योग		**13**	**284**	**275**	**559**
	कुलयोग			**506**	**772**	**773**	**1545**
54	रायगढ़	धरमजयगढ़	रूंवाफूल	27	36	35	71
55			बलपेदा	11	17	12	29
56			जमरगिड्डी	14	19	20	39
57			नकना	4	9	5	14
58			खम्हार	6	10	4	14
59			जमरगा	9	18	13	31
60			जमरगा	25	40	44	84
61			रायमेर	6	11	11	22
62			शकरलया	7	8	11	19
63			तेजपुर	2	0	3	3
64			ओंगना	10	22	15	37
65			दूधागांव	15	19	38	57
66			बरतापाली	11	15	14	29
67			किदा	13	22	18	40

68			खर्रा	18	31	35	66
69			खलबोरा	39	56	66	122
70			बिछिनारा	2	1	3	4
		योग		**219**	**334**	**347**	**681**
71		घरघोड़ा	कोटरीमाल	5	11	10	21
72			रायकेरा	8	19	12	31
		योग		**13**	**30**	**22**	**52**
73		लैलूंगा	कुर्रा	8	13	16	29
74			झगरपुर	10	14	21	35
75			बरडीह	5	9	10	19
		योग		**23**	**36**	**47**	**83**
76		तमनार	हिंझर	4	4	10	14
77			कोडकेल	20	26	28	54
78			कचकोबा	25	34	40	74
		योग		**49**	**64**	**78**	**142**
	कुलयोग			**304**	**464**	**494**	**958**
	महायोग			**1116**	**1726**	**1764**	**3490**

9. उम्र–समूह अनुसार जनसंख्या

किसी समुदाय की सामाजिक जनांकिकीय संरचना मे समुदाय की जनसंख्या के संदर्भ में उम्र समूह अनुसार जनसंख्या वर्गीकरण एक अति महत्वपूर्ण तथ्य होता है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में कुल जनसंख्या का उम्र समूह अनुसार वितरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 09

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे उम्र–समूह अनुसार जनसंख्या वितरण

क्र.	उम्र समूह का विवरण	जनसंख्या					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	0–6	281	16.28	289	16.38	570	16.33
2	7–14	299	17.32	322	18.25	621	17.79
3	15–25	369	21.38	323	18.31	692	19.83
4	26–45	454	26.30	473	26.81	927	26.56
5	46–60	197	11.41	217	12.30	414	11.86
6	60 से अधिक	117	6.78	137	7.77	254	7.28

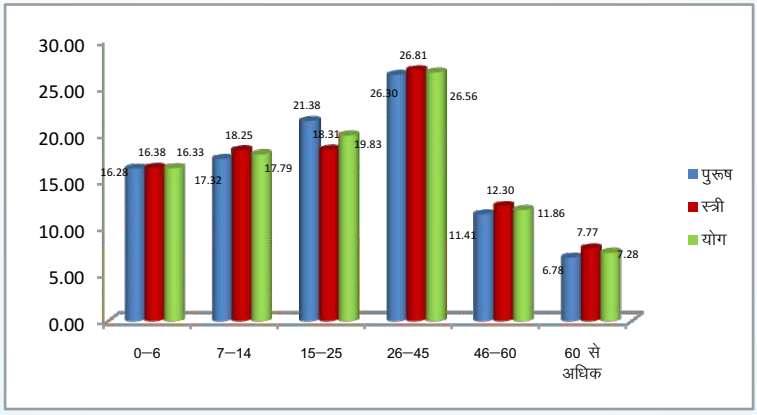

छत्तीसगढ़ राज्य की बिरहोर जनजाति की कुल जनसंख्या 3490 है, जिसमें 1726 पुरूष जनसंख्या एवं 1764 स्त्री जनसंख्या है। उपरोक्त तालिका अनुसार सर्वेक्षित बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में सर्वाधिक जनसंख्या 26.56 प्रतिशत (N=927) 26–45 वर्ष उम्र समूह की है।

19.83 प्रतिशत (N=692) जनसंख्या 15–25 वर्ष उम्र समूह की, 17.79 प्रतिशत (N=621) जनसंख्या 7–14 वर्ष उम्र समूह की है। 0–6 वर्ष उम्र समूह की जनसंख्या 16.33 प्रतिशत (N=570) है वही 7.28 प्रतिशत (N=254) जनसंख्या 60 वर्ष या उससे अधिक की उम्र समूह की है।

उम्र समूह की जनसंख्या का वर्गीकरण देखने से ज्ञात होता है कि अधिकतर उम्र समूह में स्त्री जनसंख्या पुरूष जनसंख्या की तुलना में अधिक है।

10. लिंगानुपात

किसी भी समुदाय में सामाजिक–जनांकिकीय वितरण का आधार उस समुदाय के स्त्री–पुरूष लिंगानुपात होता है। स्त्री–पुरूष लिंगानुपात किसी समुदाय की साम्यावस्था को बनाये रखेने का कार्य करती है। स्त्री–पुरूष लिंगानुपात से आशय किसी समूह अथवा समुदाय में प्रति हजार पुरूषो पर स्त्रियों की संख्या से है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति मे स्त्री–पुरूष लिंगानुपात निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 10

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे लिंगानुपात

क्र.	बिरहोर जनसंख्या		
	पुरूष	स्त्री	लिंगानुपात
1	1726	1764	1022

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का आधारभूत सर्वेक्षण अनुसार स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 1022 है। यह लिंगानुपात छत्तीसगढ़ राज्य की अनुसूचित जनजाति में जनगणना 2011 मे पाये गये लिंगानुपात 1020 की तुलना में अधिक है।

11. जिलेवार लिंगानुपात –

राज्य में निवासरत बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का जिलावार स्त्री–पुरूष लिंगानुपात निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 11

जिलेवार लिंगानुपात

क्र.	जिला का नाम	बिरहोर जनसंख्या		लिंगानुपात
		पुरूष	स्त्री	
1	बिलासपुर	220	240	1091
2	जशपुर	270	257	952
3	कोरबा	772	773	1001
3	रायगढ़	464	494	1065

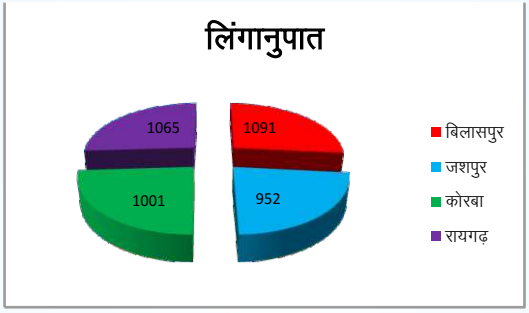

उपरोक्तानुसार बिलासपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिलों में निवासरत बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति का स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 1000 से अधिक है। बिलासपुर जिले में प्रति हजार बिरहोर पुरूष की तुलना में 1090 महिलाएं, रायगढ़ जिले में 1000 पुरूषो की तुलना में 1065 महिलाएं, कोरबा जिले मे प्रति हजार बिरहोर पुरूष जनसंख्या की तुलना में 1001 महिलाएं है।

जशपुर जिले में लिंगानुपात की स्थिति विषम है जहां प्रति एक हजार बिरहोर पुरूष की तुलना में केवल 952 महिलाएं ही है।

12. विकासखण्डवार स्त्री–पुरूष लिंगानुपात –

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति राज्य के 04 जिलों के 15 विकासखण्डों में निवासरत है। विकासखण्डवार स्त्री–पुरूष लिंगानुपात की स्थिति का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्रमांक 12

विकासखण्डवार स्त्री–पुरूष लिंगानुपात

क्र.	जिला	विकासखण्ड	जनसंख्या		
			पुरूष संख्या	स्त्री संख्या	योग संख्या
1	बिलासपुर	कोटा	163	174	1067
2		मस्तुरी	57	66	1158
3	जशपुर	बगीचा	99	83	838
4		दुलदुला	29	27	931
5		कांसाबेल	49	53	1082
6		कुनकुरी	36	37	1028
7		पत्थलगांव	57	57	1000
8	कोरबा	कोरबा	226	220	973
9		पाली	241	258	1071
10		पोड़ी उपरोड़ा	284	275	968
11		करतला	21	20	952
12	रायगढ़	धरमजयगढ़	334	347	1039
13		घरघोड़ा	30	22	733
14		लैलूंगा	36	47	1306
15		तमनार	64	78	1219
योग			**1726**	**1764**	**1022**

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति निवासित 15 विकासखण्डों मे से 09 विकासखण्ड यथा कोटा, मस्तुरी, कांसाबेल, कुनकुरी, पत्थलगांव, पाली, लैलूंगा, तमनार एवं धरमजयगढ़ विकासखण्डों मे प्रति हजार पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या एक हजार से अधिक पायी गई।

वही 06 विकासखण्ड यथा, बगीचा, दुलदुला, करतला, कोरबा, पोड़ी उपरोड़ा एवं घरघोड़ा ऐसे है जहां प्रति हजार बिरहोर पुरूषों की तुलना मे महिलाओं की संख्या एक हजार से भी कम है।

सर्वाधिक महिलाओं की कम संख्या वाला विकासखण्ड जशपुर जिले का बगीचा विकासखण्ड है जहां प्रति एक हजार पुरूषों की तुलना में महिलाओं की संख्या केवल 838 है।

13. जनसंख्या वृद्धि दर

किसी समुदाय विशेष में जनसंख्या वृद्धि से आशय एक दशक मे उस समुदाय के जनसंख्यात्मक आंकड़ो में होने वाली वृद्धि से है। भारत सरकार द्वारा किसी अनुसूचित जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति समूह (PVTGs) में शामिल करने निर्धारित किये गये मापदण्डों मे से उस समूह/समुदाय में उसकी ''स्थिर जनसंख्या अथवा कम होती जनसंख्या'' को भी एक मापदण्ड माना गया है।

किसी समुदाय/समूह की जनसंख्या वृद्धि दर (दशकीय) को निम्नांकित सूत्र द्वारा ज्ञात किया जाता है –

$$\frac{\text{दशकीय जनसंख्या का अंतर}}{\text{पूर्व दशक की जनसंख्या}} \times 100$$

A सर्वेक्षण 2005–06 में बिरहोर जनसंख्या = 2626

B सर्वेक्षण 2015–16 में बिरहोर जनंसख्या = 3490

C दशकीय जनसंख्या का अंतर (B –A = C) = 864

अर्थात,

$$\frac{3490\ (B) - 2626\ (A) = 864\ (C)}{2626\ (A)} \times 100$$

= 32.90 प्रतिशत

अतः उपरोक्तानुसार राज्य की बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर 32.90 प्रतिशत पायी गई। जो छत्तीसगढ़ राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति जनसंख्या वृद्धिदर 18.23 प्रतिशत की तुलना में अधिक है जो कि एक धनात्मक पहलू है।

14. वैवाहिक स्थिति –

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के सामाजिक–जनांकिकीय परिप्रेक्ष्य में वैवाहिक स्थिति का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 13

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे वैवाहिक स्थिति

क्र.	विवरण	वैवाहिक स्थिति					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	विवाहित	830	48.09	857	48.58	1687	48.34
2	विधवा / विदुर / परित्यक्ता	78	4.52	186	10.54	264	7.56
योग		**908**	**52.61**	**1043**	**59.13**	**1951**	**55.90**

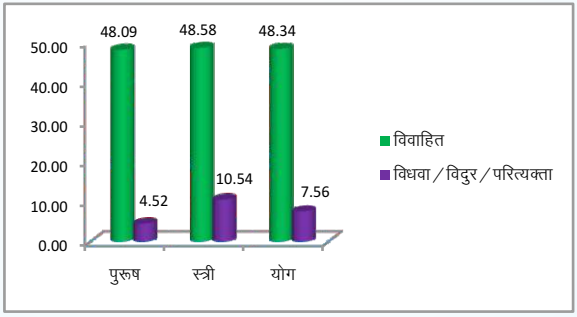

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में कुल जनसंख्या 3490 है। जिसमें 1726 पुरूष एवं 1764 स्त्री जनसंख्या है। वैवाहिक स्थिति के संदर्भ में उपरोक्त तालिका में दर्शित आंकड़ों के अनुसार बिरहोर जनजाति में 48.09 प्रतिशत पुरूष (N=830) विवाहित एवं 48.58 प्रतिशत (N=857) स्त्री जनसंख्या वैवाहिक है, वही 4.52 प्रतिशत (N=78) पुरूष विदुर श्रेणी के एवं 10.54 प्रतिशत (N=186) स्त्री जनसंख्या विधवा अथवा परित्यक्ता श्रेणी की है।

समग्र रूप से बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 48.34 प्रतिशत (N=1687) स्त्री–पुरूष सदस्य विवाहित एवं 7.56 प्रतिशत (N=264) स्त्री–पुरूष सदस्य विधवा / परित्यक्ता / विदुर श्रेणी के है।

15. वैवाहिक स्थिति

किसी भी समुदाय में सदस्यों की वैवाहिक उम्र का निर्धारण सामाजिक एवं स्वाथ्यगत कारणों से बहुत ही महत्वपूर्ण तथ्य है। सामाजिक रूप से वैवाहिक दायित्वों के सफलतापूर्वक निष्पादन हेतु शारीरिक विकास क्षमता के साथ–साथ मानसिक विकास भी आवश्यक होता है।

सामान्यतः जनजातीय समाजों में धारणा प्रचलित है कि एक बालिका का मासिक धर्म प्रारंभ होने पर उसे विवाह योग्य समझा जाता है। वहीं बालको की दाढ़ी–मूंछ आने व अन्य शारीरिक बदलाव को स्वयं के परिवार संचालन की क्षमता आ जाने को विवाह योग्य आयु के रूप में देखा जाता है। शासकीय नियमानुसार जहां बालको हेतु 21 वर्ष की आयु एवं बालिकाओं हेतु 18 वर्ष की आयु को वयस्क मानते हुये विवाह आयु निर्धारित की गई है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में पुरूष एवं स्त्री वर्ग में विवाह उम्र का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 14

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे वैवाहिक उम्र समूह का वितरण

क्र.	विवाह उम्र समूह का विवरण	जनसंख्या					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	15 से कम	11	1.21	121	11.60	132	6.77
2	15–18	190	20.93	578	32.71	768	39.36
3	19–21	442	48.68	210	11.88	652	33.42
4	22–24	113	12.44	50	2.83	163	8.35
5	25 से अधिक	103	11.34	20	1.13	123	6.30

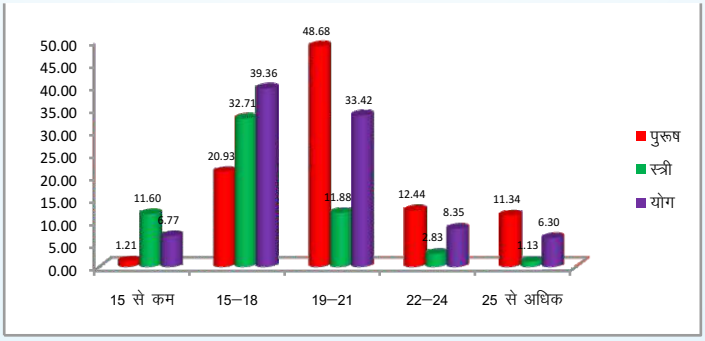

पूर्व तालिका अनुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल जनसंख्या मे से 1951 सदस्य विवाहित अथवा विधवा/विधुर/परित्यक्ता पाये गये जिसमें 908 पुरूष एवं 1043 महिला सदस्य है।

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि बिरहोर जनजाति में 6.77 प्रतिशत (N=132) सदस्यों के विवाह 15 वर्ष की आयु के पूर्व होना पाय गया जिसमें पुरूषों (1.21 प्रतिशत) की तुलना में स्त्री वर्ग की संख्या 11.60 प्रतिशत (N=121) अधिक पायी गई।

15–18 वर्ष की आयु में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 39.36 प्रतिशत (N=768) सदस्यसों के विवाह हुये जिसमें 20.93 प्रतिशत पुरूष सदस्य एवं 55.42 प्रतिशत महिला सदस्य है।

19–21 वर्ष उम्र समूह में बिरहोर जनजाति में 33.42 प्रतिशत (N=652) व्यक्तियों के विवाह होना पाये गये जिसमें 48.68 प्रतिशत (N=442) पुरूष एवं 20.13 प्रतिशत (N=210) महिला सदस्य है।

22–24 वर्ष की आयु में विवाह करने वाले बिरहोर स्त्री–पुरूष सदस्यों की संख्या 8.35 प्रतिशत (N=163) ही पायी गई। वही 25 या 25 वर्ष से अधिक की आयु में विवाह करने वाले सदस्यों की संख्या 6.30 प्रतिशत (N=123) है।

निष्कर्ष स्वरूप ज्ञात होता है कि 18 या 18 वर्ष से कम की आयु में बिरहोर जनजाति की 67.02 प्रतिशत (N=699) महिलाओं के विवाह हुये, वही पुरूषों में 21 वर्ष की आयु के पहले 70.82 प्रतिशत (N=643) विवाह पाये गये।

16. धार्मिक आस्था –

राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के समस्त परिवार धार्मिक रूप आदिवासी परम्परा का निर्वाह करते हुये स्वयं को हिन्दू धर्म के धर्मावलंबी मानते है।

17. सामाजिक नेतृत्व –

सामाजिक – जनांकिकीय अंतर्गत समाज के संचालन, एकजुटता एवं सामाजिक मूल्यों एवं विश्वासों को बनाये रखने सामाजिक नेतृत्व की भी आवश्यकता होती है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों में सामाजिक नेतृत्व धारिता की स्थिति निम्नांकित है –

तालिका क्र. 15

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे सामाजिक नेतृत्व का वितरण

क्र.	नेतृत्व (सामा.) धारिता का विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	धर्म निरपेक्ष मुखिया	38	3.41
2	धार्मिक मुखिया	57	5.11
3	गुनिया/सिरहा	35	3.14
4	त्योतिषी	4	0.36
5	चौकीदार/कोटवार	27	2.42
6	अन्य	4	0.36
कुल सर्वेक्षित परिवार– 1116		**165**	**14.78**

उपरोक्तानुसार विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के 14.78 प्रतिशत (N=165) परिवार सामाजिक नेतृत्व के दायित्व का संचालन कर रहे है। जिसमें 3.40 प्रतिशत परिवार धर्म निरपेक्ष मुखिया के रूप में, 5.11 प्रतिशत परिवार धार्मिक मुखिया के रूप में एवं 3.14 प्रतिशत परिवार गुनिया/सिरहा (लोक चिकित्सक–वनौषधीय उपचारक) के दायित्व का निर्वहन कर रहे है। वही सामाजिक कार्यो के संचालन हेतु 2.42 प्रतिशत परिवार सामाजिक चौकीदार या कोटवार की भूमिका का निर्वहन कर रहे है।

==0==

अध्याय 05
शैक्षणिक स्थिति

किसी भी समाज के समग्र विकास के लिये शिक्षा एक महत्वपूर्ण कारक है। विकास के क्रम में मानव समुदाय का एक हिस्सा जिसे हम आदिवासी या जनजाति के नाम से जानते है, जो सामान्यतः दूर–दराज के क्षेत्रों, वनो एवं महाड़ियों मे निवास करने के कारण अन्य शहरी अथवा ग्रामीण क्षेत्रो की तुलना में पिछड़े हुये है।

विशेष पिछड़ी जनजातियां अन्य अनुसूचित जनजातियों की तुलना मे अधिक विषम परिस्थितियों मे निवासरत है, अतः इनकी शैक्षणिक स्थिति अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक पिछड़ी हुई है।

भारत सरकार द्वारा भी किसी अनुसूचित जनजाति को विशेष पिछड़ी जनजाति घोषित करने हेतु निर्धारित किये गये मापदण्ड मे किसी निश्चित समुदाय की अल्प साक्षरता दर को भी शामिल किया गया है।

शिक्षा के क्षेत्र में इन वर्गों के विकास हेतु विगत 07 दशकों से भारत सरकार एवं राज्य सरकारे उनके शैक्षणिक विकास हेतु अनेक योजनाएं संचालित कर रही है जिनके धीरे–धीरे धनात्मक परिणाम भी सामने आ रहे है।

अध्ययनरत् सदस्यों का विवरण

वर्तमान मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में प्राथमिक स्तर से हायर सेकण्ड्री स्तर तक की शिक्षा प्राप्त कर रहे बालक–बालिकाओं का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 16

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे
अध्ययनरत सदस्यों का वितरण

क्र.	अध्ययन का स्तर	अध्ययनरत सदस्य					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	पुरूष	संख्या	स्त्री	संख्या	योग
1	प्राथमिक	209	60.58	212	0.69	421	64.57
2	माध्यमिक	100	28.99	63	0.21	163	25.00
3	हाईस्कूल	14	4.06	11	0.04	25	3.83
4	हायर सेकण्ड्री	0	0.00	1	0.00	1	0.15
5	स्नातक / स्नातकोत्तर	0	0.00	0	0.00	0	0.00
6	अन्य / तकनीकी	22	6.38	20	0.07	42	6.44
योग		**345**	**100.00**	**307**	**1.00**	**652**	**100.00**

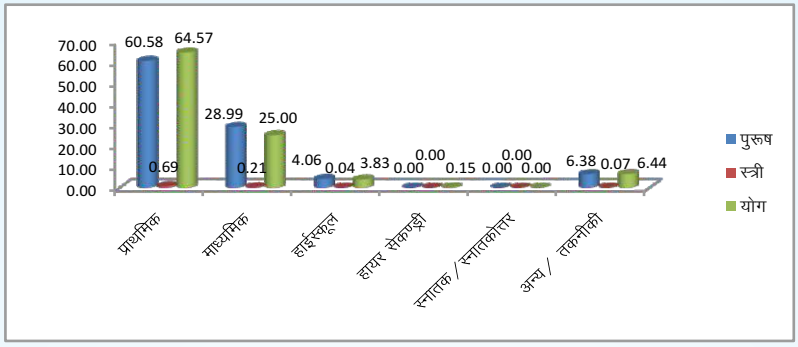

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि, बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 652 बालक–बालिकायें वर्तमान में अध्ययनरत है, जिसमें से 52.91 प्रतिशत बालक एवं 47.09 प्रतिशत N=307) बालिकाएं विभिन्न स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर रहे है।

अध्ययनरत बिरहोर विद्यार्थियों मे से 64.57 प्रतिशत (N=421) बालक–बालिकाएं प्राथमिक स्तर की शिक्षा प्राप्त कर रहे है, जिसमें 60.58 प्रतिशत (N=209) बालको की तुलना में 69.06 प्रतिशत (N=212) बालिकाएं है।

माध्यमिक स्तर पर बिरहोर जनजाति के 25.0 प्रतिशत (N=163) बालक–बालिकाएं अध्ययनरत है। जिसमें 28.99 प्रतिशत (N=100) बालकों की तुलना में बालिकाओं की संख्या 20. 52 प्रतिशत (N=63) कम है।

हाईस्कूल स्तर पर 3.83 प्रतिशत (N=25) बालक–बालिकाएं शिक्षा प्राप्त कर रहे है। जिसमें भी बालिकाओं की संख्या 3.58 प्रतिशत (N=11) बालकों की संख्या 4.06 प्रतिशत (N=14) की तुलना में कम है।

हायर सेकण्ड्री स्तर पर केवल 0.15 प्रतिशत (N=01) बालिका ही अध्ययनरत है।

अन्य स्तर अथवा तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर रहे बालक–बालिकाओं का प्रतिशत 6.44 N=42) है जिसमें बालकों की संख्या 6.38 प्रतिशत (N=22) एवं 6.51 प्रतिशत (N=20) बालिकाएं है।

अध्ययन समाप्त कर चुके सदस्यों का विवरण

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में किसी न किसी स्तर की शिक्षा प्राप्त कर अध्ययन छोड़ चुके सदस्यों का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 17

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे अध्ययन समाप्त कर चुके सदस्यों का वितरण

क्र.	अध्ययन का स्तर	अध्ययन समाप्त कर चुके सदस्य					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	पुरूष	संख्या	स्त्री	संख्या	योग
1	प्राथमिक	180	52.17	139	0.45	319	48.93
2	माध्यमिक	103	29.86	46	0.15	149	22.85
3	हाईस्कूल	30	8.70	11	0.04	41	6.29
4	हायर सेकण्ड्री	4	1.16	0	0.00	4	0.61
5	अन्य (तकनीकी)	109	31.59	127	0.41	236	36.20
योग		**426**	**123.48**	**323**	**1.05**	**749**	**114.88**

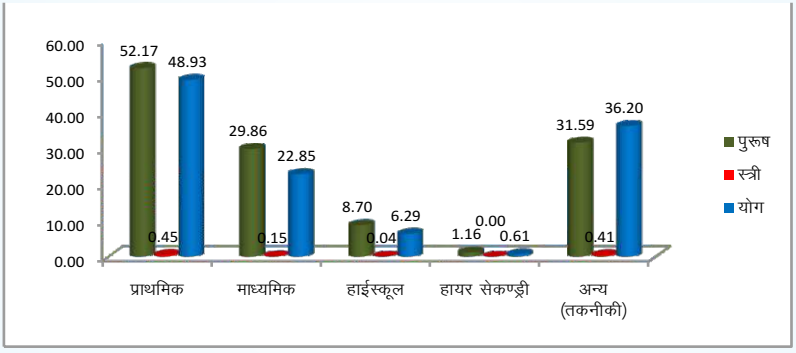

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के कुल शिक्षित सदस्यों में से 749 सदस्यों द्वारा किसी न किसी स्तर की शिक्षा अर्जित कर अध्ययन छोड़ दिया है जिसमें पुरूषों की संख्या 56.88 प्रतिशत (N=426) एवं महिला वर्ग की संख्या 43.12 प्रतिशत (N=232) है।

प्राथमिक स्तर पर कुल 42.59 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर छोड़ दी जिसमें 42.25 प्रतिशत (N=180) एवं 43.03 प्रतिशत (N=139) महिला है।

माध्यमिक स्तर तक 19.89 प्रतिशत (N=149) व्यक्तियों द्वारा शिक्षा प्राप्त कर अध्ययन छोड़ दिया जिसमें 24.18 प्रतिशत (N=103) पुरूष एवं 14.24 प्रतिशत (N=46) महिलाएं है।

हाई स्कूल स्तर तक 5.47 प्रतिशत (N=41) व्यक्तियों ने शिक्षा प्राप्त कर अध्ययन बंद कर दिया जिसमें 7.04 प्रतिशत (N=30) पुरूष एवं 3.40 प्रतिशत (N=11) महिलाएं है।

हायर सेकण्ड्री स्तर तक की शिक्षा प्राप्त कर 0 53 प्रतिशत (=04) पुरूषों ने शिक्षा छोड़ दी। इस वर्ग में महिलाओं की संख्या निरंक है।

बिरहोर जनजाति के 31.51 प्रतिशत (N=236) लोगों ने अन्य या तकनीकी शिक्षा प्राप्त कर अध्ययन समाप्त किया जिसमें 25.59 प्रतिशत (N=109) पुरूष एवं शेष 39.32 प्रतिशत (N=127) महिलाएं है।

कुल साक्षर सदस्य

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में साक्षर व्यक्तियों की जानकारी निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 18

कुल साक्षर सदस्यों का विवरण

क्र.	कुल साक्षर सदस्यों का विवरण	साक्षर सदस्य		
		पुरूष	स्त्री	योग
1	अध्ययनरत्	345	307	652
2	अध्ययन छोड़ चुके	426	323	749
योग		**771**	**630**	**1401**

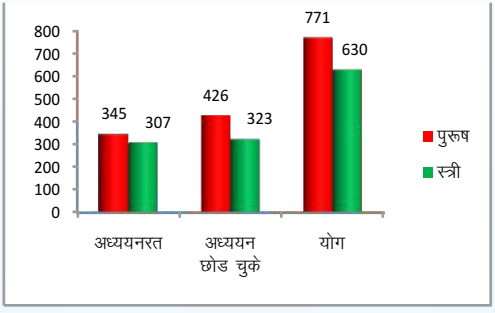

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति मे कुल 1401 व्यक्ति किसी न किसी स्तर तक शिक्षित है, जिसमें 771 पुरूष एवं 630 महिलाएं है।

साक्षरता दर

छत्तीसगढ़ राज्य की विशेष पिछड़ी जनजाति में कुल साक्षरता दर निम्नांकित पायी गई–

तालिका क्र. 19

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे साक्षरता दर

क्र.	साक्षरता दर					
	पुरूष		स्त्री		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	771	53.36	630	42.71	1401	47.98
0–6 वर्ष उम्र समूह को छोड़कर कुल जनसंख्या – 2920 (पुरूष 1445, महिला 1475)						

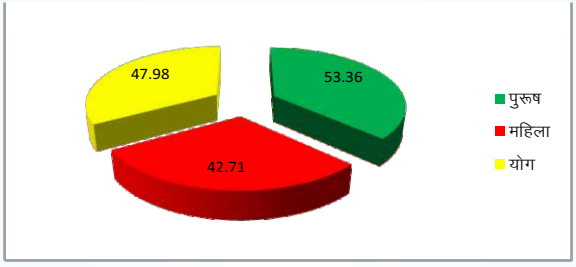

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल जनसंख्या 3490 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 1726 एवं स्त्री जनसंख्या 1764 है। उक्त जनसंख्या में से 0–6 वर्ष उम्र समूह की जनसंख्या (कुल 570, पुरूष 281 एवं 289) को साक्षरता दर ज्ञात करने हेतु कुल जनसंख्या 2920 (पुरूष 1445, एवं महिला 1475) शेष बचती है। अर्थात साक्षरता ज्ञात करने हेतु 0–6 वर्ष की आयु की जनसंख्या को हम साक्षर अथवा निरक्षर दोनों ही वर्गों में शामिल नही कर सकते है।

अतः उपरोक्तानुसार तालिका अनुसार राज्य की बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल साक्षरता दर 47.98 प्रतिशत है जिसमें पुरूष साक्षरता दर 53.36 प्रतिशत एवं स्त्री साक्षरता दर 42.71 प्रतिशत है।

जनगणना 2011 अनुसार छत्तीसगढ़ राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति साक्षरता दर 50.03 की तुलना में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की उक्त कुल साक्षरता दर कम होना पाया गया।

शालागामी उम्र–समूह में साक्षरता

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में शालागामी उम्र समूह 7–14 वर्ष की साक्षरता दर का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 20

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर
मे शालागामी उम्र 7–14 में साक्षरता

क्र.	शालागामी उम्र 7–14 में साक्षरता					
	पुरूष		स्त्री		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	276	92.31	278	86.34	554	89.21

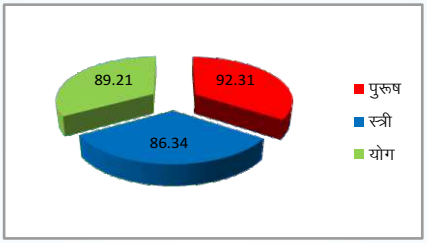

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति मे 7–14 वर्ष उम्र समूह की तालिका क्रमांक 09 अनुसार कुल जनसंख्या 621 है जिसमे पुरूष जनसंख्या 299 एवं स्त्री जनसंख्या 322 है। तद्नुसार उपरोक्त तालिका के अनुसार बिरहोर जनजाति के 7–14 वर्ष उम्र समूह मे कुल साक्षरता 89.21 प्रतिशत है जिसमें बालक साक्षरता 92.31 प्रतिशत तथा स्त्री साक्षरता 86.34 प्रतिशत है।

7–14 वर्ष उम्र समूह की अधिक साक्षरता सर्व शिक्षा अभियान के तहत शत्प्रतिशत शाला मे नामांकन, शासन की शिक्षा संबंधी अन्य योजनाओं आदि का प्रभाव दिखाई देता है।

आंगनबाड़ी में अध्ययनरत बच्चों का विवरण

सामान्यतः आंगनबाड़ी की स्थापना गर्भवती स्त्रियों, धात्री माताओं, शिशुओं के पोषण, प्राथमिक स्वास्थ्य एवं 03–06 वर्ष के आयु के बालक–बालिकाओं को औपचारिक शिक्षा के साथ–साथ पोषण आहार दिये जाने के लिये की गई है। बिरहोर जनजाति मे औपचारिक शिक्षा हेतु 03–06 वर्ष उम्र समूह के बालक–बालिकाएं जो आंगनबाड़ी जाते है, उनकी जानकारी निम्नांकित है –

तालिका क्र. 21

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे आंगनबाड़ी में अध्ययनरत बालक–बालिका

क्र.	आंगनबाड़ी में अध्ययनरत बालक–बालिका					
	बालक		बालिका		योग	
	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	107	61.14	118	65.19	225	63.20

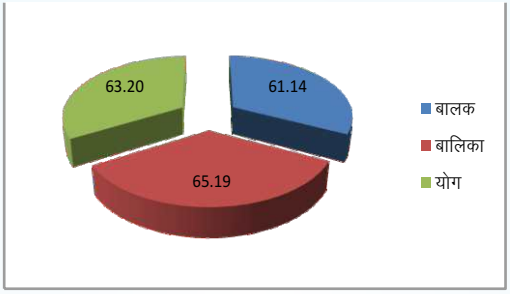

बिरहोर जनजाति में 3–6 वर्ष उम्र समूह की कुल जनसंख्या 356 है जिसमें बालकों की जनसंख्या 175 एवं बालिकाओं की जनसंख्या 181 है। उक्त उम्र समूह मे 63.20 प्रतिशत बालक–बालिकाएं औपचारिक शिक्षा हेतु आंगनबाड़ी जाते है। जिसमे 61.14 प्रतिशत बालक एवं 65.19 प्रतिशत बालिका है।

==0==

अध्याय 06
सामाजिक – आर्थिक स्थिति

आदिम समाज हो या ग्रामीण समाज या शहरी हो उसे समाज मे अपना अस्तित्व बनाये रखने आवास, भोजन एवं वस्त्र जैसी आधारभूत आवश्यकता होती है। इन सभी आवश्यकताओं को पूर्ण करने उसे कुछ न कुछ उपलब्ध संसाधनों से आर्थिक क्रिया–कलाप में भी सहभागिता देनी होती है।

जनजाति विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियां दूर–दराज के क्षेत्रों सघन वनो एवं पहाड़ियों में निवास करती है अतः इनके आवास उपलब्ध संसाधनों से निर्मित होते है वही रोजगार के अवसर भी अपर्याप्त होने व प्रकृति (वनों) से निकट संबंध होने के कारण इनकी अर्थव्यवस्था वनो के इर्द–गिर्द ही अधिक रहती है।

शासन द्वारा विभिन्न संचालित कल्याणकारी योजनाओं के कारण मजदूरी आदि के रूप में इन्हें रोजगार के अवसर भी प्राप्त हो रहे है, वही इन्दिरा आवास योजना आदि के माध्यम से स्थायी आवास भी उपलब्ध हुये है, पूर्व में विशेष पिछड़ी जनजातियां झूम अथवा स्थानांतरित कृषि पर निर्वाह करते थे तो उनकी बसाहट भी स्थायी प्रकृति की होती थी।

उक्त अध्याय में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के आवास एवं आर्थिक क्रिया कलापों का वर्णन किया गया है।

1. स्वयं के आधिपत्य के आवास

किसी भी परिवार को अपने जीवन एवं आर्थिक क्रियाकलापों एवं परिवार संचालन के लिये आवास की महत्वपूर्ण आवश्यकता होती है, बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में आवास स्वामित्व की जानकारी निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 22

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे स्वयं के आवास की स्थिति

क्र.	आवास स्वामित्व विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	स्वयं का	1046	93.73
2	स्वयं का नही	70	6.27
योग		**1116**	**100.00**

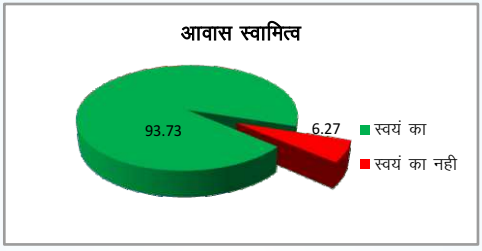

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों में से 93.73 प्रतिशत (N=1046) परिवारों के पास स्वयं के आवास है वही शेष 6.27 प्रतिशत (N=70) परिवार के आवास स्वयं के नही होना बताया गया। ऐसे परिवार किन्ही कारणों से अस्थायी रूप से सगे–संबंधियों के आवास में रह रहे है।

2. आवास में कक्षो की संख्या

प्रायः जनजातीय क्षेत्रों मे इनके आवास में सीमित कक्ष आवश्यकतानुसार बनाये जाते है तथा आवास के सामने की खाली जगह (आंगन) का उपयोग बहुतायत से अन्य कार्यों हेतु किया जाता है, इनके आवासों में एक परछी व 1 या 2 अन्य कमरे प्रायः निर्मित किये जाते है। रसोई सामान्यतः परछी में ही होती है, अंदर के कक्ष में देव–डूमा कक्ष व अनाज भण्डार कोठी आदि रखी होती है।

बिरहोर जनजाति के आवासों मे कक्षों की उपलब्धता निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 23

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर के आवास मे कक्षो की स्थिति

क्र.	कक्ष संख्या	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	01 कक्ष	691	61.92
2	02–03 कक्ष	265	23.74
कुल परिवार – 1116			

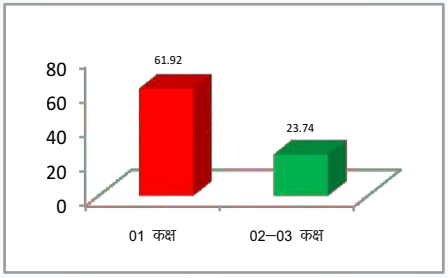

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति मे आवासों मे कक्षों की संख्या परिवार के सदस्यों एवं आर्थिक स्थिति के आधार पर निर्मित किये जाते है। बिरहोर जनजाति के अधिकांश 61.92 प्रतिशत (N=691) परिवारों के आवास एकल कक्षीय पाये गये जबकि 23.74 प्रतिशत (N=265) परिवारों के आवास में 2–3 कक्ष पाये गये।

3. आवासीय योजना से लाभान्वयन –

शासन द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों के साथ–साथ आदिवासी क्षेत्रों के लिये भी पंचायत के माध्यम से हितग्राही परिवारों को विभिन्न आवासीय योजना के माध्यम से आवास उपलब्ध कराये गये है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में योजनाओं के माध्यम से प्राप्त आवासों का विवरण निम्नानुसार है जिस पर उनका स्वामित्व है –

तालिका क्र. 24

आवासीय योजना से लाभान्वयन की स्थिति

क्र.	विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	स्वयं का	619	59.18
2	योजना (इंदिरा आवास)	427	40.82
योग		**1046**	**100.00**

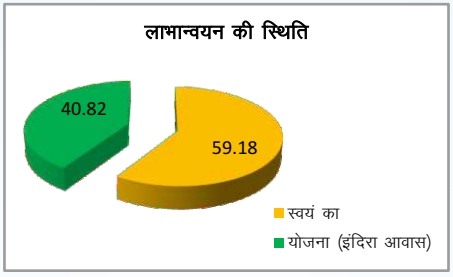

4. आवास आबंटन वर्ष –

शासन द्वारा पंचायतों के माध्यम से विभिन्न वर्षो में आवास योजना के तहत आवास स्वीकृत किये गये है, बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में भी भिन्न–भिन्न वर्षों मे आवास स्वीकृत किये गये है वही अनेक परिवार योजना के ऐसे आवासों में निवासरत है जो उनके पिता आदि को 15–20 वर्षों पूर्व आबंटित हुये थे। बिरहोर जनजाति के योजनांतर्गत प्राप्त आवासों की अवधि का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 25

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में आवास आबंटन वर्ष

क्र.	प्रदत्त आवास की अवधि	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	5 वर्ष से कम	32	7.49
2	5–10 वर्ष	121	28.34
3	10–15 वर्ष	173	40.52
3	15–20 वर्ष	42	9.84
3	20 वर्ष से अधिक	59	13.82
योग		**427**	**100.00**

उपरोक्त तालिका अनुसार योजनान्तर्गत आवास प्राप्त बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजातियों के हितग्राही परिवारों में से 13.82 प्रतिशत परिवारों के आवास आबंटन 20 वर्ष पूर्व के, 9.84 प्रतिशत परिवारों के आवास 15.20 वर्ष पूर्व, 40.51 प्रतिशत परिवारों को 10–15 वर्ष पूर्व, 28–34 प्रतिशत परिवारों को 5–10 वर्ष पूर्व एवं शेष 7.49 प्रतिशत परिवारों के आवास 5 वर्ष की अवधि में प्राप्त हुये है।

5. आवास प्रकार –

आवास प्रायः कच्चे, पक्के, अर्द्ध पक्के प्रकार में वर्गीकृत किये जाते है, जनजातीय क्षेत्रों में आवास स्थानीय स्त्रोत से प्राप्त संसाधनो यथा मिट्टी, ईट, लकड़ी, बांस, घास–फूस की छत आदि से आवश्यकतानुसार निर्मित किये जाते है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के आवास का विवरण निम्नानुसार है –

दीवाल का प्रकार –

बिरहोर जनजाति के आवास मे दीवाल का प्रकार निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 26

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर आवास में दीवार का प्रकार

क्र.	दीवार का प्रकार	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	मिट्टी	646	57.89
2	मिट्टी एवं लकड़ी	102	9.14
3	मिट्टी एवं बांस	19	1.70
4	अर्द्ध पक्का	220	19.71
कुल परिवार – 1116			

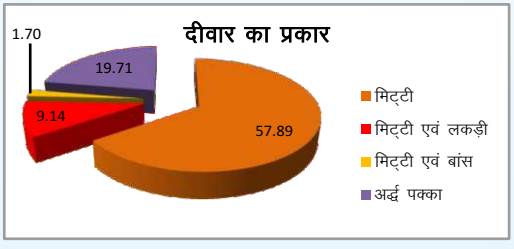

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के सर्वाधिक 67.89 प्रतिशत (N=646) परिवारों के आवास की दीवालें मिट्टी की, 10.84 प्रतिशत (N=121) परिवारों के आवास की दीवाले मिट्टी लकड़ी अथवा मिट्टी बांस की निर्मित है। वहीं 19.71 प्रतिशत आवासों की दीवारें अर्द्धपक्के प्रकृति की बनी है।

छत का प्रकार –

बिरहोर जनजाति के आवास मे छतों का प्रकार निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 27

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर आवास में छत का प्रकार

क्र.	छत का प्रकार	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	घास–फूंस	196	17.56
2	खपरैल	785	70.34
3	एस्बेस्टस	57	5.11
कुल परिवार – 1116			

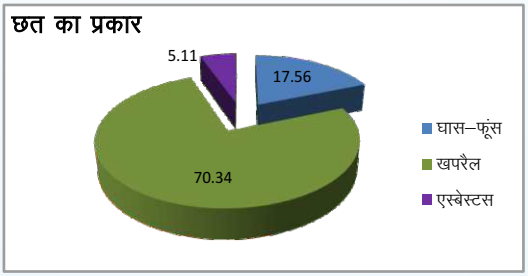

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के सर्वाधिक 70.34 प्रतिशत आवास की छत खपरैल की, 17.56 प्रतिशत आवासों की छत घास–फूस या खदर की, 5.11 प्रतिशत परिवारों के आवास की छत एस्बेस्ट्स की पायी गई।

फर्श का प्रकार –

बिरहोर जनजाति के आवास की फर्श (Floor) का प्रकार निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 28

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर आवास में फर्श का प्रकार

क्र.	फर्श का प्रकार	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	कच्चा (मिट्टी)	941	84.32
2	अर्द्ध पक्का (आंशिक)	37	3.32
कुल परिवार – 1116			

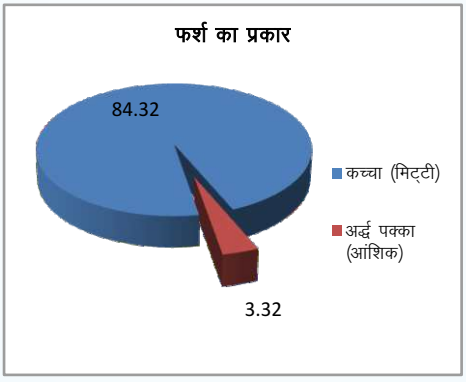

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 84.32 प्रतिशत परिवारों के आवास की फर्श मिट्टी की या कच्चे प्रकृति की है वही केवल 3.31 प्रतिशत परिवारों के आवास की फर्श अर्द्धपक्की या आंशिक रूप से पक्की (पत्थर स्लेब या सीमेंट फ्लोरिंग) पायी गई।

घर का निवास क्षेत्र –

बिरहोर जनजाति के आवास सामान्यतः अपेक्षाकृत छोटे होते है तथा उनके पास दैनिक आवश्यकताओं की सीमित वस्तुएं रखते है। घर की निवास क्षेत्र का विवरण निम्नानुसार है–

तालिका क्र. 29

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में
घर का निवास क्षेत्र

क्र.	निवास क्षेत्र (वर्ग फीट मे)	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	400 से कम	804	72.04
2	400 से 500	72	6.45
3	500 से अधिक	240	21.51
कुल परिवार – 1116			

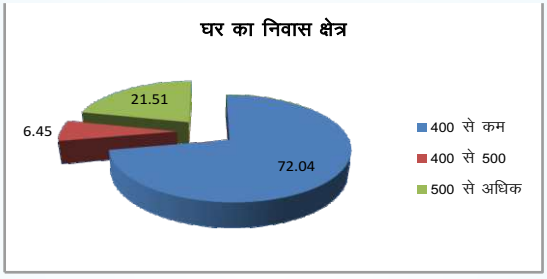

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 72.04 प्रतिशत (N=804) परिवारो के आवास का क्षेत्रफल 400 वर्गफूट से कम, 6.45 प्रतिशत (N=72) परिवारों के आवास का क्षेत्रफल 400–500 वर्गफूट तक पाया गया। शेष 21.51 प्रतिशत (N=240) बिरहोर परिवारों के आवास का क्षेत्रफल 500 वर्गफूट से अधिक का पाया गया।

6. कार्यशीलता –

जनजातीय समाजो की अर्थव्यवस्था सामान्यतः संग्रह की अर्थव्यवस्था न होकर जीविकोपार्जन की होती है, आदिवासी अर्थव्यवस्था में परिवार की उत्पादकता की ईकाई है जहां परिवार के समस्त सदस्य आपस में मिलकर यह ईकाई बनाते है, कार्य प्रकृति अनुसार आदिम जीवन में कार्यों को पारिवारिक या घरेलू कार्य एवं आर्थिक उपार्जन के कार्य के रूप में विभक्त किया जा सकता है।

आर्थिक कार्यो में व्यक्तियों की संलग्नता के आधार पर उसकी कार्यशीलता निर्धारित की जाती है किसी भी समाज मे अकार्यशील, कार्यशील एवं आंशिक कार्यशील सदस्य होते है।

कार्यशील एवं आंशिक कार्यशील व्यक्ति/सदस्य की परिवार की अर्थव्यवस्था के मुख्य वाहक माने गये है।

कार्यशील अथवा आंशिक कार्यशील सदस्यों की गणना प्रायः 14 वर्ष की आयु तक के बच्चे, वृद्ध सदस्य एवं निःशक्तजनों को छोड़कर शेष जनसंख्या पर की जाती है।

अतः उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल स्त्री–पुरूष जनसंख्या से कार्यशील जनसंख्या का वर्गीकरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 30

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे कार्यशील जनसंख्या का विवरण

क्र.	विवरण	कार्यशील जनसंख्या					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	कार्यशील जनसंख्या	1020	59.10	1013	57.43	2033	58.25

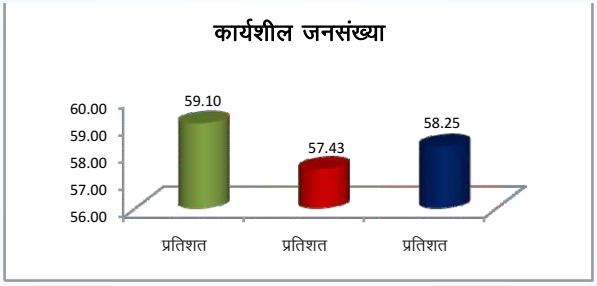

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल जनसंख्या 3490 (पुरूष 1726 एवं स्त्री 1764) में से 58.25 प्रतिशत (N=2033) जनसंख्या कार्यशील है जिसमें 59.10 प्रतिशत (N=1020) स्त्री जनसंख्या है जो सक्रिय रूप से परिवार के भरण–पोषण हेतु आर्थिक संसाधनों की उपलब्धता हेतु प्रयासरत होते है।

7. व्यवसायिक वर्गीकरण –

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परम्परागत अर्थोपार्जन के साधन मे परम्परागत कृषि, वनोपज संग्रहण, छोटे जीव–जन्तुओं का शिकार, मत्याखेट, बांस बर्तन सह रस्सी निर्माण के साथ–साथ मजदूरी अथवा कृषि मजदूरी का कार्य करते है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की आर्थिक संलग्नता को प्राथमिक अथवा मुख्य व्यवसाय एवं द्वितीयक अथवा गौण व्यवसाय में विभक्त किया गया है। जिससे प्राप्त आय से वे

अपनी आजीविका व परिवार का भरण–पोषण करते है। बिरहोर जनजाति मे प्राप्त आंकड़ों अनुसार प्राथमिक अथवा मुख्य व्यवसाय मे व्यक्तियों की संलग्नता का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 31

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवारों की प्राथमिक व्यवसाय में संलग्नता

क्र.	विवरण	संलग्न व्यक्ति					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	कृषि	386	37.84	73	7.21	459	22.58
2	वनोपज	8	0.78	51	5.03	59	2.90
3	मजदूरी	294	28.82	186	18.36	480	23.61
4	सेवा/नौकरी	8	0.78	1	0.10	9	0.44
5	अन्य (बांस बर्तन रस्सी निर्माण आदि)	203	19.90	156	15.40	359	17.66

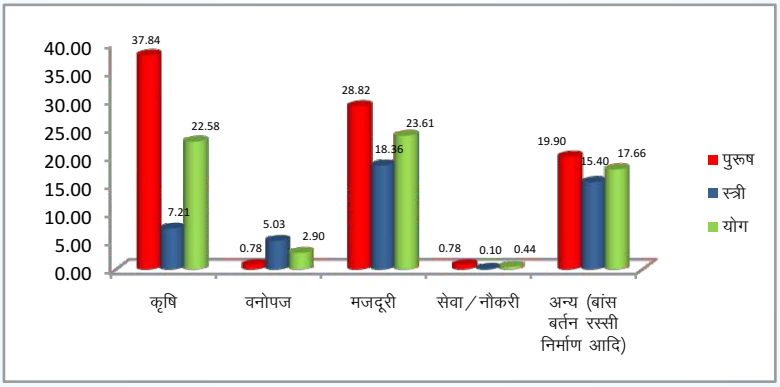

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल कार्यशील जनसंख्या में से सर्वाधिक 23.61 प्रतिशत व्यक्ति मजदूरी कार्य, 22.58 प्रतिशत व्यक्ति कृषि कार्य, 17.66 प्रतिशत व्यक्ति बांस बर्तन एवं रस्सी निर्माण, 2.90 प्रतिशत व्यक्ति वनोपज संग्रहण व 0.44 प्रतिशत व्यक्ति सेवा/नौकरी को अपना प्राथमिक (मुख्य) व्यवसाय होने की जानकारी दी।

इसी प्रकार बिरहोर जनजाति में द्वितीयक अथवा गौण व्यवसाय में संलग्नता का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 32

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर परिवारों की द्वितीयक व्यवसाय में संलग्नता

क्र.	विवरण	संलग्न व्यक्ति					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	कृषि	59	5.78	10	0.99	69	3.39
2	वनोपज	44	4.31	208	20.53	252	12.40
3	मजदूरी	326	31.96	111	10.96	437	21.50
4	सेवा/नौकरी	5	0.49	0	0.00	5	0.25
5	अन्य (बांस बर्तन रस्सी निर्माण आदि)	354	34.71	183	18.07	537	26.41

उपरोक्तानुसार सर्वाधिक 26.41 प्रतिशत कार्यशील व्यक्तियों द्वारा बांस बर्तन एवं मोहलाईन छाल से रस्सी निर्माण व अन्य कार्यो को द्वितीयक (गौण) व्यवसाय बताया। 21.50 को, 3.39 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा कृषि को एवं 0.25 प्रतिशत व्यक्तियों द्वारा नौकरी/सेवा कार्य को द्वितीयक अथवा गौण व्यवसाय के रूप में करना बताया गया।

8. रोजगार हेतु मानव दिवस की संख्या

जनजातियों में सामान्यतः उनकी सीमित आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति के प्रमुख साधन के रूप में परम्परागत आदिम तकनीक की कृषि, वनोपज संकलन, शिकार, मत्स्याखेट, कला–कौशल का ज्ञान रखने वाले बांस–बर्तन, झाड़ू, रस्सी आदि के निर्माण को प्राथमिकता देते है, किन्तु समय के साथ–साथ उनकी व परिवार की अन्य आर्थिक आवश्यकताओं में भी वृद्धि हो रही है, अतः उन्हे उपरोक्त आर्थिक उपार्जन के स्त्रोतो के अलावा मजदूरी/कृषि मजदूरी जैसे कार्य भी मिलते है जिससे उनकी अर्थव्यवस्था में वृद्धि होती है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के कार्यशील व्यक्तियों को प्राप्त रोजगार हेतु मानव दिवसों की संख्या का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 33

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे कार्यशील व्यक्तियों को प्राप्त रोजगार मानव दिवसो की संख्या का विवरण

क्र.	विवरण	रोजगार प्राप्त व्यक्ति					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	2 या 2 माह से अधिक का रोजगार	718	70.39	191	18.85	909	44.71

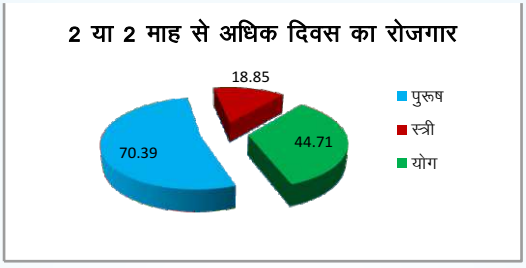

उपरोक्तानुसार स्पष्ट है कि, बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल कार्यशील जनसंख्या 2033 (पुरूष 1020, स्त्री 1013) में से 44.71 प्रतिशत (N=909) व्यक्तियों को 2 या 2 माह से अधिक का रोजगार प्राप्त हुआ, जिसमें अधिकांशतः 70.39 प्रतिशत पुरूष एवं 18.85 प्रतिशत महिलाएं संलग्न रही।

उपरोक्त रोजगार प्राप्त व्यक्तियों का मानव दिवस में प्राप्त रोजगार का वितरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 34

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे कार्यशील व्यक्तियों को प्राप्त रोजगार मानव दिवसो की संख्या का विवरण

क्र.	विवरण	रोजगार प्राप्त व्यक्ति					
		पुरूष		स्त्री		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	2–4 माह	299	41.64	124	64.92	423	46.53
2	4–6 माह	267	37.19	44	23.04	311	34.21
3	6 माह से अधिक	152	21.17	23	12.04	175	19.25
योग		**718**	**78.99**	**191**	**21.01**	**909**	**100.00**

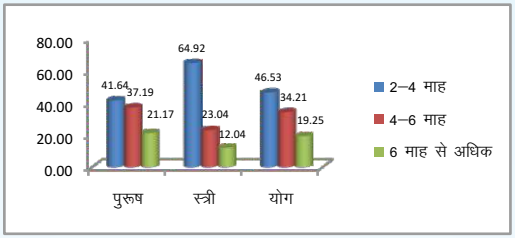

उपरोक्तानुसार 2 या 2 से अधिक माह का रोजगार प्राप्त करने वाले बिरहोर कार्यशील जनसंख्या 909 (पुरूष 718 एवं महिला 191) में से सर्वाधिक 46.53 प्रतिशत (N=423) व्यक्तियों को 2–4 माह के मानव दिवस का रोजगार प्राप्त हुआ जिसमें 41.64 प्रतिशत पुरूष एवं 64.92 प्रतिशत महिला है।

4–6 माह का रोजगार प्राप्त करने वाले व्यक्तियों की संख्या 34.21 प्रतिशत (N=311) है जिसमें 37.19 प्रतिशत पुरूष एवं 23.04 प्रतिशत स्त्री जनसंख्या की संलग्नता रही।

6 माह से अधिक का रोजगार प्राप्त करने वाले कार्यशील सदस्यों की संख्या 19.25 प्रतिशत (N=175) है जिसमें पुरूष संख्या 21.17 प्रतिशत एवं स्त्री संख्या 12.04 प्रतिशत है।

9. भूमि धारिता

जनजातियां विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियां अनेको वर्षों से अपने बसाहट क्षेत्रों के वनो में निवास कर रही है। कंदमूल, वनोपज, संकलन, परम्परागत व्यवसाय आदि के साथ–साथ कृषि कार्य भी करते है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में भूमि धारिता निम्नांकित है –

तालिका क्र. 35
बिरहोर जनजाति में स्वयं के आधिपत्य की भूमिधारिता

क्र.	विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	भूमिधारक (स्वयं के आधिपत्य एवं अतिक्रमित)	741	66.40
2	भूमिहीन	375	33.60
योग		**1116**	**100.00**

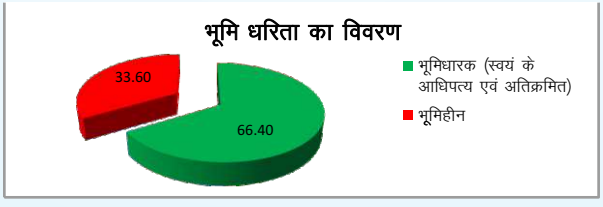

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 66.40 प्रतिशत परिवार भूमिधारक है, शेष 33.60 प्रतिशत परिवार भूमिहीन है।

भूमि का प्रकार

जनजातियों के कृषियुक्त रकबे से अपेक्षाकृत कम उत्पादन का मुख्य कारण उनकी कृषि की परम्परागत तकनीक, आधुनिक खाद–बीज का उपयोग न करना, पर्याप्त मानव संसाधन श्रम की अनुपलब्धता आदि के साथ–साथ कृषि भूमि का असिंचित होना या सिंचाई की सुविधा का न होना है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के भूमि धारक परिवारों मे उनकी कृषि भूमि का प्रकार निम्नांकित है–

तालिका क्र. 36
बिरहोर जनजाति में भूमि का प्रकार

क्र.	विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	सिंचित	582	78.54
2	असिंचित	159	21.46
योग		**741**	**100.00**

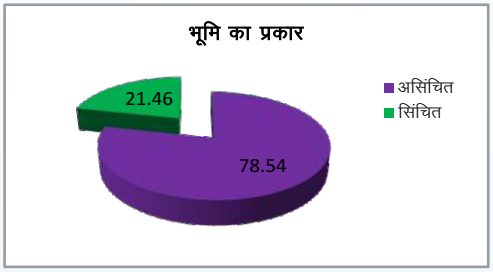

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के भूमि धारक 741 (66.40 प्रतिशत) परिवारों मे से सर्वाधिक 78.54 प्रतिशत परिवारों की कृषि भूमि असिंचित प्रकार की है। केवल 21.46 प्रतिशत परिवारों की भूमि ही सिंचित अथवा सिंचित प्रकार की है।

स्वयं के आधिपत्य की भूमि का रकबा

बिरहोर जनजाति में स्वयं के आधिपत्य की कृषि भूमि का भूमिधारक परिवारें मे उपलब्ध रकबे का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 37

स्वयं के आधिपत्य की भूमि का विवरण

क्र.	स्वयं के आधिपत्य की भूमि का विवरण	रकबा (एकड़)	स्वयं के आधिपत्य वाले भूमिधारक परिवार संख्या	प्रति परिवार औसत भूमिधारिता (एकड़)
1	असिंचित	802.68	276	65.87
2	सिंचित	539.16	143	34.13
योग		**1341.84**	**419**	**100.00**

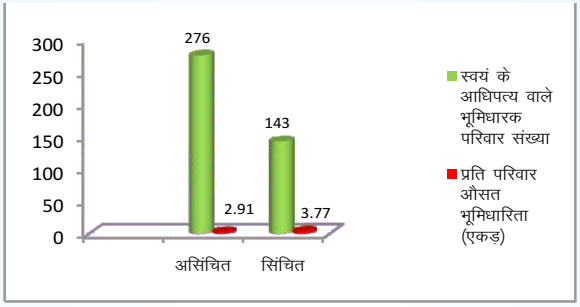

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति में स्वयं के आधिपत्य वाले भूमि धारकों के परिवारों की संख्या 419 है, जिसमें से 276 परिवारों के पास कुल 802.68 एकड़ की असिंचित कृषि भूमि है जो प्रति परिवार औसतन 2.91 एकड़ है।

स्वयं के आधिपत्य वाले शेष 143 भूमिधारक बिरहोर परिवारों में कुल 539.16 एकड़ की सिंचित कृषि भूमि है, जो प्रति परिवार औसतन 3.77 एकड़ है।

समग्र रूप से स्वयं के आधिपत्य वाले बिरहोर भूमिधारक परिवारों (N=419) में सिंचित एवं असिंचित दोनो ही प्रकार की कुल कृषि भूमि का रकबा 1341.84 एकड़ है जो इन भूमि धारक परिवारों में औसतन प्रति परिवार 3.20 है।

डहिया या पेंदा कृषि पर निर्भरता

विशेष पिछड़ी जनजातियां पूर्व में झूम कृषि अथवा स्थानांतरित कृषि पर ही पूर्णतया निर्भर थी, भारत सरकार द्वारा भी अनुसूचित जनजातियों को विशिष्ट मापदण्डों के आधार पर विशेष पिछड़ी जनजातियां (PVTGs) घोषित करते समय स्थानांतरित कृषि को भी मापदण्ड के रूप मे रखा गया है।

पूर्ववर्ती शासकीय प्रयासों से विशेष पिछड़ी जनजातियां स्थायी कृषि की ओर अग्रसर हुई है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति पूर्व में ''पेंदा'' कृषि करती थी। वर्तमान मे दूरस्थ पहाड़ी एवं सघन वन क्षेत्रों में यदा–कदा बिरहोर लोग डहिया या पेंदा कृषि आंशित रूप से करते है। जिनका विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 38

डहिया या पेंदा कृषि पर निर्भरता

क्र.	विवरण	परिवार					
		हां		नही		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	डहिया कृषि में संलग्नता	114	10.22	1002	89.78	1116	100.00

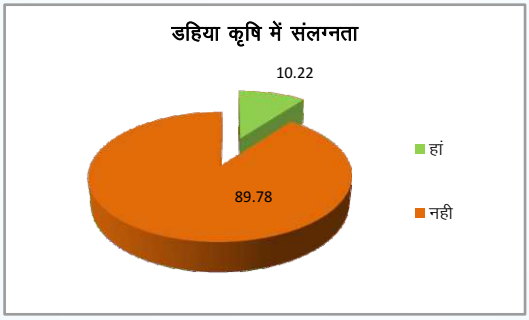

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति के परिवारों में से वर्तमान में केवल 10.22 प्रतिशत परिवार ही कभी–कभी आंशिक रूप से पेंदा या डहिया कृषि कर रहे है शेष 89.78 प्रतिशत परिवार कृषि कार्य नही करते है।

अधिया अंतर्गत भूमि विवरण

सामान्यतः ऐसे परिवार जो कम रकबे के भूमिधारक है, अथवा भूमिहीन है एवं कृषि कार्य करने में समक्ष है उनके द्वारा किसी अन्य की कृषि भूमि आपसी संवाद के माध्यम से प्राप्त कर उसमें कृषि उपजों का उत्पादन करता है तथा आपसी संवाद मे लिये गये निर्णयानुसार उक्त भूमि पर उपज की उत्पादन मात्रा का आधा या कुछ हिस्सा भूमि स्वामी को दिया जाता है जिसे अधिया पद्धति कहा जाता है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में अधिया भूमि लिये गये परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 39
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में
अधिया ली गई भूमि का विवरण

क्र.	विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	हां	7	0.63
2	नही	1109	99.37
योग		**1116**	**100.00**

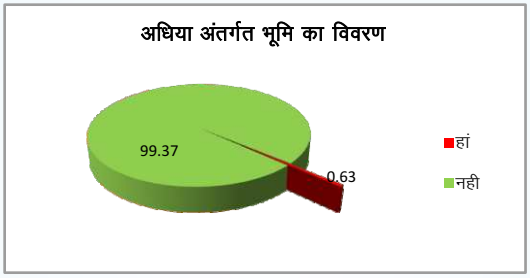

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति कुल परिवारों में से केवल 0.63 प्रतिशत (N=07) परिवारों द्वारा ही कृषि करने हेतु दूसरे की भूमि अधिया अंतर्गत ली है।

बंधक रखी गयी भूमि का विवरण

सामान्यतः सीमांत या लघु कृषकों द्वारा अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु ऋण के रूप में अपनी भूमि को अन्य व्यक्तियों जो उनका पारिवारिक सदस्य या अन्य वर्ग को स्थानांतरित कर देता है।

नियमानुसार भू–राजस्व अधिनियम अनुसार किसी जनजाति समुदाय के व्यक्ति की भूमि गैर जनजाति के व्यक्ति के द्वारा हस्तांतरण को वैधता नही दी गई है। उक्त अधिनियम मे जनजातियों की भूमि के संरक्षण के संबंध में उपाय उपबंधित किये गये है। फिर भी जनजातीय क्षेत्रों में ऐसे प्रकरण यदा–कदा देखने को मिल जाते है, हांलाकि अधिकांश हस्तांतरण संबंधी प्रकरण स्वजातीय भी देखने को मिलते है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति मे बंधक रखे गये भूमि धारक परिवारो का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 40
बिरहोर जनजाति में बंधक रखे गये
भूमिधारक परिवारों का विवरण

क्र.	विवरण	परिवार		परिवार		परिवार	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1	बंधक रखी भूमि वाले परिवार	4	0.95	415	99.05	419	100.00

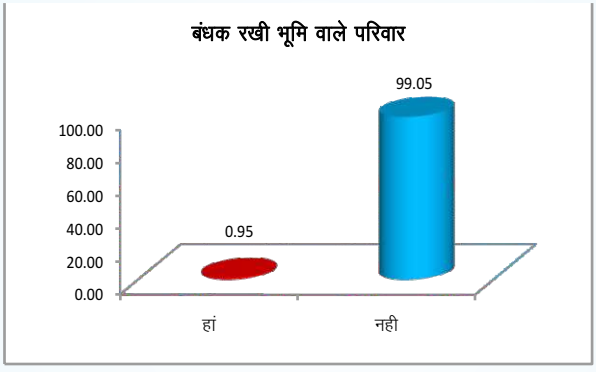

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के स्वयं के आधिपत्य वाले भूमिधारक परिवारों (N=419) में से 0.95 प्रतिशत (N=04) परिवारों द्वारा ही अपनी कृषि भूमि अन्य के पास बंधक अथवा हस्तांतरित की गई है।

पशुधन

जनजातियों में भी सामान्यतः पशुओं को सम्पत्ति माना जाता है। बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में भी पशुओं का उनकी सामाजिक–आर्थिकी में महत्वपूर्ण स्थान रहा है। इन पशुधन का उपयोग समय–समय पर विक्रय कर अर्थोपार्जन करने, कृषि कार्यों में, धार्मिक अनुष्ठानों में पुजेई एवं अतिथि सत्कार में भोज आदि हेतु किया जाता है।

बिरहोर जनजाति में पालतू पशुओं का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 41
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर जनजाति में पशुपालन में संलग्नता

क्र.	पशुधन का प्रकार	संलग्न परिवार		पशुओं की संख्या	प्रति परिवार पशुओं की औसत संख्या
		संख्या	प्रतिशत		
1	गाय	46	4.12	85	1.85
2	बैल	133	11.92	254	1.91
3	भैस/भैंसा	21	1.88	25	1.19
4	बकरा/बकरी–भेड़	238	21.33	646	2.71
6	मुर्गा/मुर्गी	253	22.67	787	3.11
कुल सर्वेक्षित परिवार – 1116					

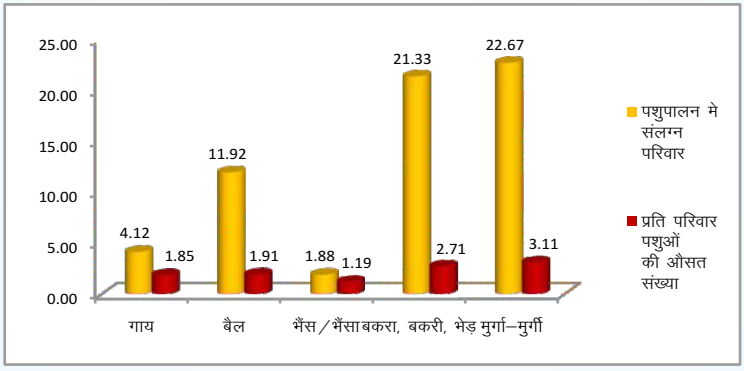

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के सर्वाधिक 22.67 प्रतिशत (N=253) परिवारों द्वारा मुर्गा–मुर्गी का पालन किया गया, 21.33 प्रतिशत (N=238) परिवार बकरा–बकरी के पालन में संलग्न है। 11.92 प्रतिशत (N=13) परिवारों द्वारा बैल, 4.12 प्रतिशत (N=46) परिवारों द्वारा गाय का पालन किया गया वही केवल 1.88 प्रतिशत (N=21) परिवारों में भैंस/भैसा है।

पशुपालन में संलग्न परिवारों में प्रति परिवार औसतन 3 मुर्गा–मुर्गी, लगभग 03 बकरा–बकरी, लगभग 02–02 गाय एवं बैल है।

वृक्षो पर स्वामित्व

जनजातीय जीवनशैली में वृक्षों का महत्वपूर्ण स्थान है, वृक्ष इन्हें प्राकृतिक वातावरण प्रदान करते है साथ ही वृक्ष इनके सामाजिक धार्मिक एवं आर्थिक जीवन का आधार होते है।

वृक्षों से इनके जीवन की अधिकांश आवश्यकताएं पूर्ण हो जाती है आवास निर्माण हेतु इमारती वृक्ष जैसे **साल (सरई), आम** प्रमुख है, **फलदार वृक्षों में महुआ, कोसम, ईमली, कटहल, हर्रा, बेहड़ा, मुनगा, आंवला** आदि मुख्य है, वहीं **गोंद (लासा), परसा (पत्तल, दोना बनाने में उपयोगी)** आदि भी इनके सामाजिक जीवनोपयोगी वृक्ष है। **महुआ, साल, ईमली आदि वृक्ष के फल/बीज** आर्थिक जीवन के संचालन में भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

बिरहोर जनजाति में स्वयं के आधिपत्य के वृक्षों का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 42
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में
वृक्षों पर स्वामित्व

क्र.	पशुधन का प्रकार	परिवारों का आधिपत्य		कुल वृक्षों की संख्या	प्रति परिवार औसतन वृक्ष
		संख्या	प्रतिशत		
1	साल/सरई	154	13.80	1988	12.91
2	आम	114	10.22	253	2.22
3	महुआ	477	42.74	3106	6.51
4	कोसम	43	3.85	153	3.56
5	ईमली	17	1.52	29	1.71
6	सल्फी	0	0.00	0	0.00
7	अन्य	1033	92.56	2366	2.29
कुल सर्वेक्षित परिवार – 1116					

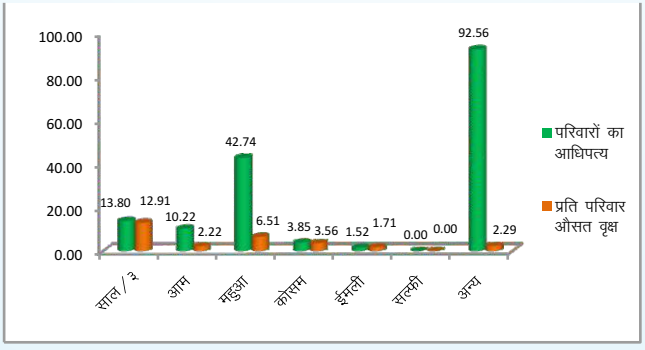

उपरोक्तानुसार स्वयं के आधिपत्य के वृक्षों वाले परिवारों में 13.80 प्रतिशत (N=46) परिवारों में प्रति परिवार औसतन 12.91 प्रतिशत साल–सरई के वृक्षों पर आधिपत्य है, 42.74 प्रतिशत (N=477) परिवारों मे प्रति परिवार महुआ वृक्षों की संख्या औसतन 6.51 है। 10.21 प्रतिशत (N=114) परिवारों में आम के वृक्षों का आधिपत्य पाया गया जो प्रति परिवार औसतन 2.22 है। 3.85 प्रतिशत (N=43) परिवारों का कोसम वृक्ष पर आधिपत्य है, ईमली के वृक्षों पर आधिपत्य वाले परिवारों की संख्या 1.52 प्रतिशत (N=17) है, जो प्रति परिवार औसतन वृक्ष 1.71 है।

अन्य प्रकार के वृक्षों जैसे सामान्य उपयोग के गोंद, परसा, मुनगा, आंवला आदि पर आधिपत्य वाले परिवारों की संख्या 92.56 प्रतिशत (N=1033) है जो औसतन 2.29 है।

10. आय के स्रोत

सामान्यतः जनजातियों की अर्थव्यवस्था एवं आय के मिश्रित स्त्रोत होते है, किन्तु वन आधारित जीवन होने के कारण इनकी आय के प्रमुख स्त्रोतो में वनो की भागीदारी प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप दोनो प्रकार से होती है। जनजातियां उन्नत कृषि बहुतायत से नही करते और न अधिक शिक्षित होने के कारण व्यवसाय या सेवा में अपेक्षाकृत कम प्रतिनिधित्व होता है। अतः सीमित कृषि, वनोपज मजदूरी, पशुपालन आदि का सम्मिलन से आदिवासी अर्थव्यवस्था का संचालन होता है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में आय के स्त्रोत निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 43
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में आय के विभिन्न स्रोत

क्र.	आय के स्त्रोत	संलग्न परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	स्थायी/स्थानां. कृषि	638	57.17
2	सेवा	67	6.00
3	शिकार/मत्स्य पालन	49	4.39
4	उद्यानिकी	80	7.17
5	पशुपालन	107	9.59
6	वृक्ष से उत्पादन (स्वयं के)	382	34.23
7	वनोपज संकलन	935	83.78
8	गृहउद्योग (रस्सी, बांस)	251	22.49

9	स्थायी सम्पत्ति का विक्रय	16	1.43
10	उपहार एवं विनमिय	41	3.67
11	मजदूरी	894	80.11
12	व्यवसाय/वाणिज्य	516	46.24
13	अन्य	379	33.96
कुल बिरहोर परिवार – 1116			

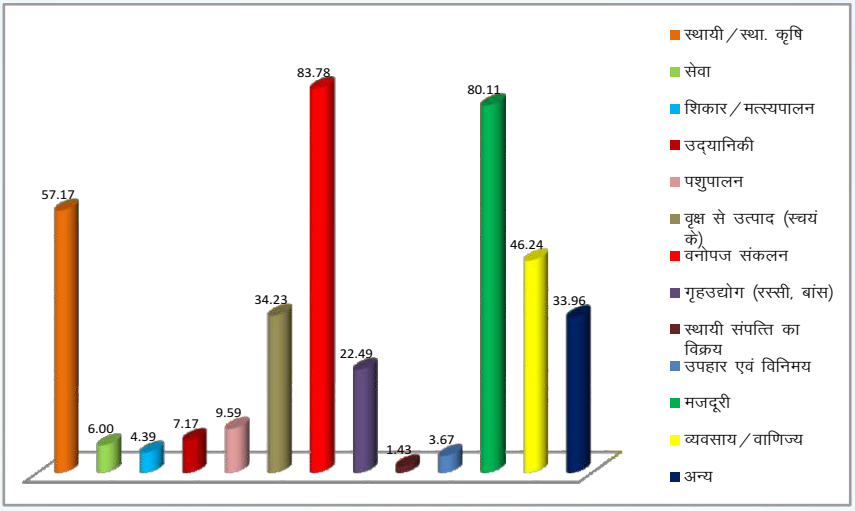

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के सर्वाधिक 83.78 प्रतिशत (N=935) परिवारों की आय का मुख्य स्त्रोत वनोपज, 57.17 प्रतिशत (N=638) परिवारों की आय का मुख्य स्त्रोत कृषि, 34.23 प्रतिशत (N=382) परिवारों की आय वृक्ष से उत्पादन (स्वयं), गृहउद्योग परम्परागत व्यवसाय से 22.49 प्रतिशत (N=251) परिवारों, 46.24 प्रतिशत (N=516) परिवारों को व्यवसाय/वाणिज्य, 9.59 प्रतिशत (N=107) परिवारों को पशुपालन से, 7.17 प्रतिशत (N=80) परिवारों को उद्यानिकी, 6.0 प्रतिशत (N=67) परिवारों को सेवा, 4.39 प्रतिशत (N=49) परिवारों को शिकार/मत्स्यपालन, 3.67 प्रतिशत (N=41) परिवारो को उपहार एवं विनिमय से, 1.43 प्रतिशत (N=16) परिवारो को स्थायी सम्पत्ति का विक्रय से आय प्राप्त हुई है।

बिरहोर जनजाति के सर्वाधिक 80.11 प्रतिशत (N=894) परिवारों को मजदूरी (शासकीय एवं कृषि मजदूरी) से आय प्राप्त हुई। वही 33.96 प्रतिशत (N=379) परिवार उपरोक्त मदो के अलावा अन्य स्त्रोतों से भी आय प्राप्त की है।

कुल वार्षिक आय

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों को उपरोक्त दर्शित आय के स्त्रोतों से प्राप्त आय का विवरण एवं प्रति परिवार औसत वार्षिक आय का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 44
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में विभिन्न मदों में
कुल वार्षिक आय का विवरण

क्र.	आय के स्त्रोत	संलग्न परिवार संख्या	वार्षिक कुल आय	प्रति परिवार औसत वार्षिक आय
1	स्थायी/स्थानां. कृषि	638	1826577	2862.97
2	सेवा	67	3110700	46428.36
3	शिकार/मत्स्य पालन	49	509300	10393.88
4	उद्यानिकी	80	165200	2065.00
5	पशुपालन	107	426450	3985.51
6	वृक्ष से उत्पादन (स्वयं के)	382	1343700	3517.54
7	वनोपज संकलन	935	3023295	3233.47
8	गृहउद्योग (रस्सी, बांस)	251	1715720	6835.54
9	स्थायी सम्पत्ति का विक्रय	16	559640	34977.50
10	उपहार एवं विनमिय	41	70700	1724.39
11	मजदूरी	894	16354840	18294.00
12	व्यवसाय/वाणिज्य	516	6129030	11877.97
13	अन्य	379	2231100	5886.81
कुल बिरहोर परिवार – 1116			**37466252**	**33571.91**

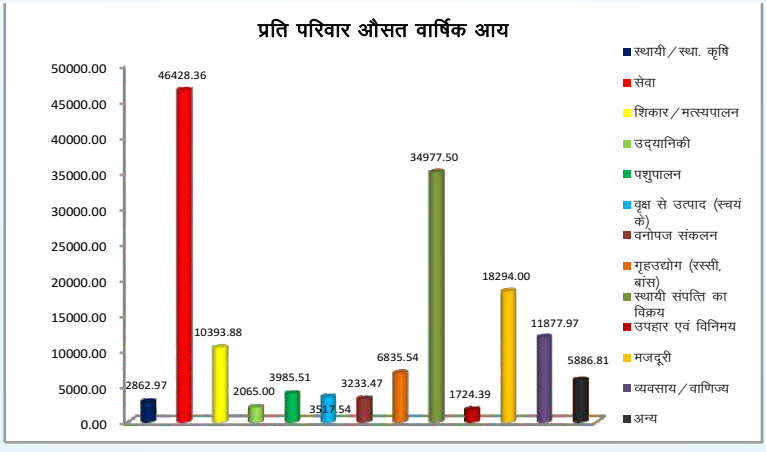

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के कुल 1116 परिवारों को विभिन्न मदों से कुल 3,74,66,252 रुपये की वार्षिक आय प्राप्त हुई जो बिरहोर जनजाति में प्रति परिवार औसतन वार्षिक आय 33571.91 रुपये है।

वार्षिक आय मे मदो की सहभागिता

सामान्यतः जनजातीय समाजों में आय प्राप्ति के मिश्रित स्त्रोत होते है जैसे कृषिकाल मे कृषि उपज हेतु कार्य करना, वनोपज काल मे वनोपज संकलन का कार्य करना, मजदूरी कार्य इत्यादि मिलने पर मजदूरी में जाना, शेष समय या वर्ष भर कच्चा सामग्री की उपलब्धता के आधार पर परम्परागत व्यवसाय का कार्य करना आदि है।

बिरहोर जनजाति में भी इसी प्रकार की अर्थव्यवस्था है अतः बिरहोर जनजाति की व समस्त मदों से प्राप्त वार्षिक आय मे विभिन्न मदों के योगदान अथवा सहभागिता का विवरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 45
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में कुल वार्षिक आय में मदों की सहभागिता

क्र.	आय के स्त्रोत	वार्षिक कुल आय	कुल वार्षिक आय मे मदो की सहभागिता का प्रतिशत
1	स्थायी/स्थानां. कृषि	1826577	4.88
2	सेवा	3110700	8.30
3	शिकार/मत्स्य पालन	509300	1.36
4	उद्यानिकी	165200	0.44
5	पशुपालन	426450	1.14
6	वृक्ष से उत्पादन (स्वयं के)	1343700	3.59
7	वनोपज संकलन	3023295	8.07
8	गृहउद्योग (रस्सी, बांस)	1715720	4.58
9	स्थायी सम्पत्ति का विक्रय	559640	1.49
10	उपहार एवं विनमिय	70700	0.19
11	मजदूरी	16354840	43.65
12	व्यवसाय/वाणिज्य	6129030	16.36
13	अन्य	2231100	5.95
कुल बिरहोर परिवार – 1116		**37466252**	**100.00**

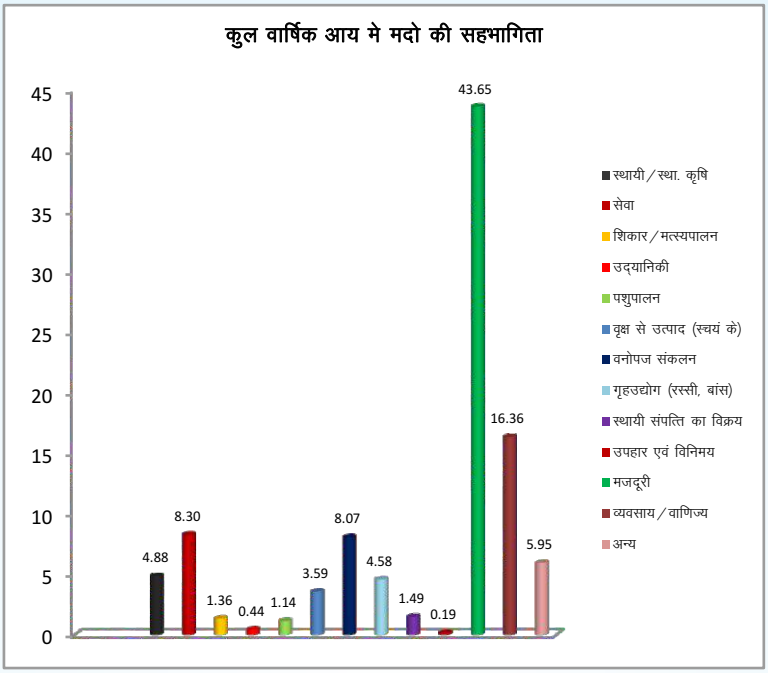

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के आय के परम्परागत स्त्रोतों जैसे स्थायी अथवा पेदा कृषि, शिकार–मत्स्यपालन, पशुपालन, स्वयं के वृक्ष से उत्पादन, वनोपज, संकलन, गृह उद्योग अन्तर्गत मोहलाईन छाल से रस्सी निर्माण एवं बांस–बर्तन निर्माण से कुल वार्षिक आय में इन पारंपरिक मदो की सहभागिता लगभग 23.62 प्रतिशत रही है।

कुल वार्षिक आय में एक बड़ा भाग बिरहोर जनजाति में मजदूरी (शासकीय अथवा निजि) का है। जो कुल वार्षिक आय में 43.25 प्रतिशत सहभागिता रखता है। व्यवसाय–वाणिज्य से प्राप्त आय की सहभागिता 16.36 प्रतिशत है। वही अन्य प्रकार के स्त्रोतों से प्राप्त आय की सहभागिता 5.95 प्रतिशत है।

वार्षिक आय का वितरण –

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर द्वारा आय के समस्त स्त्रोतों से प्राप्त कुल वार्षिक आय का परिवारों में वितरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 46
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में कुल वार्षिक आय का वितरण

क्र.	वार्षिक आय की श्रेणी (रुपये)	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	10000 से कम	69	6.18
2.	10000–20000	233	20.88
3.	20000–30000	286	25.63
4.	30000 से अधिक	5.17	46.33

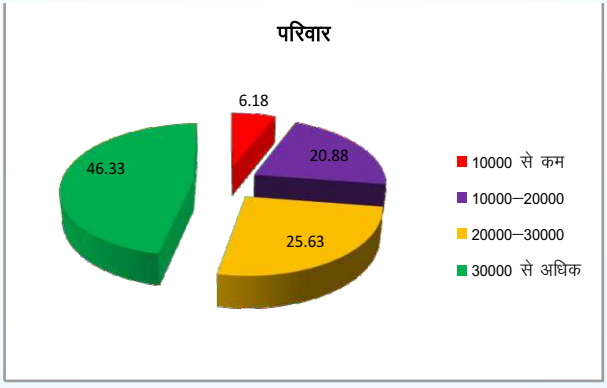

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति के परिवारो में से सर्वाधिक 46.33 प्रतिशत परिवारों की समस्त स्त्रोतों से कुल वार्षिक आय 30000 रूपये से अधिक की पायी गई। लगभग एक चौथाई 25.63 प्रतिशत परिवारों की कुल वार्षिक आय 20000–30000 रुपये की पायी गई, लगभग इतने ही 27.06 प्रतिशत परिवारों की समस्त स्त्रोतों से कुल वार्षिक आय 20000 रुपये से कम पायी गई।

वार्षिक व्यय मद

कोई भी समुदाय अपने परिवार के सदस्यो के भरण – पोषण एवं जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु विभिन्न मदों में व्यय करता है। सामान्यतः जनजातीय परिवारों मे कुल वार्षिक व्यय का अधिकतम भाग भोजन संबंधी आवश्कताओं पर व्यय किया जाता है। बिरहोर जनजाति में व्यय मदों एवं उसमे संलग्न परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 47
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर जनजाति में कुल वार्षिक व्यय के मदों का विवरण

क्र.	विवरण	संलग्न परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	कृषि/भोजन/साग–भाजी, बाड़ी – फल–फूल	1116	100.00
2	पारम्परिक व्यवसाय	473	42.38
3	पोषाक, गहने	1116	100.00
4	पूजा एवं पर्व	1076	96.42
5	मादक पेय पदार्थ	912	81.72
6	अतिथि सत्कार	1028	92.11
7	रोगोपचार	759	68.01
8	शिक्षा	196	17.56
9	टीकाउ संपत्ति क्रय + लगान	433	38.80
10	गृह निर्माण एवं मरम्मत	267	23.92
11	ऋण की अदायगी	18	1.61
12	न्यायलयीन व्यय	30	2.69
13	उपहार	676	60.57
14	अन्य	362	32.44
कुल सर्वेक्षित परिवार – 1116			

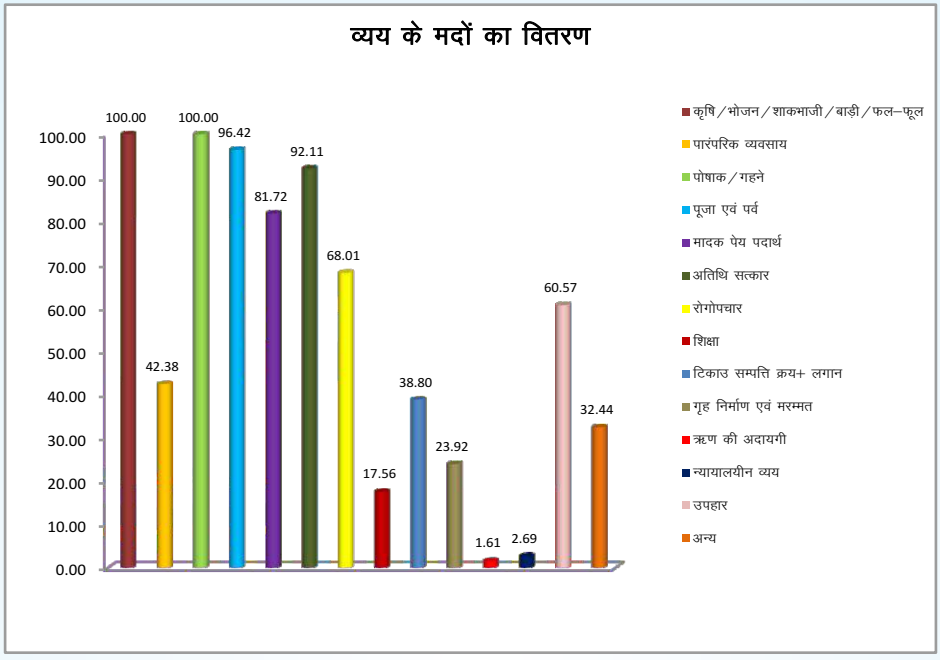

उपरोक्तानुसार भोजन एवं कपड़ा जैसे आधारभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु शत–प्रतिशत बिरहोर परिवार द्वारा कुछ न कुछ राशि व्यय की जाती है।

जनजातीय धार्मिक आस्थाओं एवं मान्यताओं से परिपूर्ण होता है अतः 96.42 प्रतिशत परिवारों द्वारा इस मद मे व्यय किया गया । महुआ आदि की शराब जनजातियों में धार्मिक कर्मकाण्डक का आवश्यक अंग होने के साथ–साथ मनोरंजन मे भी उपयोग होता है इस मद में 81.72 प्रतिशत (N=912) परिवारों की व्यय संलग्नता रही।

अतिथि सत्कार सामाजिक जीवन का एक प्रमुख अंग है जिसमें बिरहोर जनजाति के 92.11 प्रतिशत परिवारों की व्यय सहभागिता रही, अतिथि सत्कार में व्यय राशि का एक बड़ा (लगभग पूर्ण) भाग भोजन एवं पेय संबंधी आवश्यकताओं में व्यय होता है।

स्वास्थ्य एवं शिक्षा किसी भी समुदाय के समग्र विकास की कुंजी है, स्वास्थ्यगत मदो मे बिरहोर जनजाति के 68.01 प्रतिशत परिवारों द्वरा व्यय किया है, वही शिक्षा के क्षेत्र में आवश्यकता होने पर केवल 17.56 प्रतिशत परिवारों द्वारा कुछ न कुछ राशि व्यय की है हालांकि शासन द्वारा विभिन्न शैक्षणिक सुविधाएं निःशुल्क उपलब्ध करायी जा रही है।

कुल वार्षिक व्यय

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति परिवारों में उपरोक्त मदों में निम्नानुसार राशि व्यय की गई –

तालिका क्र. 48
बिरहोर जनजाति में कुल वार्षिक व्यय का विवरण

क्र.	विवरण	संलग्न परिवार	कुल वार्षिक व्यय	प्रति परिवार औसत व्यय
1	कृषि/भोजन/साग–भाजी, बाड़ी – फल–फूल	1116	15672480	14043.44
2	पारम्परिक व्यवसाय	473	1059860	2240.72
3	पोषाक, गहने	1116	2469750	2213.04
4	पूजा एवं पर्व	1076	1200150	1115.38
5	मादक पेय पदार्थ	912	1997380	2190.11
6	अतिथि सत्कार	1028	1386100	1348.35
7	रोगोपचार	759	1016900	1339.79
8	शिक्षा	196	194300	991.33
9	टीकाउ संपत्ति क्रय + लगान	433	504434	1164.97
10	गृह निर्माण एवं मरम्मत	267	375562	1406.60
11	ऋण की अदायगी	18	26700	1483.33
12	न्यायलयीन व्यय	30	22700	756.67
13	उपहार	676	529140	782.75
14	अन्य	362	635200	1754.70
कुल योग (परिवार 1116)			**27090656**	**24274.78**

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में शत–प्रतिशत परिवारों द्वारा कृषि–भोजन–शाकभाजी एवं पोषाक/गहने मद मे क्रमशः परिवार औसतन 14043 रुपये व 2213 रुपये का व्यय किया गया।

पूजा–पर्व (धार्मिक समारोह) पर प्रति परिवार (N=1076) 1115.38 रुपये औसतन व्यय किया गया।

मादक पेय पदार्थ पर 912 परिवारो द्वारा प्रति परिवार औसतन 2190.10 रुपये व अतिथि सत्कार पर 1028 परिवारों द्वारा औसतन प्रति परिवार 1348.35 रुपये का व्यय किया गया।

रोगोपचार या स्वास्थ्य संबंधी मदों मे बिरहोर जनजाति के 759 परिवारों द्वारा वर्ष भर में प्रति परिवार औसतन 1339.79 रुपये का व्यय किया गया।

शिक्षा विशेष पिछड़ी जनजाति समूह के लिये सामान्यतः निःशुल्क है, बिरहोर जनजाति के 196 परिवारों द्वारा शिक्षा मद मे प्रति परिवार औसतन 991.33 रुपये का व्यय किया गया।

बिरहोर जनजाति के 18 परिवारों द्वारा प्रति परिवार औसतन 1483.33 रुपये का ऋण वापसी भुगतान किया बताया गया। शेष मदों में व्यय राशि उपरोक्तानुसार है।

कुल वार्षिक व्यय में मदों की सहभागिता

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में कुल वार्षिक व्यय में मदो की सहभागिता निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 49
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में कुल वार्षिक व्यय के मदों का विवरण

क्र.	विवरण	कुल वार्षिक व्यय	कुल वार्षिक व्यय में मदो की सहभागिता का प्रतिशत
1	कृषि/भोजन/साग–भाजी, बाड़ी – फल–फूल	15672480	57.85
2	पारम्परिक व्यवसाय	1059860	3.91
3	पोषाक, गहने	2469750	9.12
4	पूजा एवं पर्व	1200150	4.43
5	मादक पेय पदार्थ	1997380	7.37
6	अतिथि सत्कार	1386100	5.12
7	रोगोपचार	1016900	3.75
8	शिक्षा	194300	0.72
9	टीकाउ संपत्ति क्रय + लगान	504434	1.86
10	गृह निर्माण एवं मरम्मत	375562	1.39
11	ऋण की अदायगी	26700	0.10
12	न्यायलयीन व्यय	22700	0.08
13	उपहार	529140	1.95
14	अन्य	635200	2.34
योग		**27090656**	**100.00**

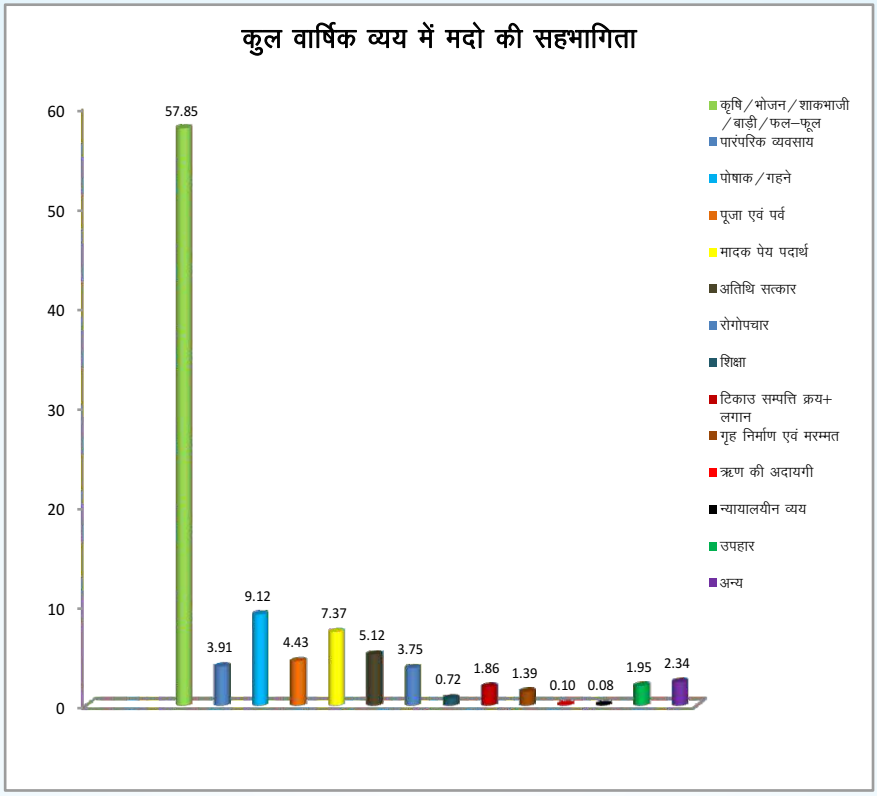

उपरोक्तानुसार बिरहोर जनजाति में समग्र रूप से भोजन अथवा खान–पान मद पर कुल वार्षिक व्यय का 70.34 प्रतिशत भाग (कृषि, भोजन, शाकभाजी, मादक पेय पदार्थ, अतिथि सत्कार), पोषाक एवं गहनो पर 9.12 प्रतिशत, पूजा–पर्व पर 4.43 प्रतिशत भाग व्यय किया गया।

रोगोपचार मद पर कुल वार्षिक व्यय का 3.75 प्रतिशत एवं शिक्षा पर केवल 0.72 प्रतिशत भाग ही व्यय किया गया है।

कुल वार्षिक व्यय का वितरण –

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर द्वारा अपनी आजीविका हेतु व्यय के विभिन्न स्त्रोतों में किये गये कुल वार्षिक व्यय का समस्त परिवारों मे वितरण निम्नानुसार है –

तालिका क्र. 50
बिरहोर जनजाति में समस्त मदों में कुल वार्षिक व्यय का परिवारों में वितरण

क्र.	कुल वार्षिक व्यय का वितरण (रूपये में)	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	10000 से कम	111	9.95
2	10000 से 20000	338	30.29
3	20000 से 30000	365	32.71
4	30000 से अधिक	281	25.18

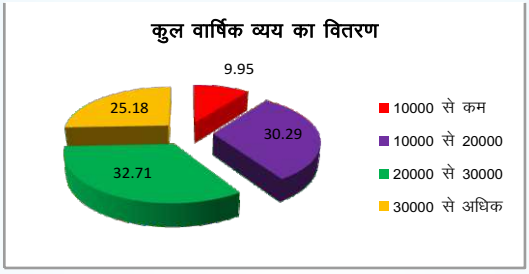

उपरोक्तानुसार विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों मे से सर्वाधिक 32.71 प्रतिशत (N=365) परिवारों द्वारा पारिवारिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु 20–30000 रुपये तक का वार्षिक व्यय किया, 30.29 प्रतिशत (N=338) परिवारों द्वारा 10000–20000 रुपये का वार्षिक व्यय, 25.18 प्रतिशत (N=281) परिवारों द्वारा 30000 से अधिक का विभिन्न मदो में कुल वार्षिक व्यय किया। 10000 रुपये से भी कम का कुल वार्षिक व्यय करने वाले परिवारों की संख्या 9.95 प्रतिशत (N=111) है।

ऋण ग्रस्तता

सामान्यत जीवन में किसी परिवार को विषम अथवा विशेष परिस्थितियों में स्वयं की आय के अतिरिक्त अन्य राशि अथवा ऋण से प्राप्त राशि की आवश्कता होती है, चूंकि जनजातीय समाज विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियों की अर्थव्यवस्था प्रायः संग्रह की अर्थव्यवस्था न होकर केवल निर्वाह की अर्थव्यवस्था में जीवन यापन कर रही है एवं उन्हे अपनी आजीविका चलाने एवं विशिष्ट सामाजिक सांस्कृतिक अवसरों पर राशि की अथवा वस्तुओं की आवश्यकता होती है जिसके लिये वे अपने सगे–संबंधियों, दुकानदारों, साहूकारों व बिचौलियों पर निर्भर रहते है।

बिरहोर जनजाति में भी इस प्रकार की ऋणग्रस्तता पायी जाती है।

वनोपज एवं कृषि उपजों का विनिमय

जनजातीय समाजों में वनो का महत्वपूर्ण स्थान है। वन जहां उनका आश्रय स्थान है वही धार्मिक क्रिया–कलापों एवं वनोपजों के संकलन एवं विक्रय से उनकी अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है वनोपजों के संकलन के साथ–साथ सीमित संसाधनों के साथ आदिम तकनीक की कृषि करते है।

वनोपजों यथा सरई बीज(साल बीज), हर्रा बेहड़ा, कुसूम बीज, तेंदूपत्ता, आंवला, गोंद, आदि का संकलन कर एवं कृषि उत्पादों की आवश्यकतानुसार सामान्य स्थानीय साप्ताहिक हाट–बाजार, निकट की किराना दुकान, कोचिये एवं वनोपज सहकारी समितियों को विक्रय किया जाता है। जिसमें इनकी पारिवारिक आवश्यकताएं एवं साप्ताहिक हाट–बाजार से दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के सामान क्रय करने में मदद मिलती है।

वनोपज एवं कृषि उपजों के विक्रय का प्रकार

बिरहोर जनजाति में कृषि उपजों के विक्रय का प्रकार निम्नानुसार है,

तालिका क्र. 51
बिरहोर जनजाति में कृषि विक्रय के प्रकार का वितरण

क्र.	विवरण	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	नगद	509	45.61
2	विनिमय	3	0.27
3	दोनों	604	54.12
योग		**1116**	**100.00**

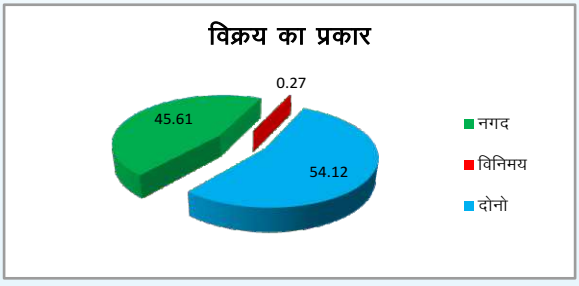

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में कृषि एवं वनोपजों का विक्रय सामान्यतः दुकानों, बिचौलियो, हाटबाजार एवं विशिष्ट वनोपजों जैसे तेदूपत्ता सालबीज आदि का विक्रय शासकीय सहकारी समिति मे किया जाता है। बिरहोर जनजाति के 45.61 प्रतिशत (N=509) परिवारों द्वारा नगद रूप में एवं 54.12 प्रतिशत (N=604) परिवारों द्वारा नगद एवं वस्तु विनिमय दोनों ही स्वरूपों में कृषि उपजों एवं वनोत्पादों का विक्रय किया है।

पलायन की स्थिति

सामान्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार हेतु पलायन करने की तुलना में जनजातियों विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियों में पलायन प्रायः कम पाया जाता है। जनजातियां सामान्यतः दूर–सघन वनो में ज्यादातर निवासरत होती है, प्रकृति के साथ घनिष्ठ संबंध होने व जीवनआवश्यक सीमित आवश्यकताओं की पूर्ति के उपलब्ध संसाधनों से कर लेने व प्रकृति से सामंजस्य स्थापित करने में ज्यादा सक्षम होते है। बिरहोर जनजाति में पलायन की स्थिति निम्नांकित है –

तालिका क्र. 52
बिरहोर जनजाति में पलायन की स्थिति

क्र.	पलायन की स्थिति	परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1	हां	2	0.18
2	नही	1114	99.82
योग		**1116**	**100.00**

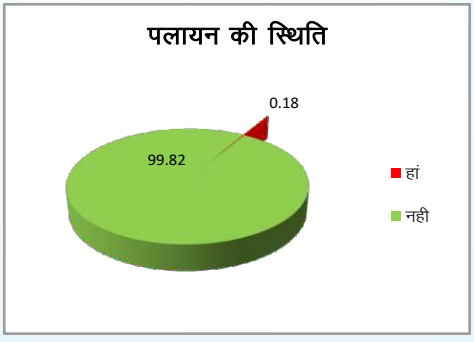

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में कार्य हेतु अन्यत्र पलायन करने वाले

अध्याय – 07
स्वास्थ्य स्थिति

जनजातीय समुदायों विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियों में स्वास्थ्य स्थिति का अध्ययन एक महत्वपूर्ण तथ्य है, तथा इन समुदायों में स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं को पृथक अययन आवश्यक है। किन्तु आधारभूत सर्वेक्षण अनुसूची मे विशेष पिछड़ी जनजातियों के स्वास्थ्य संदर्भ में सामान्य जानकारियां प्राप्त की गई है।

जनजातीय समुदायों विशेषकर विशेष पिछड़ी जनजातियों के निवासक्षेत्र मे अपेक्षाकृत कम स्वास्थ्य अधोसंरचना, स्वास्थ्य के प्रति उनमें प्रचलित विश्वास व मान्यताएं, उनकी सामाजिक–सांस्कृतिक स्थिति, रोगोपचार के परम्परागत पद्धतियां आदि कारक स्वास्थ्य अध्ययन हेतु एक विशिष्ट मापदण्ड है, इन मापदण्डो के बिना हम जनजातीय स्वास्थ्य को परिभाषित करने की स्थिति मे नही होगें।

सामान्यतः जनजातियों में स्वास्थ्य संबंधी अवधारणा मे दैवीय शक्तियों के प्रकोप, जादू–टोना, नजर लगना, पूर्वज देवी–देवता का नाराज होना, प्राकृतिक कारण जैसे कारकों को अस्वस्थ्यता का कारण माना जाता है, इसी आधार पर जनजातीय समाजों मे उनके परम्परागत **लोक–चिकित्सकों (Ethno medicine man) यथा बैगा, गुनिया, सिरहा, झाखर** आदि के द्वारा **नाड़ी तंत्र, जादुई धार्मिक कर्मकाण्ड (Magico religios rituals)** के माध्यम से उपचार पद्धति का उपयोग किया जाता है।

उपरोक्त तथ्यों के अतिरिक्त जनजातीय समुदायों में उपचार की वनौषधीय पद्धति भी विद्यमान है, जिसके अप्रभावी होने का दावा वर्तमान परिवेश मे वैज्ञानिक पद्धति द्वारा भी किया जाना संभव नही है।

जनजातियों में किसी व्याधि के उपचार हेतु समुदाय की आस्था उनके परम्परागत स्थानीय लोक–चिकित्सकों पर अधिक होती है। लोक चिकित्सकों को परम्परागत ज्ञान एवं पीढ़ी–दर–पीढ़ी हस्तांतरित ज्ञान व स्थानीय स्त्रोत से उपलब्ध संसाधनों (वनौषधि) का पर्याप्त ज्ञान होता है, जिसके आधार पर वे लाक्षणिक (Symptomatic method) प्रविधियों के आधार पर उपचार करते है, किन्तु यह भी आवश्यक है कि जनजातियों के उत्तम स्वास्थ्य हेतु किये जा रहे शासकीय प्रयासों का क्षेत्र में प्रचार–प्रसार , सुविधाओं में वृद्धि एवं उनके सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश को बाधित किये बिना आधूनिक चिकित्सा पद्धति के प्रति उनकी स्वीकार्यता एवं विश्वास में वृद्धि किया जाना भी आवश्यक है।

बिरहोर जनजाति में उपचार प्राथमिकता

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में रोग या अस्वस्थता की स्थिति में उपचार प्राथमिकता क्रम का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 53
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर मे
उपचार प्राथमिकता क्रम

क्र.	विवरण	उपचार प्राथमिकता क्रम	परिवार	
			संख्या	प्रतिशत
1.	घेरलु उपचार	प्रथम	1008	90.32
2.	भगत, बैगा, गुनिया	द्वितीय	896	80.29
3.	औषधीय उपचारक / वैध	तृतीय	295	26.43
4.	योग्यताधारी चिकित्सक	चतुर्थ	1036	92.83
कुल परिवार –1116				

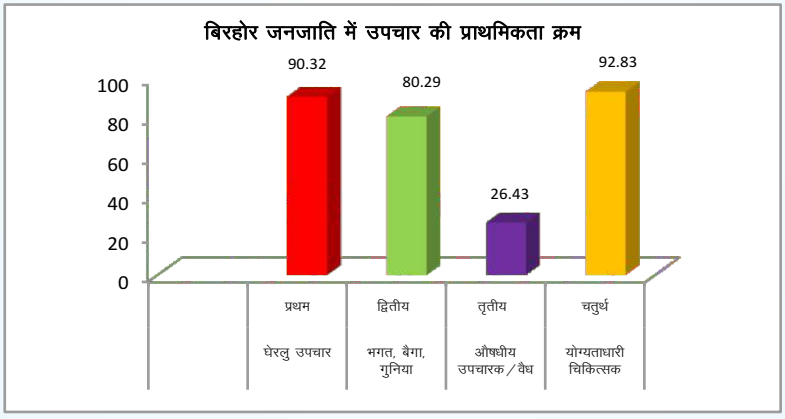

उपरोक्त तालिका से दर्शित है कि जनजातीय समाज अलौकिक शक्तियों (Super natural powar) पर स्वास्थ्य के संदर्भ में भी अत्यधिक विश्वास करते है। सामान्यतः अस्वस्थ होने पर अधिकतर परिवार (90.32 प्रतिशत) घरेलू उपचार पद्धति का उपयोग करते है। 80.29 प्रतिशत परिवार दूसरे क्रम पर जादुई–धार्मिक कर्मकाण्ड हेतु परम्परागत लोक चिकित्सकों भगत, बैगा–गुनिया के उपचार पद्धति को प्राथमिकता देते है, 26.43 प्रतिशत परिवार तृतीय क्रम में औषधीय उपचारक वैद्य की सहायता / सेवा प्राप्त करते है। सर्वाधिक 92.83 प्रतिशत परिवार घरेलू,

उपचार, बैगा, गुनिया एवं वनौषधीय उपचार के बाद आधूनिक या योग्यताधारी चिकित्सक की सेवा प्राप्त करने की जानकारी दी गई।

विभिन्न रोग/अस्वस्थता से पीड़ित सदस्य

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में सर्वेक्षण के दौरान गत 01 वर्ष में विभिन्न प्रकार की व्याधि से ग्रस्त सदस्यों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र.54
विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में
रोग/अस्वस्थतासे पीड़ित सदस्य

क्र.	रोग/अस्वस्थता का नाम	पीड़ित सदस्य					
		पुरूष		महिला		योग	
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत
1.	मलेरिया	24	1.39	04	0.23	28	0.82
2.	टायफाइड	02	0.12	0	0	02	0.06
3.	खांसी	02	0.12	0	0	02	0.06
4.	सामान्य बुखार, अन्य	572	33.16	203	11.49	775	22.19
5.	टी.बी.	07	0.41	0	0	07	0.20
6.	कैंसर	0	0	01	0.06	01	0.03
7.	अन्य	02	0.12	01	0.06	03	0.09
योग		**609**	**35.30**	**209**	**11.83**	**818**	**23.42**

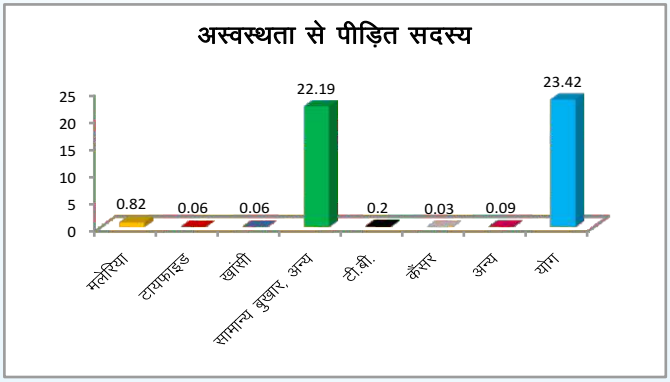

उपरोक्तानुसार बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के परिवारों के समस्त सदस्यों मे से 23.42 प्रतिशत (N=818) सदस्य 01 वर्ष की अवधि मे किसी न किसी रोग या अस्वस्थ्यता से ग्रस्त रहे है। जिनमे 35.30 प्रतिशत प्ररूष सदस्य व 11.83 प्रतिशत स्त्री सदस्य रहे है।

सर्वाधिक 22.19 प्रतिशत (N=775) बिरहोर सदस्यच सामान्य बुखार सर्दी खांसी से ग्रसित रहे है जिनमें 33.16 प्रतिशत सदस्य पुरूष व 11.49 प्रतिशत सदस्य स्त्री है।

कुल पुरूष वर्ग के बिरहोर सदस्यों में 1.39 प्रतिशत पुरूष (N=24) मलेरिया से, 0.12 प्रतिशत पुरूष (N=2) टायफाइड से व गंभीर बिमारी के रूप मे टीबी (Tuberculosis) से 0.41 प्रतिशत (N=07) पुरूष सदस्य ग्रसित होना पाया गया।

==0==

अध्याय – 08
योजनाओं से लाभान्वयन

भारत सरकार द्वारा अनुसूचित जनजातियों मे से कुछ जनजातीय समुदायों को विशिष्ट मापदण्डों के आधार पर चिन्हित कर उनके समग्र विकास हेतु पृथक से योजना निर्माण का निर्णय लिया गया।

भारत सरकार के मंशानुरूप छत्तीसगढ़ शासन द्वारा भी राज्य की विशेष पिछड़ी जनजातियों के विकास हेतु विशेष पिछड़ी जनजाति विकास अभिकरण एवं प्रकोष्ठों का गठन कर विभिन्न विकासमूलक योजनाएं संचालित की जा रही है।

वर्तमान परिदृश्य मे योजनाओं के संचालन एवं क्रियान्वयन से पूर्व की तुलना मे योजनाओं का लाभ प्राप्त करने की प्रवृत्ति में वृद्धि हुई है।

विशेष पिछड़ी जनजाति के विकास हेतु **"विशेष पिछड़ी जनजाति विकास अभिकरण"** जशपुर में एवं विकास प्रकोष्ठ धरमजयगढ़ (जिला रायगढ़) में स्थापित किया गया है। किन्तु भौगोलिक परिस्थिति, शिक्षा स्तर आदि कारणों से इनमें शासन द्वारा संचालित योजनाओं के प्रति स्वीकार्यता एवं प्रसार में अपेक्षाकृत कमी के कारण योजनाओं से लाभान्वयन की स्थिति धीमी है।

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर विकास अभिकरण द्वारा **भूमि आबंटन, भूमि सुधार, खादबीज, बैल जोड़ी, सिंचाई सहायता, फसल प्रदर्शन, पशुधन विकास, मत्स्य पालन, लघुव्यवसाय, गृहउद्योग, उद्यानिकी, बाड़ी विकास–पौध रोपण, पुर्नवास, आवास प्रदाय** जैसी योजनाये संचालित की जा रही है।

विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित बिरहोर परिवारों की जानकारी निम्नांकित है –

कृषि संबंधी योजना

बिरहोर जनजाति मे कृषि संबंधी योजना से लाभान्वित हुये परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 55

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनाओं से लाभान्वन की स्थिति

क्र.	विवरण	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	हां	219	19.62
2.	नही	897	80.38
योग		**1116**	**100.0**

तालिका क्र. 56

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनावार लाभान्वित परिवार

क्र.	योजना का नाम	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	भूमि आबंटन	29	13.24
2.	भूमि अधिग्रहण सुधार	01	0.46
3.	खाद–बीज सहायता	79	36.07
4.	बैलजोड़ी	95	43.78
5.	सिंचाई सहायता	12	5.48
6.	फसल प्रदर्शन	03	1.37
योग		**219**	**100.0**

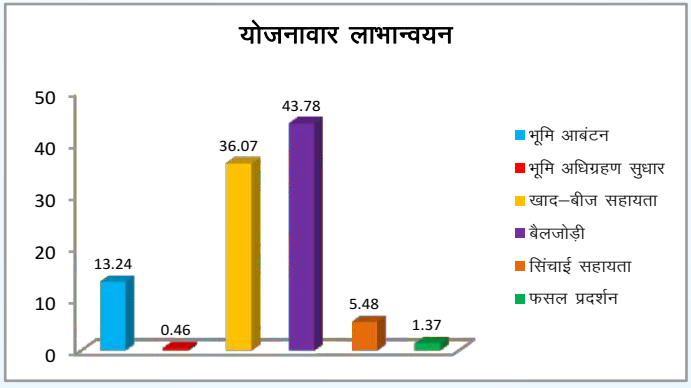

बिरहोर जनजाति के 19.62 प्रतिशत परिवार कृषि विकास संबंधी विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हुये है उनमें सर्वाधिक 43.78 प्रतिशत परिवार बैलजोड़ी, 36.07 प्रतिशत परिवार

खाद–बीज प्रदाय योजना, 13.24 प्रतिशत परिवार भूमि आबंटन योजना, 5.48 प्रतिशत परिवार सिंचाई सहायता योजना से लाभान्वित पाये गये।

2. आर्थिक विकास संबंधी योजना

बिरहोर जनजाति मे आर्थिक विकास की संबंधी अन्य योजनाओं से लाभान्वित हुये परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 56

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनाओं से लाभान्वन की स्थिति

क्र.	विवरण	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	हां	93	8.33
2.	नही	1023	91.67
योग		**1116**	**100.0**

तालिका क्र. 57

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनावार लाभान्वित परिवार

क्र.	योजना का नाम	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	पशुधन विकास	63	67.74
2.	मत्स्य पालन	01	1.07
3.	मधूमक्खी पालन	06	9.52
4.	लघु व्यवसाय	11	11.83
5.	गृह उद्योग	12	12.90
योग		**219**	**100.0**

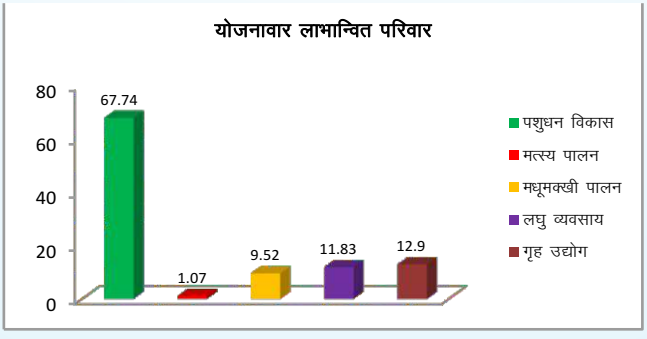

आर्थिक विकास योजनाओं से लाभान्वित परिवारों में से 67.74 प्रतिशत परिवार पशुधन विकास, 12.90 प्रतिशत परिवार गृहउद्योग, 11.83 प्रतिशत परिवार लघु व्यवसाय, 9.52 प्रतिशत परिवार मधूमक्खी पालन जैसी योजनाओं से लाभान्वित हुये है।

3. उद्यानिकी विकास से संबंधित योजना

बिरहोर जनजाति मे उद्यानिकी विकास से संबंधित योजना से लाभान्वित हुये परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 58

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनाओं से लाभान्वन की स्थिति

क्र.	विवरण	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	हां	144	12.90
2.	नही	972	87.10
योग		**1116**	**100.0**

तालिका क्र. 59

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनावार लाभान्वित परिवार

क्र.	योजना का नाम	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	उद्यानिकी	136	94.44
2.	बाड़ी विकास/ पौध रोपण	08	5.56
योग		**144**	**100.0**

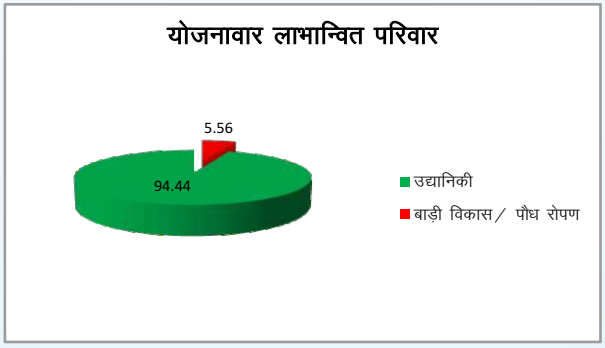

उद्यानिकी से संबंधित योजनाओं से 12.90 प्रतिशत परिवार लाभान्वित हुए तथा उक्त लाभान्वित परिवारों में से 94.44 प्रतिशत परिवार उद्यानिकी विकास योजनाओं से एवं 5.56 प्रतिशत परिवार बाड़ी विकास एवं पौध रोपण योजना से लाभान्वित है।

4. आवास, पुर्नवास संबंधी योजना

बिरहोर जनजाति मे आवास एवं पुर्नवास संबंधी योजना से लाभान्वित हुये परिवारों का विवरण निम्नांकित है –

तालिका क्र. 60

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनाओं से लाभान्वन की स्थिति

क्र.	विवरण	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	हां	427	38.26
2.	नही	689	61.74
योग		**1116**	**100.0**

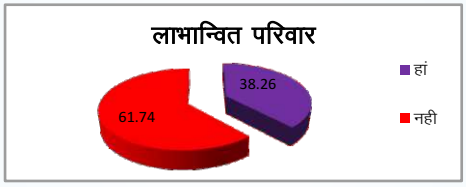

तालिका क्र. 61

विशेष पिछड़ी जनजाति बिरहोर में योजनावार लाभान्वित परिवार

क्र.	विवरण	लाभान्वित परिवार	
		संख्या	प्रतिशत
1.	हां	72	6.45
2.	नही	1044	93.55
योग		**1116**	**100.0**

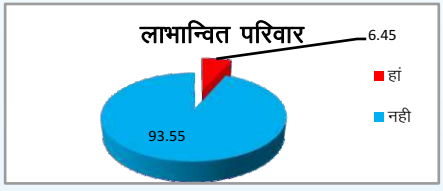

38.26 प्रतिशत परिवार आवास संबंधी योजना से व 6.45 प्रतिशत परिवार पुर्नवास संबंधी योजनाओं से लाभान्वित है।

अध्याय – 09
सारांश एवं निष्कर्ष

भारत सरकार द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य हेतु बिरहोर अनुसूचित जनजाति को घोषित विशेष पिछड़ी जनजाति के आधारभूत सर्वेक्षण से प्राप्त तथ्यों का संक्षिप्त मे सारांश निम्नांकित है–

1. बिरहोर जनजाति राज्य के बिलासपुर, जशपुर, कोरबा एवं रायगढ़ जिले मे निवासरत है, उक्त जिलो में बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के कुल 1116 परिवार निवासरत है। बिरहोर जनजाति के सर्वाधिक परिवार 506 (45.34 प्रतिशत) कोरबा जिले में है।

   राज्य के उपरोक्त जिलो मे से बिलासपुर के कोटा विकासखण्ड के 04 ग्रामों, मस्तुरी विकासखण्ड के 02 ग्रामों, जिला जशपुर के बगीचा विकासखण्ड के 04 ग्रामो, दुलदुला विकासखण्ड के 01 ग्राम, कांसाबेल विकासखण्ड के 02 ग्रामों, कुनकुरी विकासखण्ड के करतला विकासखण्ड के 03 ग्रामों, कोरबा विकासखण्ड के 09 ग्रामों, पाली विकासखण्ड के 11 ग्रामों, पोड़ी उपरोड़ा विकासखण्ड के 12 ग्रामों एवं जिला रायगढ़ के धरमजयगढ़ विकासखण्ड के 17 ग्रामों, घरघोड़ा विकासखण्ड के 02 ग्रामो, लैलूंगा विकासखण्ड के 03 ग्रामों एवं तमनार विकासखण्ड के 03 ग्रामों अर्थात् राज्य के उपरोक्त 04 जिलों के कुल 15 विकासखण्डों के 78 ग्राामों में बिरहोर विशेष पिछडी जनजाति के 1116 परिवार निवासरत है।

2. छत्तीसगढ़ राज्य की बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 73.57 प्रतिशत परिवार केन्द्रीय या मूल परिवार (Nuclear Family) पाये गये।

3. छत्तीसगढ़ राज्य में सर्वेक्षण 2015–16 अनुसार बिरहोर, विशेष पिछड़ी जनजाति की कुल जनसंख्या 3492 है जिसमें पुरूष जनसंख्या 1725 एवं स्त्री जनसंख्या 1767 है। स्त्री–पुरूष लिंगानुपात 1024 है।

   सर्वेक्षण वर्ष मे बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति मे दशकीय जनसंख्या वृद्धिदर (Population Growth Rate) 32.98 प्रतिशत है जो छत्तीसगढ़ राज्य की अनुसूचित जनजाति की दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर से 18.23 प्रतिशत अधिक है।

4. बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के अधिकतर (69.61 प्रतिशत) पुरूष वर्ग की विवाह उम्र 15–21 वर्ष है वही 67.02 प्रतिशत, स्त्री वर्ग की विवाह उम्र 18 वर्ष तक ही है।

5. बिरहोर जनजाति धार्मिक रूप से आदिवासी परम्परा का निर्वाह करते हुये हिन्दू धर्म के धर्मावलंबी मानते है।

6. बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति मे साक्षरता दर 47.95 प्रतिशत पायी गई जिसमे पुरूष साक्षरता दर 53.39 प्रतिशत की तुलना मे स्त्री साक्षरता दर (42.62 प्रतिशत) कम है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जजाति की कुल साक्षरता दर छत्तीसगढ़ राज्य की कुल अनुसूचित जनजाति साक्षरता दर (50.03 प्रतिशत) की तुलना में कम है।

शालागामी उम्र समूह 7–14 वर्ष मे बिरहोर जनजाति के 554 बालक–बालिकाएं अध्ययरत है। इस उम्र समूह के बालको में साक्षरता दर 92.31 प्रतिशत एवं बालिका साक्षरता दर 86.34 प्रतिशत है। इस उम्र समूह में अधिक साक्षरता पर सर्व शिक्षा अभियान, शाला में अनिवार्य शिक्षा एवं शतप्रतिशत नामांकन व अन्य शिक्षा संबंधी योजनाओं का प्रभाव परिलक्षित होता है।

7. बिरहोर जनजाति के आवास प्रायः कच्चे अर्थात मिट्टी एवं मिट्टी लकड़ी मिश्रित प्रकार के पाये गये जिनके छत घास–फूस या खपरैल के पाये गये।

8. बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में 58.22 प्रतिशत व्यक्ति कार्यशील है जिनमे पुरूषों की संख्या 59.13 प्रतिशत व स्त्री कार्यशील जनसंख्या 57.33 प्रतिशत है।

9. बिरहोर जनजाति में 22.58 प्रतिशत व्यक्तियों ने कृषि, 23.61 प्रतिशत लोगों ने मजदूरी 17.66 प्रतिशत लोगो ने बांस बर्तन व रस्सी निर्माण, 2.90 प्रतिशत लोगों ने वनोपज संकलन को प्राथमिक व्यवसाय बताया वही सेवा/नौकरी केवल 0.44 प्रतिशत व्यक्तियों का प्राथमिक व्यवसाय है।

10. रोजगार प्राप्त बिरहोर व्यक्तियों में से 46.53 प्रतिशत लोगों को 2–4 माह का, 34.21 प्रतिशत लोगो को 6 माह तक का एवं 19.25 प्रतिशत व्यक्तियों को 6 माह से अधिक का रोजगार प्राप्त हुआ है।

11. बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 66.40 प्रतिशत परिवार कृषि भूमिधारक है जिनमें से 78.54 प्रतिशत परिवारों की कृषि भूमि असिंचित है। भूमि धारक परिवारों में प्रति परिवार भूमि का औसत रकबा 3.20 एकड़ है। 10.22 प्रतिशत परिवार यदा–कदा आंशिक रूप से पेंदा कृषि करते है।

अधिया अंतर्गत भूमि लेकर कृषि करने वाले बिरहोर परिवारों की संख्या केवल 0.63 प्रतिशत है वही स्वयं की भूमि दूसरों को हस्तांतरित करने वाले बिरहोर परिवार की संख्या भी केवल 0.95 प्रतिशत है।

12. पशुधन के रूप में 4.12 प्रतिशत परिवारों के पास गाय, 11.92 प्रतिशत परिवारों के पास बैल, 21.33 प्रतिशत परिवारों में बकरा–बकरी एवं 22.67 प्रतिशत परिवारों द्वारा मुर्गा–मुर्गियों का पालन किया जाना पाया गया है।

13. बिरहोर जनजाति में भी वृक्षों का उनके सामाजिक एवं आर्थिक जीवन मे महत्वपूर्ण स्थान है। वनो मे उपलब्ध वृक्षों के अतिरिक्त 42.74 प्रतिशत परिवारो के आधिपत्य मे प्रति परिवार औसतन 6.51 महुआ वृक्ष, 13.80 प्रतिशत परिवारों के आधिपत्य में औसतन 12.91 प्रतिशत साल–सरई वृक्ष, 3.89 प्रतिशत परिवारों के पास औसतन 3.56 कोसम वृक्ष, 10.21 प्रतिशत परिवारों के पास औसतन 2.22 वृक्ष आम के तथा 1.52 प्रतिशत परिवारों के आधिपत्य में प्रति परिवार औसतन 1.71 ईमली के वृक्ष पाये गये। तथा 92.56 प्रतिशत बिरहोर परिवारों के पास प्रति परिवार औसतन 2.29 प्रतिशत उपरोक्त के अतिरिक्त अन्य वृक्षो का आधिपत्य है।

14. बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में आय के समस्त स्त्रोतों जैसे कृषि, सेवा, शिकार/मत्स्यपालन, उद्यानिकी, वृक्ष से उत्पादन, वनोपज, रस्सी निर्माण/बांस बर्तन निर्माण, मजदूरी आदि से प्रति परिवार औसतन 33571.91 रूपये की वार्षिक आय प्राप्त हुई है।

कुल वार्षिक आय में कृषि आय की सहभागिता 4.88 प्रतिशत वनोपज संकलन की सहभागिता 8.07 प्रतिशत, परम्परागत व्यवसाय की सहभागिता 4.58 प्रतिशत है। बिरहोर जनजाति मे कुल वार्षिक आय में सर्वाधिक 43.65 प्रतिशत सहभागिता मजदूरी से प्राप्त आय की है।

बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति में 46.51 प्रतिशत परिवारों की समस्त स्त्रोतों से वार्षिक आय 30000 रुपये तक की है तथा 46.33 प्रतिशत परिवारो की कुल वार्षिक आय 30000 रुपये से अधिक पायी गई।

15. बिरहोर जनजाति में व्यय के विभिन्न मदो में प्रति परिवार औसतन वार्षिक व्यय 24274.78 रुपये का है। कुल वार्षिक व्यय में सर्वाधिक व्यय भोजन मद में 57.85 प्रतिशत, मादक पेय हेतु 7.37 प्रतिशत, अतिथि सत्कार में 5.12 प्रतिशत, पोषाक व गहने क्रय करने में 9.12 प्रतिशत की सहभागिता पायी गई। शिक्षा संबंधी मदो में व्यय की सहभागिता 0.72 प्रतिशत व स्वास्थ्यगत कारणों में बिरहोर जनजाति मे कुल वार्षिक व्यय में सहभागिता 3.75 है।

16. बिरहोर जनजाति मे कृषि उपजो व वनोत्पादों का विक्रय सर्वाधिक 45.61 प्रतिशत परिवारों द्वारा नगद रूप मे तथा 54.12 प्रतिशत परिवारों द्वारा नगद एवं वस्तु विनिमय के द्वारा विक्रय किया गया।

17. बिरहोर जनजाति मे पलायन की स्थिति सामान्यतः नगण्य पायी गई।

18. स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बिरहोर विशेष पिछड़ी जनजाति के 23.42 प्रतिशत सदस्य मलेरिया, टायफाईड, सामान्य बुखार, सर्दी–खासी, टी.बी., कैंसर व अन्य बिमारियों से ग्रस्त पाये गये जिसमे 35.30 प्रतिशत पुरूष सदस्य एवं 11.83 प्रतिशत स्त्री सदस्य है।

बिरहोर जनजाति वर्तमान में भी किसी रोग या अस्वस्थता के उपचार हेतु प्राथमिक रूप से परम्परागत उपचार पद्धति को ही प्राथमिकता देती है, तत्पश्चात ही योग्यताधारी चिकित्सकों की सेवा लेते है।

19. बिरहोर जनजाति के 19.62 प्रतिशत परिवार कृषि विकास संबंधी विभिन्न योजनाओं से लाभान्वित हुये है उनमें सर्वाधिक 43.78 प्रतिशत परिवार बैलजोड़ी, 36.07 प्रतिशत परिवार खाद–बीज प्रदाय योजना, 13.24 प्रतिशत परिवार भूमि आबंटन योजना, 5. 48 प्रतिशत परिवार सिंचाई सहायता योजना से लाभान्वित पाये गये।

आर्थिक विकास योजनाओं से लाभान्वित परिवारों में से 67.74 प्रतिशत परिवार पशुधन विकास, 12.90 प्रतिशत परिवार गृहउद्योग, 11.83 प्रतिशत परिवार लघु व्यवसाय, 9.

52 प्रतिशत परिवार मधूमक्खी पालन जैसी योजनाओं से लाभान्वित हुये है। उद्यानिकी से संबंधित योजनाओ से लाभान्वित परिवारों में से 94.44 प्रतिशत परिवार उद्यानिकी विकास योजनाओं से एवं 5.56 प्रतिशत परिवार बाड़ी विकास एवं पौध रोपण योजना से लाभान्वित है।

पुर्नवास संबंधी योजना से 6.45 प्रतिशत परिवार व 38.26 प्रतिशत परिवार आवास संबंधी योजनाओं से लाभान्वित है।

शम्मी आबिदी IAS
संचालक
आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
नवा रायपुर, छत्तीसगढ़

संचालनालय आदिमजाति अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान,
सेक्टर-24, नवा रायपुर अटल नगर, छत्तीसगढ़

Website : cgtrti.gov.in
Email: trti.cg@nic.in
Ph: 0771-2960530, Fax 0771-2960531